किलोल
Happy
Teachers' Day
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY
wings2flysociety@gmail.com
मूल्य - 80/-

# अनुक्रमाणिका


पर्व आजा़द भारत का ..... 7

चिट्ठी हुई पुरानी ..... 8

इलायची दाना ..... 9

लप्चु-घप्चु ..... 10

हमारे पौराणिक पात्र- महर्षि सुश्रुत ..... 11

तीन रंगो का प्यारा झंडा ..... 14

आया रक्षाबंधन ..... 16

नैतिक मूल्य ..... 18

आम ..... 19

पहेलियाँ ..... 20

स्वच्छता अभियान ..... 22

बच्चों के साथ गणित पर कैसे काम करें? ..... 24

वो दौर चाहिए ..... 28

आलसी राम ..... 30

मेरी बगिया ..... 31

अभियंता शिरोमणि डॉ मोक्षगुण्डम विश्वेश्वैरैया ..... 32

बादल दादा ..... 36

बेटी उन्मुक गगन की ..... 37

सावन ..... 38

शिक्षा जीवन को संवारती ..... 40

पेड़-पौधे ..... 41

पञ्चतन्त्र की कथा- साँप और कौवा ..... 42

करो भलाई ..... 44

शूल बनेंगे हम ..... 45

बचपन ..... 46

नाम कमाओ.....47
पंतग.....48
शापित सोना.....50
मेरी गुड़िया.....52
चिड़िया.....54
सावन आया.....55
पहेलियाँ.....56
सौर मंडल.....58
चित्र देख कर कहानी लिखो.....61
तुलसी भोई, कक्षा नवमीं, शा. उ. मा. शाला, पंधी, बिलासपुर द्वारा भेजी गई कहानी....62
भालू और रानी मधुमक्खी.....62
डॉ. मंजरी शुक्ला, पानीपत, हरियाणा द्वारा भेजी गई कहानी.....64
गब्बू का शहद.....64
संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी.....67
लालची भालू.....67
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र.....69
मैं महसूस कर रही हूँ.....70
विवेक.....71
सफलता की कहानी.....72
आँसू.....74
शिक्षक दिवस.....75
एहसास.....76
सावन बदरिया.....78
जल प्रकृति की धरोहर है.....80
मैं छोटी सी बच्ची हूँ.....82
मित्र.....83

फ़ौजी या वैज्ञानिक ..... 84
मेरा शहर ..... 86
पिता ..... 87
मैडम भीकाजी कामा: विदेश में तिरंगा फहराने वाली प्रथम भारतीय ..... 89
स्वतंत्रता ..... 92
तिरंगा भारत की शान ..... 94
गलतियाँ ..... 96
नटखट नन्ही ..... 97
हम भारत के सैनिक ..... 98
कोरबा नगरी ..... 99
चर्मकार की चतुराई ..... 101
पिंजरे का जीवन ..... 103
कालू बन्दर ..... 105
योग ..... 106
असली ख़ुशी ..... 108
शेरनी रानी ..... 112
बेटी की चाह ..... 113
शिक्षा जागरुकता ..... 114
मिसाल बनो मजबूरी नही ..... 116
खेत और खलिहानों से ..... 118
आओ कान्हा ..... 120
हमारे प्रेरणास्रोत - सावित्री बाई फुले ..... 122
कोरोना महामारी ..... 124
माँ की याद ..... 126
भालू की बगिया ..... 128
गणेश वंदना ..... 130

कोरोना - सब जगह है रोना ..... 132
वीर सपूत ..... 133
मेरा भारत देश ..... 135
जल संरक्षण ..... 137
चंदा मामा ..... 139
हरेली ..... 141
नादान बच्चा ..... 142
मन की आवाज़ ..... 144
बचपन के दिन ..... 145
मुंशी प्रेमचंद की कथा- साहित्य में सामाजिक चिंतन की झलक विषय पर वर्चुअल साहित्यिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन ..... 147
संयुक्त परिवार ..... 150
कृष्णा ..... 151
गुरू शिष्य संबंध ..... 153
माँ की ममता ..... 155
मेरा फ़र्ज ..... 157
तिरंगा ला फहरावन ..... 159
सकारात्मक सोच,सदा उन्नति का आधार ..... 160
शहर की सैर ..... 162
परीक्षा ..... 164
Rain and Earth ..... 165
राफेल ..... 166
अधूरी कहानी पूरी करो ..... 167
चित्रा का हारमोनियम ..... 167
यशवंत कुमार चौधरी द्वारा पूरी की गयी कहानी ..... 168
कन्हैया साहू 'कान्हा' व्दारा पूरी की गई कहानी ..... 169

संतोष कुमार कौशिक व्दारा पूरी की गई कहानी ..... 170
अगले अंक के लिए अधूरी कहानी ..... 171
मुझे पसंद है ..... 173
बचपन ..... 175
संस्मरण - रामेश्वरम धाम यात्रा ..... 177
मिट्टी ..... 179
रक्षाबंधन ..... 180
समय की मंडी ..... 182
शिक्षा का अलख जगाओ ..... 184
रक्षाबंधन ..... 186
15 अगस्त पर माँ की आस ..... 187
कैसा है ये जीवन ..... 188
भाई-बहिनी के तिहार- राखी ..... 189
बस यही दुआ है ..... 191
भाखा जनऊला ..... 192

## संपादक

डॉ. आलोक शुक्ला

## सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, द्रोण साहू, डॉ. रचना अजमेरा, डॉ. माया नायर, रीता मंडल, कंचन लता यादव, पुर्णेश डडसेना, शिप्रा बेग, कविता आचार्य

## ई-पत्रिका

पुनीत मंगल

## आवरण पृष्ठ

हेमंत कुमार साहू


प्यारे बच्चों,

इस वर्ष स्कूलों में स्वतंत्रता दिवस आपके बिना मनाना पड़ा. इस बात की पीड़ा कई शिक्षकों ने व्यक्त की. आपके शिक्षक आपको स्कूल में न पाकर दुखी हैं. बहुत से शिक्षक आप सभी की पढ़ाई को जारी रखना चाहते हैं ताकि आपका सीखना समाप्त न हो. स्कूलों के न खुलने से वे अलग-अलग तरीकों से आपको सिखाने का काम कर रहे हैं. कोई आपके मोहल्ले में क्लास लगा रहा है तो कोई लाउडस्पीकर से पढ़ाई करवा रहा है. आनलाइन क्लास के बाद अब 'बुल्टू के बोल' शुरू हो गया है.

सभी बच्चों से आग्रह है कि वे इन कक्षाओं का लाभ लें और अपना सीखना जारी रखें. इन कक्षाओं में किलोल का उपयोग करें.

आपका
आलोक शुक्ला

# पर्व आजाद भारत का

रचनाकार- प्रमोद सोनवानी पुष्प

पर्व यह आजाद भारत का.
विश्व में मशहूर है. .

सारे हिंदुस्तानी दिल से,
झंडे को देते सलामी.
प्रण करते हैं मर मिटने का,
याद करके दिन गुलामी. .

इतिहास के पन्नों में यह दिन.
एक गज़ब का नूर है. .

देश सजा है दूल्हे -सा,
बाजे - गाजे बज रहे.
चहुँओर हैं ढेरों खुशियाँ,
बच्चे - बूढ़े नाच रहे. .

नया गीत है - नये रंग हैं
और निराले सुर हैं. .

# चिट्ठी हुई पुरानी

रचनाकार- नरेन्द्र सिंह नीहार, नई दिल्ली

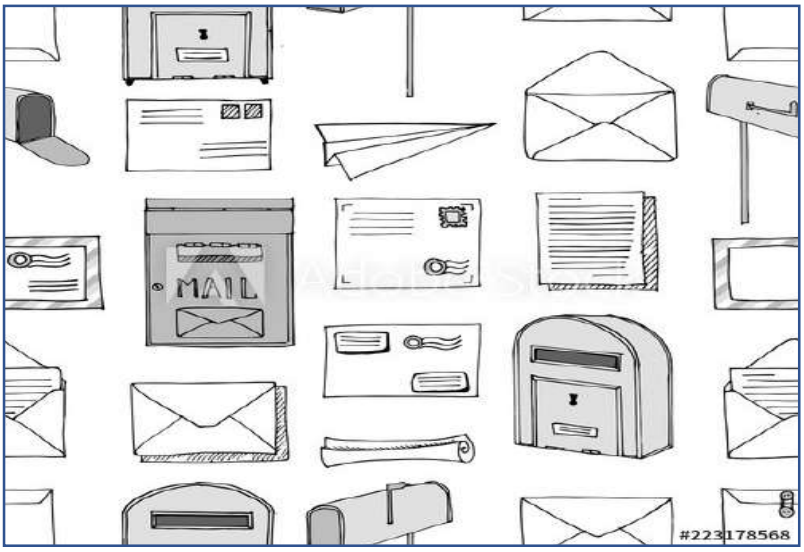


कभी कबूतर ले जाते थे,
उड़-उड़कर संदेश.
कालीदास ने मेघदूत को,
भेजा दूर विदेश.
तोता-मैना और पतंग से,
खूब दिए पैगाम.
चिट्ठी-पत्री पोस्टकार्ड,
आए सबके काम.
नीले-पीले रंग वाले,
पत्रों का आया मौसम.
रजिस्टर्ड पत्र के ऊपर,
टिकिट लगाए हरदम.
इंटरनेट ई मेल की,
दुनिया हुई दीवानी.
मोबाइल के दौर में,
चिट्ठी हुई पुरानी. .

# इलायची दाना

रचनाकार- पुखराज सोलंकी, बीकानेर, राजस्थान

मैं इलायची का एक दाना,
जब चाहो तुम मुझे चबाना.

हरे-हरे खोल के अंदर,
कोने में बैठा मैं काला.
सबके लिए हूँ उपयोगी,
स्वाद अनोखा देने वाला.

कभी न मेरे रंग पे जाना,
मैं इलायची का एक दाना.

हलवे को लजीज बनाऊँ,
चाय का भी स्वाद बढ़ाऊँ.
छोटा हूं पर बड़े काम का,
काढ़े में दवा बन जाऊँ.

रसोई में रख भूल न जाना,
मैं इलायची का एक दाना.

# लप्चु-घप्चु

रचनाकार- पुखराज सोलंकी, बीकानेर, राजस्थान

लप्चु-घप्चु दो थे भाई,
मिल दोनों ने पतंग उड़ाई.
लप्चु ने जब पकड़ी चरखी,
घप्चु ने फिर पतंग बढ़ाई.

हवा का झोंका ऐसा आया,
पतंग उड़ चली फर-फर-फर.
बोला घप्चु ढील दो भइया,
पतंग जा रही सर-सर-सर.

लप्चु बोला पेंच लड़ाओ,
पतंग को आगे और बढ़ाओ.
बात में आकर छोटा भाई,
घप्चु ने भी पेंच लड़ाई.

चार पतंगें जब काटीं,
लप्चु ने बजाई ताली.
पतंग डोर संग छूट गई,
अजी हो गई चरखी खाली.

# हमारे पौराणिक पात्र- महर्षि सुश्रुत

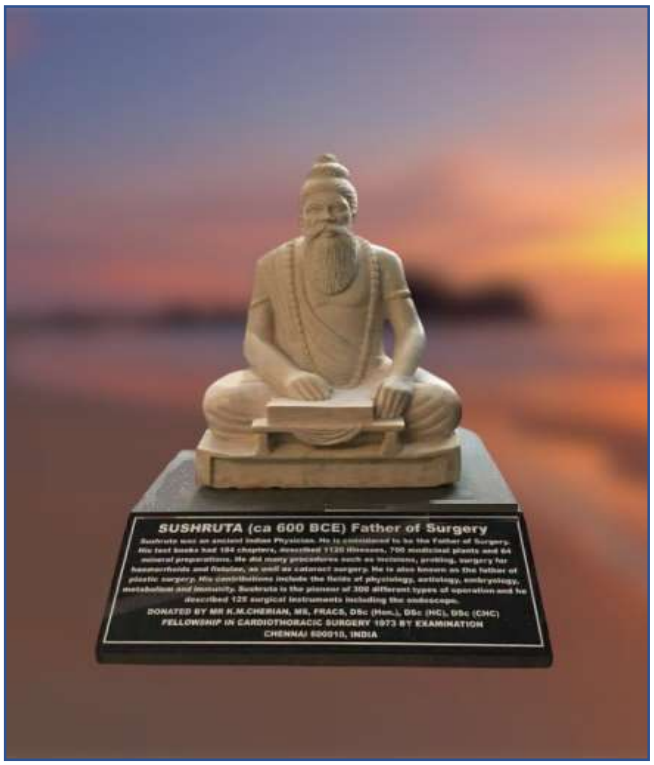


प्लास्टिक सर्जरी का नाम आपने अवश्य सुना होगा. यह चिकित्सा की ऐसी विधि है जिसमें शरीर में होने वाले जन्मजात विकार, दुर्घटना से शरीर के किसी अंग में आई विकृति अथवा जलने से खराब हुई त्वचा को ठीक किया जाता है. कुछ लोग सुंदरता बढ़ाने या बढ़ती उम्र का प्रभाव छिपाने के लिए भी प्लास्टिक सर्जरी का सहारा लेते हैं. वैसे प्लास्टिक सर्जरी को चिकित्सा के क्षेत्र में नया माना जाता है पर यदि हम कहें कि भारत में महर्षि सुश्रुत ने आज से लगभग 2500 साल पहले प्लास्टिक सर्जरी की थी तो शायद आप चौंक जाएँगे. लेकिन यह बात प्रमाणित है. तो आइए इस लेख में हम महर्षि सुश्रुत के विषय में जानकारी प्राप्त करते हैं.

महर्षि सुश्रुत एक महान चिकित्साशास्त्री और शल्य चिकित्सक थे. उन्होंने चिकित्सा के क्षेत्र में अनेक ऐसे उल्लेखनीय कार्य किए जिनकी नींव पर आज का चिकित्सा विज्ञान सुदृढ़ता से खड़ा है.

महर्षि सुश्रुत द्वारा लिखी गई पुस्तक- "सुश्रुत संहिता" का भारतीय चिकित्सा शास्त्र में विशिष्ट स्थान है. सुश्रुत संहिता में प्रमाण मिलता है कि इनका जन्म छठी शताब्दी ईसा पूर्व काशी में विश्वामित्र के कुल में हुआ था. इन्होंने धन्वन्तरि से चिकित्सा शास्त्र की शिक्षा ली.

उस काल में अक्सर युद्ध हुआ करते थे. युद्ध में घायलों को चिकित्सा के समय बहुत पीड़ा सहनी पड़ती थी, बहुत कठिनाई से चुभे हुए तीर आदि को निकाला जाता था. इस प्रकार की चिकित्सा को शल्य चिकित्सा कहा गया. शल्य चिकित्सा में होने वाली असहनीय पीड़ा को कम करने के लिए औषधियों का प्रयोग किया जाता था.

आचार्य सुश्रुत ने अपनी साधना और परिश्रम से शल्य चिकित्सा में निपुणता हासिल की. उन्होंने शल्यचिकित्सा के लिये अनेक यंत्र एवं उपकरण भी विकसित किए. आचार्य सुश्रुत ने शल्यचिकित्सा के परिष्कृत ज्ञान को अपनी एक सौ बीस अध्यायों वाली पुस्तक में कलमबद्ध किया.

सुश्रुत संहिता में शल्य चिकित्सा के विभिन्न पहलुओं को विस्तार से समझाया गया है. शल्य क्रिया के लिए सुश्रुत 125 तरह के उपकरणों का प्रयोग करते थे. इन उपकरणों में विशेष प्रकार के चाकू, सुइयाँ, चिमटियाँ आदि हैं. सुश्रुत ने 300 प्रकार की ऑपरेशन प्रक्रियाओं की खोज की. इन्होंने शल्यचिकित्सा के बाद शरीर को सीने की तकनीक भी विकसित की थी.

कॉस्मेटिक सर्जरी में सुश्रुत ने विशेष निपुणता हासिल की थी. वे नेत्र की शल्य चिकित्सा भी करते थे. सुश्रुत संहिता में मोतियाबिंद के ऑपरेशन करने की विधि का विस्तृत विवरण है. उन्हें शल्य क्रिया द्वारा प्रसव कराने का भी ज्ञान था. सुश्रुत को टूटी हुई हड्डियों का पता लगाने और उनको जोड़ने में विशेषज्ञता प्राप्त थी. शल्य क्रिया के दौरान होने वाले दर्द को कम करने के लिए वे मद्यपान या विशेष औषधियाँ देते थे. मद्य निश्चेतक का कार्य करता था, इसलिए सुश्रुत को निश्चेतना शास्त्र का पितामह भी कहा जाता है.

सुश्रुत को मधुमेह व मोटापे के रोग की भी विशेष जानकारी थी. इन्होंने शल्य चिकित्सा के साथ-साथ आयुर्वेद के अन्य पक्षों जैसे शरीर संरचना, काय चिकित्सा, बाल रोग, स्त्री रोग, मनोरोग आदि की जानकारी भी दी.

'सुश्रुत संहिता में 1100 बीमारियों, सैकड़ों औषधीय पौधों और सर्जरी करने के तरीकों के बारे में लिखा है. इसमें तीन तरह की त्वचा और नाक की सर्जरी के बारे में भी लिखा है. 'त्वचा की सर्जरी का अर्थ शरीर के किसी एक हिस्से की त्वचा को दूसरे हिस्से पर लगाने से है. सुश्रुत के ग्रंथ में माथे की 'फ्लैप राइनोप्लास्टी' का पहला लिखित रेकॉर्ड है. इस प्रक्रिया में माथे की मोटी त्वचा की परत को कम करके उसे नाक पर इस्तेमाल किया जाता है. यह प्रक्रिया प्लास्टिक सर्जरी के लिए आज भी इस्तेमाल की जाती है.

सुश्रुत संहिता में उल्लिखित एक घटना है कि एक रात महर्षि सुश्रुत के आश्रम में एक व्यक्ति आया. उसकी नाक कट गई थी और रक्त बह रहा था. महर्षि सुश्रुत ने उसे अंदर बुलाया. उन्होंने उस व्यक्ति के गाल से माँस की एक परत ली और उससे कटी नाक को ठीक कर

दिया. आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि लगभग यही प्रक्रिया (फ्लैप राइनोप्लास्टी) आज भी अपनाई जा रही है. सुश्रुत श्रेष्ठ शल्य चिकित्सक होने के साथ-साथ श्रेष्ठ शिक्षक भी थे. उन्होंने अपने शिष्यों को शल्य चिकित्सा के सिद्धांत बताए और शल्य क्रिया का अभ्यास कराया. शल्य क्रिया के अभ्यास के लिए वे फलों, सब्जियों और मोम के पुतलों का उपयोग करते थे. मानव शरीर की अंदरूनी रचना को समझाने के लिए सुश्रुत शव पर शल्य क्रिया करके अपने शिष्यों को समझाते थे.

आचार्य सुश्रुत के द्वारा लिखी गई सुश्रुत संहिता को आयुर्वेद की नींव भी कहा जाता है. उन्होंने इस पुस्तक में आठ प्रकार की शल्य क्रिया के बारे में वर्णन किया है -

छेद्य
भेद्य
लेख्य
वेध्य
ऐष्य
अहार्य
विश्रव्य
सीव्य
इस ग्रन्थ में उन्होंने चौबीस प्रकार के स्वस्तिकों, दो प्रकार के संदसों, अट्ठाइस प्रकार की शलाकाओं तथा बीस प्रकार की नाड़ियों का विस्तृत वर्णन किया है.

सुश्रुत संहिता का कई विदेशी भाषाओं में अनुवाद भी किया गया है. विश्वविख्यात कोलंबिया विश्वविद्यालय ने सुश्रुत को प्लास्टिक सर्जरी का प्रणेता माना है. मेलबोर्न के रॉयल ऑस्ट्रेलिया कॉलेज ऑफ सर्जरी में सुश्रुत की एक प्रतिमा स्थापित की गई है.

वे अपने शिष्यों से कहा करते थे- "अच्छा वैद्य वही है जो सिद्धांत और अभ्यास दोनों में पारंगत हो."

चिकित्सा के क्षेत्र में पथप्रदर्शक महान चिकित्सक व गुरु महर्षि सुश्रुत पर हमें गर्व है.

# तीन रंगो का प्यारा झंडा

रचनाकार- स्व. महेन्द्र देवांगन "माटी"

आजादी का पर्व मनाने, गाँव गली तक जायेंगे.
तीन रंगों का प्यारा झंडा, शान से हम लहरायेंगे. .

नहीं भूलेंगे उन वीरों को, देश को जो आजाद किये.
भारत माँ की रक्षा के खातिर, जान अपनी कुर्बान किये. .

आज उसी की याद में हम सब, नये तराने गायेंगे.
तीन रंगों का प्यारा झंडा, शान से हम लहरायेंगे. .

चन्द्रशेखर आजाद भगतसिंह, भारत के ये शेर हुए.
इनकी ताकत के आगे, अंग्रेजी सत्ता ढेर हुए. .

बिगुल बज गया आजादी का, वंदे मातरम गायेंगे.
तीन रंगों का प्यारा झंडा, शान से हम लहरायेंगे. .

मिली आजादी कुर्बानी से, अब तो नहीं जाने देंगे.
चाहे कुछ हो जाये फिर भी, आँच नहीं आने देंगे. .

संभल जाओ ओ चाटुकार तुम, अब तो शोर मचाएँगे.
तीन रंगों का प्यारा झंडा, शान से हम लहरायेंगे. .

हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई, सबको आगे आना होगा.
स्कूल हो या मदरसा सब पर, तिरंगा फहराना होगा. .

देशभक्ति का जज्बा है ये, मिलकर साथ मनायेंगे.
तीन रंगों का प्यारा झंडा, शान से हम लहरायेंगे. .

ब्रम्हलीन महेन्द्र देवाँगन "माटी" जी के आकस्मिक देहावसान साहित्य जगतके लिए अपूर्णीय क्षति है. किलोल पत्रिका के लिए वे सतत् लिखते थे. किलोल पत्रिका समूह की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि.

# आया रक्षाबंधन

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

सावन मास का आखिरी त्यौहार.
देखो जी आया राखी का त्यौहार. .

भाई-बहन के पवित्र प्यार का त्यौहार.
देखो जी आया श्रावणी त्यौहार. .

बहना भाई का जीवन भर साथ निभाती.
बहना भाई की रक्षा खातिर दुआ माँगती. .

रक्षा सूत्र बाँध भाई से शपथ कराती.
जीवन भर रक्षा करने का वादा लेती. .

संसार के सभी दुखों से बचाने की बलायें लेती.
जन्म से मृत्यु पर्यंत जीवन रक्षा है करती. .

संकट पड़े जो भाई का हौसला बढ़ाती.
प्यारे भाई पर दुलार व स्नेह लुटाती. .

भाई की लंबी उम्र की दुआ माँगती.
भाई के सुखी जीवन की कामना है करती. .

भाई के सुखी जीवन की खातिर.
उसके दुखों को आगे बढ़ लेती हर. .

बहना भाई की होती है शान.
एक पल ना देखे तो होती परेशान. .
होता परेशान. . .

# नैतिक मूल्य

रचनाकार- वीरेन्द्र कुमार साहू

हो रहा ह्रास आज नैतिकता का,
पश्चिमी सभ्यता पहचान आधुनिकता की.
न बेटा देता मान माँ-बाप को,
न बेटी करती सम्मान है.
हर तरफ छाई चकाचौंध,
खुद को सब समझें सबल सुजन हैं.
हमारी सभ्यता संस्कृति,
कीचड़ से लथपथ पड़ी हुई.
न कोई गंगाजल मिलता,
न दिखती अब ये धुली हुई.
अपना हित साधे सब चले हुए,
अपने स्वार्थ की परिभाषा से बँधे हुए,
पर असली थाती पहचानो तुम.
पारस से भी ये हैं कीमती, इसका मोल जानो तुम.
सब खोकर जब तुम जागोगे,
उस दिन खूब पछताओगे.
नैतिक मूल्यों और संस्कृति को अपना लो,
खुद का जीवन और देश दोनों बचा लो.

# आम

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

गरमी में जब आता आम,
हमें बहुत ललचाता आम.

तोतापरी और दशहरी,
तरह-तरह के इसके नाम.

कुछ होते हैं बहुत महँगे,
कुछ के होते सस्ते दाम.

सोनू, मोनू, आओ भैया,
मीठे-मीठे खाओ आम.

फलों का राजा कहलाता,
दुनिया में है इसका नाम.

# <u>पहेलियाँ</u>

रचनाकार - टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

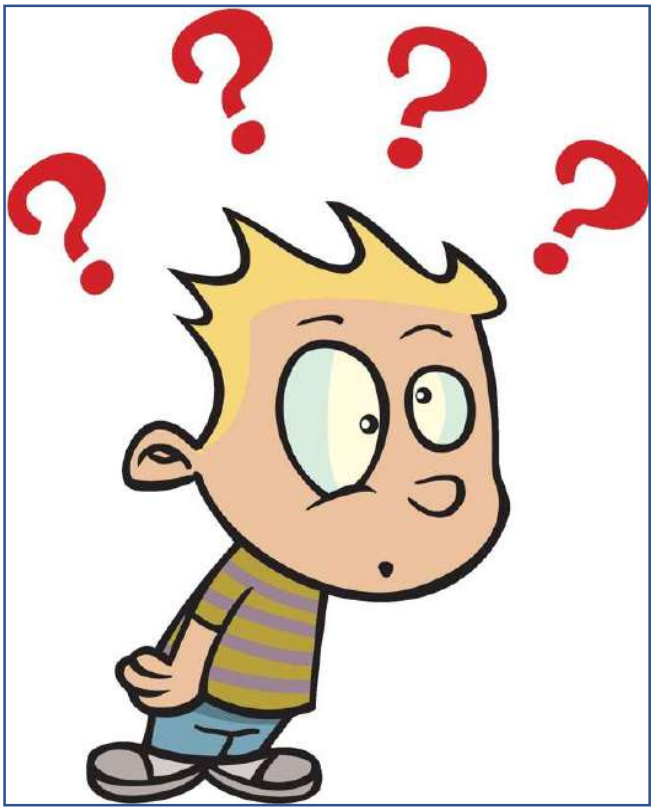

1.

दो अक्षरों का मेरा नाम,
हिन्दी मास का छठवाँ महीना.
लाता मैं अति वर्षा का पैगाम,
मुझे बूझो बच्चो. . . . सही-सही मेरा नाम?

2.

एक कटोरी चूने के पानी को,
अगर मुँह से फूँका जाय.
मुँह से निकली कौन -सी गैस,
जिससे पानी दुधिया हो जाय?

3.
एक ऐसा जीव धरती पर,
होता रस्सीनुमा बदन.
कान जिसके होते ही नहीं,
सर पर बनता फन.

4.
सीरियल 'पवित्र रिश्ता' में,
'मानव' का किरदार निभाया.
कौन है वह अभिनेता हाल में ही,
जिसने सुसाइड कर प्राण गँवाया?

5.
एक महान आदर्श शिक्षक रहे,
कुलीन व्यक्तित्व असीम-अशेष!
हर वर्ष पाँच सितंबर को,
जिनकी जयंती मनाता देश.

उत्तर :- 1. भादो माह 2. कार्बन डाइ ऑक्साइड 3. साँप 4. सुशांत सिंह राजपूत

5. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

# स्वच्छता अभियान

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

चल पड़ी है टोली आज,
नया कर दिखाने की.
छोटे बच्चों की कोशिश है,
बड़ों को समझाने की. .
चिंटू-मिंटू झाड़ू लाए,
रिंकू लाए कूड़ा दान.
साफ- सफाई करें सभी,
जैसे आने वाले हैं भगवान.
बच्चे देखकर बड़े भी आए,
अपने हाथ बँटाने को. .
सभी लोगो ने की कोशिश,
भारत को स्वच्छ बनाने को. .
हाथों में झाड़ू लेकर,
मीर काका भी आया.
कचरे को इकट्टा करके,
गड्ढे में उसने दफनाया.
पूरे मोहल्ले हो गए साफ,

शहर में खबर यह छाई.
सभी बच्चों को बधाई देने,
राधा दीदी भी आई. .
साथ में सन्देश लिए,
खड़े हैं बच्चे आज.
स्वच्छता को अपनाओ सब,
पूरे कर लो काज. .

# बच्चों के साथ गणित पर कैसे काम करें?

लेखक- डॉ. सुधीर श्रीवास्तव

इस सवाल का ठीक-ठीक जवाब देना तो मेरे लिए मुश्किल है पर एक शिक्षक के रूप में मैंने यह पाया है कि कुछ बातें बच्चों के गणित सीखने को निश्चित रूप से प्रभावित करती हैं.

मुझे ऐसा लगता है कि जब हम एक शिक्षक, माता- पिता या किसी और रूप में बच्चों के साथ गणित पर काम कर रहे हों तो हमें इन बातों को आजमा कर देखना चाहिए -

**धीरज रखना:-**

जी हां, पहली और जरूरी शर्त है कि हम धीरज रखें. जो कुछ भी बच्चा आज सीख रहा है उसे हम पहले से जानते हैं. इसलिए उसके सोचने तथा काम करने की गति और तरीका निश्चित रूप से हमसे अलग ही होगा. उसे इस नए काम को करने में कुछ ज़्यादा वक्त लगेगा. यह बहुत स्वाभाविक है. यह बात याद रखें और उसे अपना समय लेने दें.

जब आप बचपन में साइकिल चलाना सीख रहे थे तो आपने भी पहले दिन ही सफलता हासिल नहीं की थी. कुछ भी नया सीखना समय लेता है. बच्चे को भी समय चाहिए.

**यह विश्वास रखना कि हर बच्चा गणित सीख सकता है:-**

एक काम कीजिए. किसी खुली जगह पर एक चम्मच शक्कर रख दीजिए. पांच - सात मिनट बाद जाकर देखिए. आप पाएंगे चींटियों ने अपना काम करना शुरू कर दिया है. (मैं जब यह पंक्तियां लिख रहा था तब मैंने भी यह किया. )
सोचिए, कितनी छोटी चींटी! कितना छोटा उसका सिर! और उस छोटे से सिर में छोटा सा दिमाग. . . . लेकिन उसने भी अपनी जरूरत के काम सीख लिए हैं.

इसी प्रकार इंसान के बच्चे का दिमाग भी पूरी तरह समर्थ होता है कुछ भी नया सीखने के लिए. इस बात पर भरोसा करने की जरूरत है. दुनिया में अभी तक जितने भी आविष्कार हुए हैं, किसी इंसान के बच्चे ने ही किए हैं. गणित के सिद्धांत और उनकी संक्रियाएं तो बहुत छोटी चीजें हैं किसी इंसानी दिमाग के लिए. आपके सामने बैठी हुई बच्ची भी सीखेगी ही यह विश्वास कीजिए.

**गणित सीखना यानी बांस की सीढ़ी पर चढ़ना :-**

आपने ऐसी सीढ़ी सचमुच में या चित्रों में जरूर देखी होगी जो बांस या बल्लियों से बनी होती है. हो सकता है आपको इससे ऊपर चढ़ने का अनुभव भी हो.

कैसे चढ़ते हैं इस पर?. . . आजू-बाजू की दोनों बल्लियों पर ऊपर की ओर हाथ जमाते हैं ताकि संतुलन बना रहे. एक पैर पहले पायदान पर रखते हैं फिर दूसरा पैर भी. और इसी तरह धीरे-धीरे एक - एक पायदान ऊपर चढ़ते जाते हैं. अब कल्पना कीजिए इस सीढ़ी के कुछ पायदान हटा दिए जाएं तो क्या आप ऊपर चढ़ पाएंगे? शायद नहीं.

गणित सीखना भी ऐसा ही है. गणित की प्रत्येक अवधारणा उसके पहले की कुछ अवधारणाओं पर टिकी होती है. यदि बच्चे को किसी एक अवधारणा की स्पष्ट समझ नहीं बन पाई है तो वह इसके आगे की चीजें ठीक से नहीं सीख पाएगा. यदि कोई बच्चा उधार लेकर घटाने का काम ठीक तरह से नहीं कर पा रहा है तो यह हो सकता है कि उसने संख्याओं का बनना या घटाने का अर्थ भी अभी ठीक से नहीं समझा है. हमें अभी उसके साथ इन अवधारणाओं पर काम करने की जरूरत है. यहां पहले की ये दोनों अवधारणाएं दो ऐसे पायदान हैं जो उसकी सीखने की सीढ़ी में नहीं हैं. वह हमें पहले लगाने पड़ेंगे.

**वहां से सफर शुरू करना जहां पर अभी हैं :-**

कोई अभी जहां खड़ा है उसका सफर वहीं से तो शुरू होगा ना, कितनी सहज बात है. पर गणित की कक्षा में ऐसा नहीं होता. हम मान लेते हैं कि सभी बच्चे समान रूप से समान चीजें सीख चुके हैं और समझ के एक ही धरातल पर खड़े हुए हैं.

वास्तव में ऐसा नहीं होता. कक्षा का प्रत्येक बच्चा अलग-अलग समझ के साथ अलग-अलग जगह पर हो सकता है.

हम समूह के साथ काम कर रहे हों या किसी अकेले बच्चे के साथ, हमें पहले यह पता करना होगा कि बच्चा क्या-क्या जानता है. वह जो - जो और जितना जानता है उसकी पक्की समझ बनाने के बाद ही हम उसे आगे बढ़ने में मदद कर सकेंगे. ऐसी परिस्थितियों में धीरे-धीरे यह भी संभव हो सकेगा कि बिना किसी बाहरी सहायता के भी बच्चा खुद-ब-खुद सीखने लगे.

तो गणित पर काम की शुरुआत हमारे यह जानने से होगी कि बच्चा क्या-क्या जानता है.

**गलतियां स्वाभाविक हैं और सीखने में मददगार भी:-**

-क्या आपकी निगाह में कोई ऐसा व्यक्ति है जिसने गलतियां ना की हों?
-क्या आपको कोई ऐसा काम याद है जिसे आपने बिना गलती किए सीख लिया हो? नहीं न? गलतियां, सीखने की प्रक्रिया का एक स्वाभाविक हिस्सा हैं. सीखने वाला अपनी गलतियों से यह समझता है कि मुझे कोई दूसरा रास्ता चुनना चाहिए. काम में होने वाली ये गलतियां न केवल बच्चे को रास्ता दिखाती हैं बल्कि शिक्षक को भी महत्वपूर्ण संकेत देती हैं. गणित सीखने के दौरान होने वाली गलतियां इस बात की ओर भी इशारा करती हैं कि बच्चे के दिमाग में क्या चल रहा है, उसकी सोच किस दिशा में जा रही है. ऐसी गलतियों का विश्लेषण कर सीखने की प्रक्रिया में जरूरी बदलाव किए जा सकते हैं.

एक उदाहरण पर गौर करें. एक बच्ची ने जोड़ का एक सवाल इस प्रकार हल किया -

| दहाई | इकाई |
|---|---|
| 1 | 3 |
| + | 9 |
| 1 | 12 |

हो सकता है कुछ अध्यापक जांचते समय इसे गलत कहें. उनका तर्क होगा -

"12 की एक दहाई को हासिल लेकर दहाई के योगफल को 2 करना चाहिए था. इस प्रकार उत्तर 22 आना चाहिए था, ना कि 112."

**इस पर आप क्या टिप्पणी देंगे?**

अब इसे बच्चे के दृष्टिकोण से समझें. बच्चे ने 3 और 9 इकाइयों को जोड़कर 12 इकाइयां प्राप्त की और एक दहाई को अलग से लिखा. उसका उत्तर हुआ, एक दहाई और बारह इकाइयां.

**सोचिए इसमें गलत क्या है?**

अब आइए इस उदाहरण के दूसरे पहलू पर विचार करें. यह हमें इस बात को समझने में मदद करता है कि बच्चे को क्या-क्या आता है? बच्चे ने जिस तरह इसे हल किया उससे पता चलता है कि

- बच्चा संख्यांकों को उनके सही अर्थों के साथ पहचानता है.

- उसे एक अंक की संख्याओं को जोड़ना आता है.

- उसे यह भी समझ है कि इकाई को इकाई और दहाई को दहाई से जोड़ा जाता है.

तीसरी महत्वपूर्ण बात जो इस उदाहरण से निकल कर आती है वह यह है कि एक जिम्मेदार शिक्षक के मन में यह विचार जन्म ले सकता है -

"अभी बच्चे को क्या सीखना है?"

(यदि इकाइयां 9 से अधिक हो जाएं तो उसे दहाई और इकाई के नए समूहों में लिखा जा सकता है. )

यदि कोई शिक्षक यहां तक सोच ले तो वह आगे इस बात पर भी ज़रूर विचार कर सकता है कि अब क्या गतिविधि की जा सकती है?

साथियो, और भी कई बातें हैं जो गणित पर बच्चे के साथ काम करते हुए हमें ध्यान में रखनी चाहिए. किंतु मुझे लगता है कि जितनी बातें ऊपर की गईं हैं उन्हें अपनी कक्षा में या किसी बच्चे के साथ काम करते हुए आजमा कर जरूर देखना चाहिए.

# वो दौर चाहिए

रचनाकार- आयुष सोनी, उमरिया, म. प्र

वो बचपन-लड़कपन, वो लड़ना-झगड़ना.
खड़ी दोपहरी बेफिक्र सा फिरना.
वो आपस में लड़कर रोना मचलना.
वो पापा के कंधों पर मस्ती से चढ़ना.

फिर वैसा ही कंधों पर जोर चाहिए.
मुझे चिट्ठियों वाला दौर चाहिए.

वो साइकल से चलना, छिप-छिप कर मिलना.
वो कुर्ते की जेबों को कई बार सिलना.
वो यारों की टोली, वो फिल्में पुरानी.
वो खुशबू हवा की, कलियों का खिलना.

वो महकती कलियाँ हर ओर चाहिए.
मुझे चिट्ठियों वाला दौर चाहिये.

ना फ़ोन था कोई, न कोई पिटारा.
बस रातों को दिखता चमकता सितारा.
वो खेल पुराने, हमारे जमाने.
फिर से मिलेंगे क्या हमको दोबारा.

मुझे फिर से सुनहरी सी भोर चाहिए.
मुझे चिट्ठियों वाला दौर चाहिए.

वो बागों के पेड़ों से जामुन चुराना.
वो खेलों में नदियों के उस पार जाना.
शाम के अंधेरों में सबको डराना.
जो गुल होती बिजली तो शोर मचाना.

फिर से उन बच्चों का शोर चाहिए.
मुझे चिट्ठियों वाला दौर चाहिए.

वो अपना जमाना हम मस्त सही थे.
काम थे सभी को पर व्यस्त नहीं थे.
वो खाना, खिलाना, अल्हड़ सा जीना.
वो बारिश की बूंदें, भीगा सा बचपन.

मुझे फिर से बादल घनघोर चाहिए.
मुझे चिट्ठियों वाला दौर चाहिए.

# आलसी राम

रचनाकार- सुशीला साहू "विद्या"

मुझे आलस अब खूब सताता,
आदत में जब ये पड़ जाता.

पिज्जा बर्गर रोज -रोज खाता,
बैठे- बैठे सबकी हँसी उड़ाता.

पढ़ाई से मेरा मन उब जाता,
आलस पढ़ाई से दूर भगाता.

कोई न बनो आलसी राम,
सुबह-शाम करो अपना काम.

खूब पढ़ेंगे और मेहनत करेंगे,
आलस को हम दूर भगाएँगे.

# मेरी बगिया

रचनाकार- सुशीला साहू "शीला"

मेरी बगिया है बहुत सुंदर,
फूल खिले हैं इसके अंदर.
लाल, पीले, हरे, गुलाबी,
गोल-गोल गुच्छों वाली.
सेवती, गेंदा, चंपा, चमेली,
ये सब मेरी सखी-सहेली.
पक्षी गाते हैं नवरागों में,
झूमते भौंरे हैं इन बागों में.
कोयल की तान सुरीली है,
उड़ रही मतवाली तितली है.
फैल रहा फूलों का उजास,
मुकुलों के उर मंदिर वास.
सुषमा का साकार सुमन,
नष्ट न करना यह जीवन.

# अभियंता शिरोमणि डॉ मोक्षगुण्डम विश्वेश्वैरैया

लेखक- नीलेश वर्मा

भारत-रत्न डॉ मोक्षगुण्डम विश्वेश्वरैया आधुनिक भारत के विश्वकर्मा के नाम से विख्यात हैं. डॉ. एम. विश्वेश्वरैया का जन्म 15 सितम्बर 1861 को, कर्नाटक के कोलार जिले के मुदेनाहल्ली गाँव में हुआ था. उनके पिता पं. श्रीनिवास शास्त्री संस्कृत के विद्वान थे तथा माँ का नाम वेंकचम्मा था. कुशाग्र बुद्धि के विश्वेश्वरैया प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करते समय अपने अध्यापकों के प्रिय छात्र रहे. विश्वेश्वरैया जब 14 वर्ष के थे तभी उनके पिता की मृत्यु हो गयी. आगे की शिक्षा प्राप्त करने के लिए वे अपने मामा रमैया के पास बँगलौर चले गए. मामा की आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं थी. विश्वेश्वरैया ने कुछ बच्चों को पढ़ाने का कार्य करते हुए अपनी पढ़ाई जारी रखी.

सन 1875 में उन्होंने बँगलौर के सेन्ट्रल कॉलेज में प्रवेश लिया. सन 1880 में बी. ए. की परीक्षा विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण की. आगे इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने की इच्छा थी, पर आर्थिक स्थिति एक बड़ी समस्या थी. मैसूर के तत्कालीन दीवान रंगाचारलू ने विश्वेश्वरैया की लगन को देखकर उनके लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था कर दी. इसके बाद विश्वेश्वरैया ने पूना

के 'साइंस कॉलेज' में प्रवेश लिया. 'सिविल इंजीनियरिंग' श्रेणी में बम्बई विश्वविद्यालय से सर्वोच्च अंक प्राप्त करते हुए 1883 में डिग्री प्राप्त की.

इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त करते ही विश्वेश्वरैया को बम्बई के लोक निर्माण विभाग में सहायक अभियन्ता के रूप में नौकरी मिल गई. इस पद पर काम करते हुए विश्वेश्वरैया ने प्राकृतिक जल स्रोतों से एकत्र होने वाले पानी को घरों तक पहुँचाने और घरों के गंदे पानी को निकालने के लिए समुचित व्यवस्था की. उन्होंने खानदेश जिले की एक नहर में पाइप-साइफन के कार्य को भलीभाँति सम्पन्न करके अपनी योग्यता से सभी को प्रभावित किया.

विश्वेश्वरैया को सन 1894-95 में सिन्ध के सक्खर क्षेत्र में पीने के पानी की परियोजना सौंपी गई. वहाँ का पानी पीने लायक ही नहीं था. अनेक तकनीकों का अध्ययन करने के बाद नदी के पानी को साफ करने के लिए उन्होंने नदी के तल में एक गहरा कुआँ बनाया. उस कुएँ में रेत की कई परतें बिछाई गईं. रेत की उन परतों से गुजरकर नदी का पानी पीने योग्य हो जाता थ. इस परियोजना के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने से विश्वेश्वरैया की प्रतिभा और योग्यता की ख्याति फैल गई.

विश्वेश्वरैया ने अपनी मौलिक सोच से बाढ़ के पानी को नियंत्रित करने के लिए खड़गवासला बाँध पर स्वचालित जलद्वारों का प्रयोग किया. इन जलद्वारों की विशेषता यह थी कि बाँध में पानी को तब तक रोक कर रखते थे, जब तक वह पिछली बाढ़ के स्तर तक नहीं पहुँच जाता. जैसे ही बाँध का पानी उस स्तर से ऊपर बढ़ता जलद्वार अपने आप ही खुल जाते और निर्धारित स्तर तक पानी पहुँचने पर स्वत: ही बंद हो जाते थे.

विश्वेश्वरैया ने सिंचाई के लिए बाँध का पानी नहरों के माध्यम से खेतों तक पहुँचाने की व्यवस्था की. विश्वेश्वरैया ने अपने कार्यों के द्वारा पूना, बँगलोर, मैसूर, बड़ौदा, कराची, हैदराबाद, कोल्हापुर, सूरत, नासिक, नागपुर, बीजापुर, धारवाड़, ग्वालियर, इंदौर सहित अनेक नगरों को जल संकट से मुक्ति दिला दी.

अपनी प्रतिभा, परिश्रम और लगन से विश्वेश्वरैया लोक निर्माण विभाग में तरक्की की सीढियाँ चढ़ते गए. 1904 में विभाग के सुपरिंटेंडिंग इंजीनियर के पद पर नियुक्त हुए. 1908 में उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया.

त्यागपत्र देने के बाद विश्वेश्वरैया ने कई विदेश यात्राएँ कीं और अनेक इंजीनियरिंग संस्थानों में जाकर अनुभव अर्जित किया. विदेश यात्रा से लौटने पर हैदराबाद के निजाम ने उन्हें बाढ़ की समस्या का समाधान करने की जिम्मेदारी सौंप दी. विश्वेश्वरैया लगभग एक वर्ष तक हैदराबाद में रहे. वहाँ उन्होंने अनेक बाँधों और नहरों का निर्माण कराया, जिससे बाढ़ की समस्या नियंत्रित हो गई. मैसूर राज्य के तत्कालीन दीवान ने विश्वेश्वरैया से मैसूर राज्य के

प्रमुख इंजीनियर की जिम्मेदारी संभालने का आग्रह किया. चूँकि विश्वेश्वरैया की शिक्षा में मैसूर राज्य की छात्रवृत्ति का बड़ा योगदान था, इसलिए वे यह आग्रह टाल न सके और 1909 में मैसूर आ गए.

कावेरी नदी की बाढ़ के कारण प्रतिवर्ष सैकड़ों गाँव तबाह हो जाते थे. विश्वेश्वरैया ने मैसूर को बाढ़ से मुक्ति दिलाने के लिए विस्तृत योजना तैयार की. अपनी सूझबूझ और अभियांत्रिकी कौशल का परिचय देते हुए कावेरी नदी पर कृष्णराज सागर बाँध का निर्माण कराया. लगभग 20 वर्ग मील में फैला 130 फिट ऊँचा और 8600 फिट लम्बा यह विशाल बाँध उस समय भारत का सबसे बड़ा बाँध था. बाँध से अनेक नहरें एवं उपनहरें भी निकाली गईं, जिन्हें 'विश्वेश्वरैया चैनल' नाम दिया गया. इस बाँध में 48, 000 मिलियन घन फिट पानी एकत्रित किया जा सकता था, जिससे 1, 50, 000 एकड़ कृषि भूमि की सिंचाई की जा सकती थी और 6000 किलोवाट बिजली बनाई जा सकती थी. इस बहुउद्देशीय परियोजना के कारण मैसूर राज्य की कायापलट हो गई. वहाँ अनेक उद्योग-धंधे विकसित हुए, जिसमें भारत की विशालतम मैसूर शुगर मिल भी शामिल है.

सन 1909 में मैसूर राज्य के तत्कालीन दीवान (प्रधानमंत्री) की मृत्यु के बाद मैसूर के महाराजा ने डॉ. विश्वेश्वरैया को मैसूर का नया दीवान नियुक्त कर दिया. दीवान के रूप में अपने कार्यकाल में विश्वेश्वरैया ने शिक्षा के प्रचार-प्रसार पर बल दिया और अनेक तकनीकी संस्थानों की नींव रखी. उन्होंने 1913 में स्टेट बैंक ऑफ मैसूर की स्थापना की. व्यापार तथा जनपरिवहन को सुचारू बनाने के लिए उन्होंने राज्य में अनेक महत्वपूर्ण स्थानों पर रेलवे लाइन बनवाईं. उन्होंने इंजीनियरिंग कॉलेज, बंगलौर (1916) एवं मैसूर विश्वविद्यालय की स्थापना की. सन 1918 में ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए उन्होंने पॉवर स्टेशन की भी स्थापना की. सामाजिक विकास के लिए अनेक योजनाओं को संचालित किया, और औद्योगीकरण पर बल दिया.

सन 1919 में विश्वेश्वरैया ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया. उसके बाद वे कई महत्वपूर्ण समितियों के अध्यक्ष एवं सदस्य रहे. सिंचाई आयोग के सदस्य के रूप में अनेक योजनाओं को कार्यरूप में परिणत किया. बम्बई सरकार की औद्योगिक शिक्षा समिति के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया. वे भारत सरकार द्वारा नियुक्त अर्थ जाँच समिति के भी अध्यक्ष रहे. उन्होंने बम्बई कार्पोरेशन में एक वर्ष परामर्शदाता के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कीं.

विश्वेश्वरैया ने देश की अनेक विकास योजनाओं में महत्वपूर्ण योगदान किया. उन्होंने बंगलौर में 'हिन्दुस्तान हवाई जहाज संयंत्र ' एवं 'विजाग पोत-कारखाना' प्रारंभ करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. भद्रावती इस्पात योजना को साकार करने के लिए भी उन्होंने काफी श्रम किया.

विश्वेश्वरैया ने सतत् कार्य करते हुए 100 वर्ष से अधिक का जीवन पाया और जीवन में वे कभी खाली नहीं बैठे. 14 अप्रैल सन 1962 को उनका देहान्त हुआ. विश्वेश्वरैया धुन के पक्के, लगनशील और विचारवान इंजीनियर थे. वे कठिन परिश्रम और ज्ञान के प्रति समर्पित थे. उन्होंने समाज में जो प्रतिष्ठा प्राप्त की, वह विरले लोगों को प्राप्त होती है. ब्रिटिश सरकार ने उन्हें 'सर' की उपाधि से सम्मानित किया. डॉ. विश्वेश्वरैया के योगदान के लिए जादवपुर विश्वविद्यालय, पटना विश्वविद्यालय एवं प्रयाग विश्वविद्यालय ने उन्हें डी. एस-सी. की मानद उपाधि प्रदान की. काशी विश्वविद्यालय ने डी. लिट तथा मैसूर विश्वविद्यालय एवं बम्बई विश्वविद्यालय ने एल. एल. डी की उपाधियों से सम्मानित किया. भारत सरकार ने उन्हें सन 1955 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से विभूषित किया. 1961 में देशभर में उनका जन्मशताब्दी समारोह मनाया गया. इस अवसर पर भारत सरकार ने उनके सम्मान में एक डाक टिकट जारी किया.

डॉ. मोक्षगुण्डम् विश्वेश्वरैया ने भारत निर्माण के लिए इतने कार्य किए कि वे 'आधुनिक भारत के विश्वकर्मा' के रूप में हमेशा याद किए जाते रहेंगे.

# बादल दादा

रचनाकार- प्रतिभा सिंह, सॉल्टलेक, कोलकाता

मम्मी देखो, बादल दादा, कितने रूप बनाते.
कभी सिपाही जैसे लगते,
कभी दिखें ये जोकर.
कभी रूप लगता है ऐसा,
मानो हों ये बंदर.
रूप बदलकर भाँति-भाँति के, मुझको खूब हँसाते.
मम्मी देखो, बादल दादा, कितने रूप बनाते.
कभी भूत जैसे दिखते हैं,
कभी शेर बन जाते.
लगता कभी पकड़ने मुझको,
साधु वेश में आते.
लंबी -दाढ़ी वाले योगी, बनकर मुझे डराते.
मम्मी देखो, बादल दादा, कितने रूप बनाते.
लगता है, ये जादूगर हैं,
हर पल रूप बदलते.
जादू के सब राज़ पूछता,
अगर कभी ये मिलते.
मम्मी उन्हें बुला लेती तो, जादू मुझे सिखाते.
मम्मी देखो, बादल दादा, कितने रूप बनाते.

# बेटी उन्मुक गगन की

रचनाकार- उषा साहू

मैं बेटी उन्मुक्त गगन की,
आसमान तक जाऊँगी.
अभी तो उड़ना सीखा है,
आसमान को छूकर दिखलाऊँगी.

मैं पढ़ूँगी-लिखूँगी,
सबका नाम रोशन कर जाऊँगी.
घर -आँगन में पेड़ लगाकर,
फुलवारी -सा सजाऊँगी.

सावन की फुहारों में,
अपनी नाव चलाऊँगी.
पतंग आसमान में उड़ती है,
मैं अपने सपनों की उड़ान भरकर दिखलाऊँगी.

बड़ों का सदा सम्मान करूँगी,
कभी किसी का दिल नहीं दुखाऊँगी.
माँ- पापा के संस्कारों को अपनाकर,
आगे ही बढ़ती जाऊँगी. .

# सावन

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

सावन के महीना म संगी,
रिमझिम पानी बरसे जी.
रंग बिरंगी फूलवारी म,
भौंरा गुन-गुन करथे जी.

गड़- गड़, गड़-गड़ बादल गरजे,
घटा घलो अंधियारे हे,
चम-चम, चम बिजली चमके,
अगास मा दीया बारे हे.
तरिया, नरवा जम्मो भरगे,
झरना झर-झर झरथे जी.

सिहावा के पर्वत ले संगी
महानदी हर निकलथे
अपावन मन ला ओहर
गंगा कस पावन करथे जी.

सबके मन हर हरिया जाथे
जब सावन हर आथे जी
टेटक मेंचका जम्मो मिलके
राग मल्हारी गाथे जी.

झींगुर मन हर राग सुनाही
मंजूर नाच देखाही जी.
संगी-संगवारी मन भैया
बादर हर ग़जब मुसकही जी.

# शिक्षा जीवन को संवारती

रचनाकार- डॉ. त्रिलोकी सिंह प्रयागराज

शिक्षा जीवन को सँवारती,
शिक्षा से मिलता सम्मान.
जिसने अच्छी शिक्षा पाई,
आदर पाता वह विद्वान. .

शिक्षा से ही उन्नति होती,
शिक्षा से मिलती सद्बुद्धि.
शिक्षा सबको सभ्य बनाती,
शिक्षा करती मन की शुद्धि. .

जिसे प्राप्त है शिक्षा का धन,
उसका हुआ जीवन सफल.
पर, जो शिक्षा से वंचित है,
जीवन उसका है निष्फल. .

यह विचारकर प्यारे बच्चो,
मेहनत से पढ़ना-लिखना.
गुरुओं से शिक्षा अर्जित कर,
उन्नति के पथ पर बढ़ना. .

# पेड़-पौधे

रचनाकार- श्लेष चन्द्राकर

क्यों काटते हो पेड़ पौधे, याद रखो यह भूल है.
देते हमें फल, गोंद औषध, और लकड़ी फूल हैं. .
ताज़ी हवा, छाया सुखद भी, पेड़ पौधों से मिले.
मन मोहते हैं देखते जब, पुष्प उपवन में खिले. .

जग में हमारे पेड़ -पौधे, होते सच्चे मीत हैं.
हालात अब उनके लिए क्यों, बन रहे विपरीत हैं. .
इस कार्य को इन मानवों की, मूर्खता ही हम कहें.
जब पेड़ पौधे बेतहाशा, नित्य काटे जा रहे. .

जलवृष्टि में भी पेड़-पौधे, हैं सहायक जान लो.
अब भूलकर इनको नहीं है, काटना यह ठान लो. .
पर्यावरण के अंग होते, ये बहुत ही खास हैं.
इनकी बदौलत हम सभी ही, आज लेते श्वास हैं.

# पञ्चतन्त्र की कथा- साँप और कौवा

एक जंगल में बरगद का एक बहुत बड़ा और पुराना वृक्ष था. उस वृक्ष पर एक कौवा अपनी पत्नी के साथ आनंद पूर्वक रहता था. कुछ दिनों बाद एक काला साँप बरगद के कोटर में आकर रहने लगा.

यह साँप वृक्ष पर घूमता और कौवे के छोटे बच्चों को खा जाता था. ऐसा बार - बार होता था. इससे कौवा और उसकी पत्नी को बहुत दुख होता था.

एक दिन कौवे की पत्नी ने कौवे से कहा, अब हमें कहीं और जाकर रहना चाहिए. कौवे ने अपनी पत्नी को ढाढस देते हुए कहा कि हम बरसों से यहां रह रहे हैं. इस वृक्ष को छोड़कर जाना उचित नहीं होगा. और क्या नए स्थान पर कोई संकट नहीं आएगा? हमें कोई उपाय करना चाहिए.

संकट के समय मित्रों की सहायता अवश्य लेनी चाहिए ऐसा विचार कर दोनों अपने पुराने मित्र सियार के पास गए और उससे अपनी व्यथा कही. सियार ने उन्हें समझाते हुए कहा विपत्ति के समय धीरज नहीं खोना चाहिए.

कौवे ने कहा, जिस की खेती नदी किनारे हो, जिसका घर साँपों से घिरा हुआ हो भला वह कैसे धीरज रख सकता है.

सियार ने उनसे कहा, मित्र! सभी समस्याओं को उपायों से हल किया जा सकता है. जब कोई कार्य बल और शक्ति से ना हो तो उसे युक्ति पूर्वक करना चाहिए. यदि दुर्बल और असहाय व्यक्ति युक्ति से काम ले तो शूरवीर भी उससे जीत नहीं सकता.

कौवे ने कहा, इन परिस्थितियों में हमें क्या करना चाहिए मित्र, यह बताओ.

सियार ने उन्हें एक युक्ति बताई. इसे सुनकर दोनों पति -पत्नी बहुत प्रसन्न हुए. वे उड़ते हुए नगर की ओर चले गए. वहाँ वे राजमहल के निकट एक सरोवर के पास पहुँचे. उन्होंने देखा, राजा और उनके कुछ मित्र सरोवर में स्नान कर रहे थे. उनके मूल्यवान वस्त्र और आभूषण सरोवर के किनारे रखे हुए थे. अवसर मिलते ही कौवे की पत्नी ने एक स्वर्णहार अपनी चोंच में उठा लिया और पास ही एक वृक्ष पर जा बैठी. कौवा काँव - काँव चिल्लाने लगा.

इससे पहरेदारों का ध्यान उनकी तरफ गया. हार को देखते ही वे कौवे की ओर दौड़ पड़े. उन्हें आता देखकर कौवा और उसकी पत्नी जंगल की ओर उड़ चले. पहरेदार उनके पीछे -पीछे दौड़ने लगे. कौवा और उसकी पत्नी उड़ते-उड़ते उसी बरगद के वृक्ष के पास पहुंचे. वह हार उन्होंने साँप के कोटर में डाल दिया. फिर वे वृक्ष की ऊँची शाखा पर जाकर बैठ गए.

पहरेदारों ने हार को कोटर में गिराते देख लिया था. वे उसे लेने के लिए जैसे ही कोटर के पास पहुँचे, वहाँ उन्होंने साँप को अपना फन फैलाए बैठे देखा. उन सब ने मिलकर लाठियों से साँप को मार डाला.

**कौवे और उसकी पत्नी को दुष्ट साँप से मुक्ति मिल गई.**

# करो भलाई

रचनाकार-महेंद्र कुमार वर्मा

काहे करते हो चतुराई,
इससे क्या पाते हो भाई.

सीधा-सादा जीवन जीयो,
इसी में है तुम्हारी भलाई.

चतुर काग को देखा होगा,
उसने सदा मात ही खाई.

सीधी - सादी कोयल प्यारी,
उसका जीवन है सुखदाई.

जो करते हैं तिकड़मबाजी,
उन्होंने हवा जेल की खाई.

चलो 'धीर' कुछ अच्छा करते,
बाँटें सबको आज मिठाई.

# शूल बनेंगे हम

रचनाकार- गीता गुप्ता 'मन'

हम छोटे छोटे बच्चे हैं, पर नहीं किसी से कम,
जो तूफानों में जलता है, वो दीप बनेंगे हम.

हम फूलों जैसे कोमल, निश्छल, सदा सुगंध फैलाते,
जिसने है पीड़ा दी हमको, शूल बनेंगे हम.

अंबर से ऊँची उड़ान है, हम उन्मुक्त परिंदे,
पंखों पर जो आँच है आई, बाज बनेंगे हम.

मन मैं भरी तरंगें इतनी, सागर लगता छोटा,
जिसने डगर बीच में रोकी, ज्वार बनेंगे हम.

हम बच्चे माँ के चरणों में, अपना शीश झुकाते,
माँ देती आशीष यही, नित उच्च बनेंगे हम.

# बचपन

रचनाकार- अजय कुमार यादव

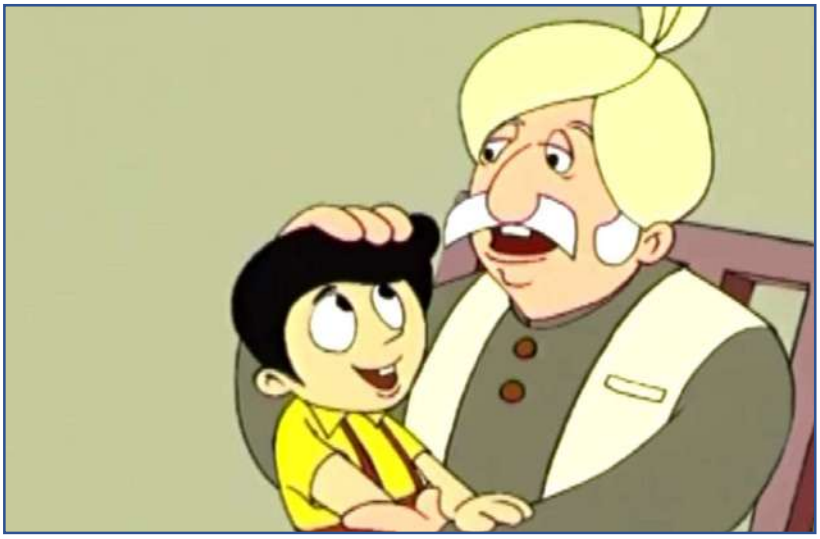

प्यार से पुचकारी मिलती है, सबको अपने बचपन में.
गोदी में उठा के सबको दुलारी मिलती बचपन में.
किस्से और कहानी दादा- दादी, सुनाते हैं बचपन में.
चॉकलेट और बिस्किट जुबानी, मिलती हैं बचपन में. .

पापा आते गोदी में उठा के मेरा मुन्ना राजा कहते हैं.
मम्मी बात -बात में पुचकारी करती हैं मुझको.
सारे मोहल्ले वाले प्यार से गोलू कहते हैं मुझको.
पल- पल की जिंदगी मेरी उनकी जिंदगानी बनती है. .

धड़कन हूँ मैं उनकी, मुझसे है उनकी जिंदगानी.
बहुत मिन्नतों के बाद पापा, मम्मी ने मुझे पाया है.
मेरी खातिर पलकें बिछाए रहते हैं. सभी मेरे अपने.
अपनी आँखों में कितने सपने, सजाएँ बैठे मेरे अपने. .

आम तोड़ने जाऊँ जब खूब ऊधम मचाऊँ मैं.
स्कूल से थक हारकर जब शाम को घर आऊँ मैं.
खाना ना खाने के कितने बहाने जब बनाऊँ मैं.
ना जाने कितनी ही शरारतें, करके सबको सताऊँ मैं. .

# नाम कमाओ

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

जउन मिहनत ले करथे काम.
होथे ओकरे जन मा नाम.

काम ले जउन ह जी चोराथे
जिनगी भर ओहर पछताथे.

मन लगा के काम ला करथे
मनखे ह उही आगू बढ़थे.

चेत लगा के काम ल करहू
नवा - नवा रद्दा ला गढ़हू.

सोच समझ के आगू आवौ
सुग्घर तुमन ह नाम कमावौ.

# पंतग

रचनाकार- शुभम पांडेय 'गगन', अयोध्या

चूमे अंबर भागे तेज,
करतब दिखाती है.
पंतग कितनी सुंदर है,
मन के सबको भाती है.

कोई लाल कोई है पीली,
छोटू लाया उसकी नीली.
सब मिलकर खींचें डोर,
पल भर में उड़कर दूर मिली.

ज़रा -सा चूक जाओगे जो,
कट कर उड़ जाती है
कभी कभी टकराकर,
पेड़ो पर फँस जाती है.

मेरी पंतग चली हवा में,
आसमान छू कर आएगी.
वापस आने के समय पर,
चाँद- सितारे लाएगी.

हर कोई छत पर देख रहा,
घूर- घूर कर पंतगों को.
बच्चे सब लड़ा रहे हैं,
अपने- अपने मंझों को.

# शापित सोना

रचनाकार- दिलकेश मधुकर

मधुपुर नाम का एक गाँव था. वहाँ के लोग धन धान्य और संपदा से धनी थे. एक बार लगातार बारिश के कारण पूरा गाँव बाढ़ में बह गया. धनीराम नाम का महाजन भी बाढ़ के कारण कंगाल हो गया और गाँव छोड़कर अन्यत्र काम की तलाश में निकल पड़ा.

पैदल चलते चलते अत्यंत थकान से धनीराम का गला सूखने लगा. प्यास के कारण उसका बुरा हाल हो रहा था. तभी उसे एक छोटा सा तालाब नजर आया. तालाब का पानी स्वच्छ था. वह अपनी प्यास बुझाने लगा तभी उसे तालाब में चमकती हुई सुनहरे रंग की वस्तु नजर आई. उत्सुक होकर वह थोड़ा गहरे पानी में गया और डुबकी लगाकर उस सुनहरी वस्तु को उठाया. यह क्या? सोने का सिक्का ! उसने पुनः डूबकी लगाई और सोने का एक और सिक्का निकाल लिया ऐसा करते करते उसने ढेर सारे सिक्के निकाल लिए.

धनीराम सिक्कों की थैली लेकर वापस अपने गाँव की ओर चल दिया. रास्ते में जंगल में छुपे हुए चोरों ने धनी राम को रोक लिया और सिक्कों की थैली लूटकर भाग गए.

भागते हुए चोरों को रास्ते में पुलिस ने सोने की थैली के साथ पकड़ लिया. पुलिस का दल जब चोरों को थाने ले जा रहा था तब रास्ते में उनकी गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गई और सभी घायल हो गए. वे सभी अस्पताल पहुँचे. उन्हें अस्पताल में भर्ती कर लिया गया. डॉक्टर की नजर सोने की थैली पर पड़ी और लालच में आकर डॉक्टर थैली को अपने घर ले गया.

घर पहुँचकर डॉक्टर ने पूरी बात अपनी पत्नी को बताई. उन्होंने सिक्कों की थैली को आलमारी में सुरक्षित रख दिया. उसी रात उनके सो जाने के बाद घर में एक चोर घुस आया और सोने की थैली चुराकर भाग गया.

भागते हुए वह चोर उसी तालाब के पास पहुँचा. चोर को तालाब के बीचों-बीच एक भूत नजर आया जो पानी पर चल रहा था. चोर डरकर वहीं बेहोश हो गया. भूत ने सिक्कों की पोटली उठा ली और तालाब के अंदर चला गया.

अगले दिन यह पूरी घटना की खबर गाँव में फैल गई. तब से लोग उस तालाब को शापित सोना कहने लगे.

# मेरी गुड़िया

रचनाकार- उषा साहू

मेरी गुड़िया बड़ी निराली है.
उसकी कोमल -मधुर वाणी है.
उसकी आँखें कजरारी हैं.
घर में पायल की झंकारों से,
गुंजित करती सुकुमारी है.
मेरी गुड़िया बड़ी निराली है.

गुड़िया की शरारतों से होती,
दादा-दादी को परेशानी है.
मम्मी-पापा की वह दुलारी है.
चाचा की कहानी की दीवानी है.
मेरी गुड़िया बड़ी निराली है.

खाने में करती आना -कानी है.
मगर रसगुल्लों की दीवानी है.
मेरी गुड़िया बड़ी सयानी है.
मेरी गुड़िया बड़ी निराली है.

भाई को रोज सुनाती कहानी है.
सबका सम्मान करती संस्कारी है.
मेरे आँगन की सुंदर फुलवारी है.
ख़ुशबू फैलाती वह फूलों की रानी है.

# चिड़िया

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

चिड़िया चहकी है फुदक, जब-जब अमुआ ठाँव.
तिनका-तिनका चुन रही, बना रही निज ठाँव. .

बैठी है निज घोंसला, चूजों का कर ध्यान.
ध्यान लगाकर जाँच लो, यही है प्रेम विधान. .

फुदक -फुदक कर नाचती, होती बहुत प्रसन्न.
दिख जाता है जब कहीं, इक -दो दाना अन्न. .

कोमल पंख पसारकर, उड़ती नभ की ओर.
दाना -पानी के लिए, नाप रही नभ छोर. .

चिड़ियों से भी प्यार कर, द्वेष, कपट रख दूर.
बनने देना घोंसला, खुशी मिले भरपूर. .

# सावन आया

रचनाकार- आयुष सोनी, उमरिया, म. प्र

चारों दिशाएँ हरितवर्ण,
चमक उठा है कण- कण.
तरुवर संग नभचर डोल रहे,
फूलों संग भँवरे बोल रहे.
बूंदों ने है मार्ग सजाया,
देखो- देखो सावन आया.

मेघों ने जग को घेरा है,
सूरज ने भी मुँह फेरा है.
सूखे सरवर छलक उठे,
ख़िरमन भी अब दमक उठे.
नदियों ने है गीत सुनाया.
देखो-देखो सावन आया.

कोयल हुई दीवानी है,
जिसकी मीठी वाणी है.
मोरों ने नर्तन शुरू किया,
तृण ने तुहिन शृंगार किया.
धरा ने प्रेमगीत है गाया,
देखो-देखो सावन आया.

# पहेलियाँ

रचनाकार - तेजेश साहू

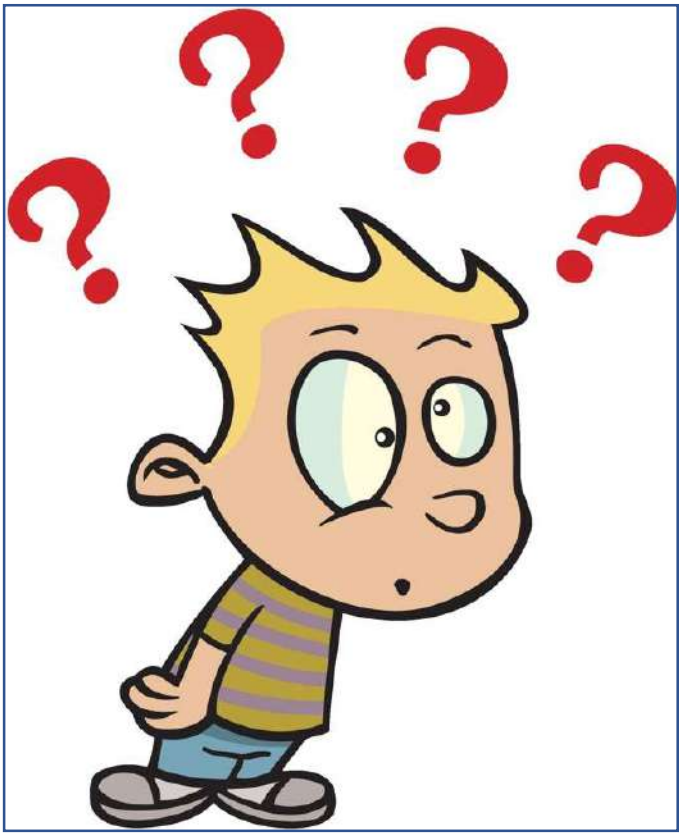

1.

हमको यह देता है ज्ञान,
इसको पढ़कर, हम बने महान.
बच्चे, बूढ़े, सब हैं पढ़ते,
बताओ-बताओ इसका नाम.

2.

यह हमको देते हैं ऑक्सीजन,
इसके बिना ना किसी का जीवन.
आओ इसका हम करें रोपण,
शुद्ध करें अपना पर्यावरण.

3.

एक चले चीता की चाल,
दूजा घोड़ा होय.
तीसरा चले हाथी की चाल,
फिर भी सामना होय.

4.

कौन गली, कौन खेत पहाड़ी,
खड़ा रहता हूँ सीना तान.
मेरे से है जग उजियारा,
सब मौसम मेरा एक समान.

5.

बीसो का सर काट लिया,
ना मारा, ना खून किया.
जिसने इस पहेली को ध्यान दिया
उसने उत्तर पहचान लिया.

उत्तर :-- 1. पुस्तक 2. पेड़-पौधे 3. घड़ी 4. बिजली-खंभा 5. नाखून

# सौर मंडल

रचनाकार- कामिनी जोशी

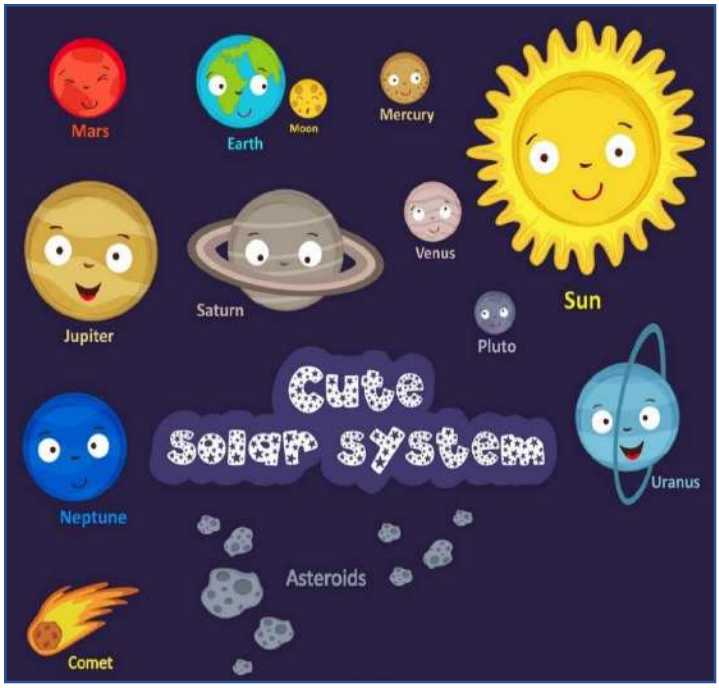


## सूर्य

मैं हूँ एक तारा,
लगता हूँ सबको प्यारा.
गर्मी देना मेरा काम,
सूरज है मेरा नाम.
मेरे चक्कर लगाते ग्रह,
मुझको बहुत भाते ग्रह.

## बुध

सूर्य के बाद मैं आता हूँ,
बुध ग्रह मैं कहलाता हूँ.
सूर्य के हूँ सबसे पास,
ग्रहों में हूँ सबसे खास.

**शुक्र**

मुझे खुद पर होता फ़क्र,
क्योंकि मैं हूँ चमकीला शुक्र.
बुध के बाद मैं आता हूँ,
भोर का तारा कहलाता हूँ.
साँझ को मैं जल्दी आता,
इसलिए साँझ का तारा, कहलाता हूँ.

**पृथ्वी**

जहाँ से मिलता तुमको ज्ञान,
सुन लो भाई पृथ्वी मेरा नाम.
केवल मुझमें ही तो जीवन है,
सूर्य से है मेरा तीसरा स्थान.

**मंगल**

लाल-लाल दिखलाई देता,
इसलिए लाल ग्रह कहलाता हूँ.
मंगल ग्रह नाम है मेरा,
पृथ्वी के बाद मेरा स्थान.

**बृहस्पति**

मंगल के बाद मैं आता हूँ,
बृहस्पति कहलाता हूँ.
नाम में हूँ सबसे बड़ा,
ग्रह भी बड़ा कहलाता हूँ.

**शनि**

तीन वलयों वाला ग्रह हूँ मैं,
इसलिए बहुत सुंदर हूँ मैं.
मेरे नाम से लोग डरते हैं,
सभी मुझे शनि कहते हैं.

**वरुण**

जल का वाहक मुझे समझते,
देव समझकर लोग पूजते.
मैं वरुण कहलाता हूँ,
ठंडा हूँ, सबको भाता हूँ.

# चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी -

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

## तुलसी भोई, कक्षा नवमीं, शा. उ. मा. शाला, पंधी, बिलासपुर द्वारा भेजी गई कहानी

### भालू और रानी मधुमक्खी

भालू पेड़ की छाँव में बैठा था. उसने देखा कि पेड़ पर मधुमक्खियों का एक बड़ा सा छत्ता है. छत्ते में ढेर सारा शहद था. भाल के मुँह में पानी आ गया और वो सोचने लगा की काश मुझे शहद मुझे खाने को मिल जाए.

उसने कुछ सोचकर रानी मधुमक्खी से बात शुरू की.

भालू:-- रानी कैसी हो? मुझे तुमसे कुछ बात करनी है.

रानी मधुमक्खी:-हाँ कहो क्या कहना चाहते हो!

भालू :- आपका छत्ता तो बहुत अच्छा है, आप ने इसे बड़ी मेहनत से बनाया होगा. आपकी मेहनत देखकर मुझे बड़ी खुशी होती है.

रानी मधुमक्खी- हाँ वो तो है, पर तुम क्या चाहते हो? साफ-साफ कहो.

भालू- मैंने बैठे-बैठे आपके छत्ते को देखा, तो मुझे लगा उसमें बहुत सा शहद इकट्ठा हो गया है!कहीं ऐसा ना हो कि कोई आपका शहद चुरा ले. इससे तो अच्छा है कि आप किसी दिन जंगल के सभी जानवरों को दावत ही दे दें.

रानी मधुमक्खी भालू के मन की बात समझ गई, उसने कहा हाँ भालू भाई मैं आपकी बात समझ गई हूँ आप का मन शहद खाने को कर रहा है इसलिए आप बातें बना रहे हो.

यह सुनकर भालू शर्मिंदा हो गया.

पर फिर रानी मधुमक्खी ने कहा भालू भाई मैं आपको शहद खाने दे सकती हूँ पर आपको मुझसे एक वादा करना होगा.

भालू खुश होकर बोला हाँ हाँ बताओ! मुझे क्या करना होगा?

रानी मधुमक्खी बोली मैं आपको रोज थोड़ा-थोड़ा शहद दूँगी, बदले में आपको मेरे छत्ते की रखवाली करनी होगी.

भालू ने कहा अरे वाह यह तो अच्छी बात है. आप मुझे रोज शहद खिलाना और मैं आपके छत्ते की रक्षा करूंगा.

उसके बाद भालू मधुमक्खी के छत्ते की रखवाली करने लगा और रानी मधुमक्खी उसे रोज शहद देने लगी.

## डॉ. मंजरी शुक्ला, पानीपत, हरियाणा द्वारा भेजी गई कहानी

### गब्बू का शहद

गुब्बारे बेचते हुए गब्बू भालू का पूरा ध्यान पेड़ पर लगे शहद के छत्ते पर ही था.

मधुमक्खियाँ भी भालू की नीयत समझ गई थीं और उन्होंने टॉमी कुत्ते को थोड़ा शहद देकर छत्ते की रखवाली के लिए तैयार कर लिया था.

टॉमी को भी शहद पसंद था वह छत्ते की रखवाली करने के लिए पेड़ के पास ही जमकर बैठ गया था.

गब्बू ने समझ लिया कि वह शहद नहीं खा सकेगा.

तभी वहाँ व्हाइटी खरगोश आया और गब्बू से बोला- "मुझे बीस गुब्बारे दो. "

"इतने सारे गुब्बारों का तुम क्या करोगे?" गब्बू ने पूछा.

"मैं अपना घर इन रंगबिरंगे गुब्बारों से सजाऊँगा." व्हाइटी बोला.

गब्बू ने कहा कि- "मेरा मन शहद खाने को ललचा रहा है पर वो टॉमी मुझे छत्ते के पास भी नहीं जाने देगा."

व्हाइटी ने गुस्सा होते हुए कहा- "मधुमक्खियाँ दिन रात मेहनत करके शहद तैयार करती हैं और तुम उनका छत्ता तोडना चाहते हो."

गब्बू अपनी सफाई में कुछ कहने वाला था कि व्हाइटी बोला- "मुझे देखो मैं खुद ज़मीन के अंदर से गाजर खोदकर निकालता हूँ, तब खाता हूँ."

"अब जल्दी से मुझे गुब्बारे दो."

गब्बू गुब्बारे गिनने लगा. अब वह भी सोच रहा था कि उसे मधुमक्खियों का छत्ता नहीं तोड़ना चाहि.

तभी व्हाइटी बोला- "इतने सारे गुब्बारे फुलाएगा कौन?तुम मुझे ये हवा भरे गुब्बारे ही दे दो."

गब्बू कुछ कहता, इससे पहले ही व्हाइटी ने गब्बू के हाथों से गुब्बारों की डोर छीन ली. पर डोर पकड़ते ही व्हाइटी गुब्बारों के साथ हवा में उड़ चला.

गब्बू चिल्लाया- "मना किया था न हवा भरे गुब्बारों को पकड़ने से!"

पर हवा में उड़ता व्हाइटी ख़ुशी से चीख रहा था.

थोड़ी देर तक गुब्बारे हवा के साथ उड़ते रहे फिर अचानक गुब्बारों की डोर पेड़ की टहनी में फँस गई और गुब्बारों के साथ साथ व्हाइटी भी पेड़ पर अटक गया.

गब्बू ने देखा कि पेड़ कि ऊँची डाल पर व्हाइटी लटका हुआ था.

गब्बू उसे बचाने के लिए पेड़ पर चढ़ने लग.

छत्ते पर बैठी मधुमक्खियों ने सोचा कि गब्बू शहद खाने आ रहा है. मधुमक्खियों ने गब्बू पर हमला बोल दिया.

गब्बू ने मधुमक्खियों को समझाने की कोशिश की कि वह पेड़ पर अटके व्हाइटी को बचाने जा रहा है लेकिन मधुमक्खियों ने उसकी बात सुनी ही नहीं.

मधुमक्खियों के डंक लगने से गब्बू को बहुत दर्द हो रहा था.

उसकी आँखों में आँसूं आ गए और वह बोला- “मेरी बात तो सुनो."

पर किसी ने गब्बू की बात नहीं सुनी. सब उसे जोर जोर से काट रही थी.

पर गब्बू ने तो छत्ते का कोई नुकसान नहीं किया और पेड़ पर ऊपर की ओर चल पड़ा.

अब मधुमक्खियों ने देखा कि ऊपर की डाल पर व्हाइटी डोर में उलझकर लटका हुआ था. गब्बू ने जाकर डोर में उलझे व्हाइटी को निकाला. व्हाइटी गब्बू के गले लग गया. गब्बू और व्हाइटी नीचे उतर आए.

मधुमक्खियों को अब बहुत दुःख हो रहा था.

मधुमक्खियों की रानी बोली- "हमें गब्बू की बात सुन लेनी चाहिए थी. पूरी बात सुने बिना ही हमने उसे काट लिया."

"हाँ. . . वह चाहता तो हमारा छत्ता तोड़ लेता पर उसने ऐसा नहीं किया.“ अन्य मधुमक्खियों ने कहा.

दर्द से बेहाल गब्बू चुपचाप अपने घर की ओर चल दिया.

अगले दिन सुबह गब्बू ने जब दरवाज़ा खोला तो व्हाइटी एक बड़ा सा डिब्बा लिए खड़ा था.

गब्बू मुस्कुराते हुए बोला- "हैप्पी न्यू ईयर"

"ये केक मैंने स्पेशल तुम्हारे लिए बनाया है." व्हाइटी ने गब्बू से कहा.

गब्बू को गाजर का केक बिलकुल पसंद नहीं था पर व्हाइटी प्यार से उसके लिए केक लाया था इसलिए वह डिब्बा खोलने लगा.

डिब्बा खुलते ही गब्बू का मनपसंद "हनी केक" सामने था. शहद की खुशबू कमरे में फ़ैल गई.

ख़ुशी के मारे गब्बू कुछ भी नहीं बोल पा रहा था.

तभी मधुमक्खियाँ भी वहाँ आ गईं और सबने मिलकर मिलकर गब्बू के मुँह में "हनी केक" डाल दिया.

गब्बू केक खाते हुए सोच रहा था, दोस्ती सच में बहुत मीठी होती है.

## संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

### लालची भालू

पेड़ के नीचे बैठे भालू को पेड़ पर मधुमक्खियों का छत्ता दिखाई दिया. छत्ता देखकर भालू खुश हो गया. वह सोचने लगा कि किसी तरह खाने को शहद मिल जाए.

भालू ने शहद हासिल करने की तरकीब सोची और उसने रानी मधुमक्खी को आवाज दी.

भालू की आवाज सुनकर रानी मधुमक्खी छत्ते से बाहर आई और बोली - "भालू भैया, क्या बात है क्यों मुझे पुकार रहे हो."

भालू ने कहा - “रानी, मैं इसी वृक्ष के नीचे विश्राम कर रहा हूँ. आपका छत्ता देखकर सोचा कि आपसे कुछ बात कर लूँ. आप बहुत ही मेहनती हैं, आपके इतना बड़ा छत्ता बनाया है, बहुत सारा शहद भी इकट्ठा किया है. मुझे डर है कि कहीं आपके द्वारा इकट्ठा किए इस शहद को कोई चुरा न ले. इसलिए मेरा एक सुझाव है कि जब आप लोग शहद इकट्ठा करने बाहर जाती हो तो, मैं आपके छत्ते की रखवाली करूँगा. बदले में आप मुझे थोड़ा सा शहद दे दिया करना. आप का छत्ता भी सुरक्षित रहेगा और मुझे भी खाने के लिए शहद मिल जाएगा."

रानी मधुमक्खी भालू के झाँसे में आ गई और बोली- ”आप ठीक कह रहे हो भालू भैया, मुझे भी डर लगता है कि हमारे शहद को कोई चुरा ना ले. मुझे आपकी शर्त मंजूर है."

रानी मधुमक्खी ने भालू को शहद खाने को दिया और छत्ते को भालू के भरोसे छोड़कर मधुमक्खियों के साथ पास के बगीचे से फूलों का रस इकट्ठा करने चली गईं.

भालू ने रानी द्वारा दिए शहद को मजे से खाया पर उतने शहद से उसका मन नहीं भरा. भालू के मन में और शहद खाने का लालच आ गया. उसने सोचा कि क्यों न मैं इस छत्ते से पूरा शहद निकाल लूँ. ये मधुमक्खियाँ मेरा क्या बिगाड़ लेंगी ऐसा सोचकर भालू ने छत्ते से सारा शहद निकालकर खा लिया. अधिक मात्रा में शहद खा लेने के कारण उसे नींद सताने लगी और वह पेड़ की छाया में ही सो गया.

इधर रानी मधुमक्खी के मन में आया कि भालू पर एकाएक इतना विश्वास करना ठीक नहीं है. रानी ने साथी मधुमक्खियों को यह पता लगाने भेजा कि भालू छत्ते की रखवाली ठीक से कर रहा है या नहीं? मधुमक्खियाँ जब अपने छत्ते को देखने पहुँचीं तो देखा कि छत्ता पूरी तरह नष्ट कर दिया गया है. मधुमक्खियों ने तुरंत यह जानकारी रानी मधुमक्खी को दी. रानी मधुमक्खी ने क्रोधित होकर सभी मधुमक्खियों के साथ भालू पर हमला कर दिया. मधुमक्खियों

के आक्रमण से भालू बुरी तरह घायल हो गया और बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाकर वहाँ से भागा.

अब भालू की सबक मिल चुका था कि दूसरों की चीजों का लालच नहीं करना चाहिए.

## अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई-मेल kilolmagazine@gmail. com पर माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे

# मैं महसूस कर रही हूँ

रचनाकार- कु. सोनम, कक्षा आठवीं, KGBV दुल्लापुर बाजार, पंडरिया, कबीरधाम

आएगी कोई ऐसी महामारी,
जो लाएगी इतनी लाचारी.
स्कूल से इतना प्यार है,
फिर भी बन गई स्कूल से दूरी.
फिर मन में उम्मीदों की लहर जागी,
ऑनलाइन क्लास की गाड़ी भागी.
घर बैठे शिक्षा ले रहे हैं.
स्कूल कब खुलेगा?
उम्मीदों के बीज बो रहे हैं.
पढ़ाई के साथ- साथ "ई-गपशप" पढ़कर,
जीवन कौशल की शिक्षा ले रहे हैं.
बेटियों के संघर्ष की कहानी,
अपने मन में गढ़ रहे हैं.
हमको इस दौर में भी आगे बढ़ना है,
शिक्षा के साथ-साथ,
जीवन कौशल को भी गढ़ना है.
मैं कई सवालों से जूझ रही हूँ,
हो जाएगा सब ठीक,
मैं महसूस कर रही हूँ.
मैं महसूस कर रही हूँ.

# विवेक

रचनाकार- गीता गुप्ता 'मन'

कामचोर ये है बड़े,
पड़े है मुँह को टेक.
बुद्धि जरा सी है नहीं,
कहते सभी विवेक.

दिवास्वप्न में देखते,
राजा बन गए आज.
बाँट रहे थे खूब धन,
आया शत्रु एक.

होकर गुस्सा खूब ही,
मारा जोर से पैर.
टूट गए बर्तन सभी,
टुकड़े हुए अनेक.

खूब पड़ी फिर मार है,
घर से गए है भाग.
खाने के लाले पड़े,
तब जागा विवेक.

# सफलता की कहानी

मनुष्य अपने मज़बूत इरादों से ही अपने रास्ते स्वयं बना पाता है एवं अपने जीवन का सफ़र तय कर पाता है. अपने दृढ़ संकल्प से चमेली ने अपने जीवन को एक नई दिशा दी. चमेली की कहानी बता रही हैं उसकी शिक्षिका जो शाला में जीवन कौशल सत्रों का संचालन करती हैं.

चमेली कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय गरियाबंद में कक्षा आठवीं की छात्रा है. चमेली गरियाबंद से काफी दूर पतोरादादर नामक गाँव से आई है. पतोरादादर कमार भुंजिया समुदाय के लोगों की बस्ती है. विद्यालय की कक्षा छठवीं में जब चमेली ने प्रवेश किया तब वह काफी शांत रहती थी. चमेली के गाँव में बोली जाने वाली भाषा और विद्यालय में बोली जाने वाली भाषा एवं वातावरण में अंतर और अपने मन की झिझक के कारण वह अपनी बात अच्छे से व्यक्त नहीं कर पाती थी. कक्षा में जब शिक्षक उससे कोई प्रश्न करते तब भी वह संकोचवश कुछ नहीं कह पाती थी.

चमेली को कक्षा सातवीं से जीवन कौशल सत्रों में शामिल होने का मौका मिला. इन सत्रों के दौरान कराई जाने वाली गतिविधियों के माध्यम से चमेली की झिझक दूर हो गई और वह अपनी बातें अपने दोस्तों एवं शिक्षिकाओं से कहने लगी. अब वह अच्छी तरह से अपनी बात व्यक्त करने लगी. इस वर्ष चमेली कक्षा आठवीं में है. अच्छे व्यक्तित्व के कारण चमेली को शाला नायिका बनाया गया है.

जीवन कौशल के सत्रों से चमेली की तर्कपूर्ण सोच विकसित हुई और उसके व्यवहार में भी परिवर्तन आया. चमेली की शिक्षिका एक घटना बताते हुए कहती हैं कि दीवाली की छुट्टी में जब चमेली अपने घर गई थी तब उसको माहवारी हुई. भुंजिया जनजाति में माहवारी से संबंधित बहुत से नियम व धारणाएँ होती हैं जिनके अनुसार चमेली को घर से आठ दिनों तक बाहर नहीं निकलना था, किसी पुरुष के सामने नहीं आना था. चमेली पर इन सभी का पालन करने के लिए दबाव बनाया गया. लेकिन चमेली ने दृढ़तापूर्वक यह सब करने से मना कर दिया क्योंकि उसने जीवन कौशल के सत्रों के माध्यम से यह जाना था की माहवारी एक प्राकृतिक एवं सामान्य प्रक्रिया है. उसके माता-पिता इस बात को लेकर चमेली से नाराज हो गए पर चमेली अपनी बात पर अडिग रही एवं उसने अपने परिवार वालों को माहवारी के बारे में बताया कि यह सामान्य प्रक्रिया है इसको लेकर हमें भेदभाव नहीं करना चाहिए. चमेली ने अधीक्षिका मैडम की बात अपने माता पिता से करवाई और उसके माता पिता भी चमेली की बातों को समझकर यह मान गए कि माहवारी एक सामान्य प्राकृतिक प्रक्रिया है. उन्होंने चमेली को 8 दिन घर में बंद करके नहीं रखा व छुट्टी समाप्त होने पर उसे स्कूल भी भेज दिया. चमेली स्कूल आकर अपनी पढ़ाई में लग गई. चमेली के माता पिता ने यह भरोसा भी दिलाया कि वे अपने परिवार में माहवारी से संबंधित भेदभाव वाली परंपराओं का पालन नहीं करेंगे.

तो यह थी चमेली की कहानी जो स्वयं के साथ साथ औरों के जीवन में भी बदलाव लेकर आयी.

# आँसू

रचनाकार- सन्तोष कुमार तारक

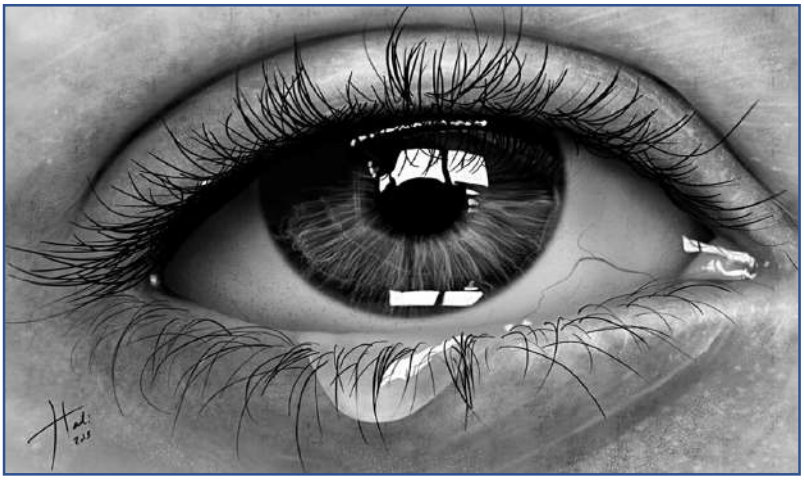

रख सको तो एक निशानी हूँ मैं,
खो दो तो सिर्फ एक कहानी हूँ मैं,
रोक ना पाए जिसको ये सारी दुनिया,
वो एक बूँद आँख का पानी हूँ मैं. .

सबको प्यार देने की आदत है हमें,
अलग पहचान बनाने की आदत है हमें,
कितना भी गहरा जख्म दे दे कोई,
उतना ही ज्यादा मुस्कुराने की आदत है हमें. .

इस अजनबी दुनिया में अकेला ख्वाब हूँ मैं,
सवालों से खफा छोटा सा जवाब हूँ मैं,
जो समझ ना सके मुझे, उनके लिए कौन,
जो समझ गए, उनके लिए खुली किताब हूँ मैं. .

# शिक्षक दिवस

रचनाकार- तेजेश साहू

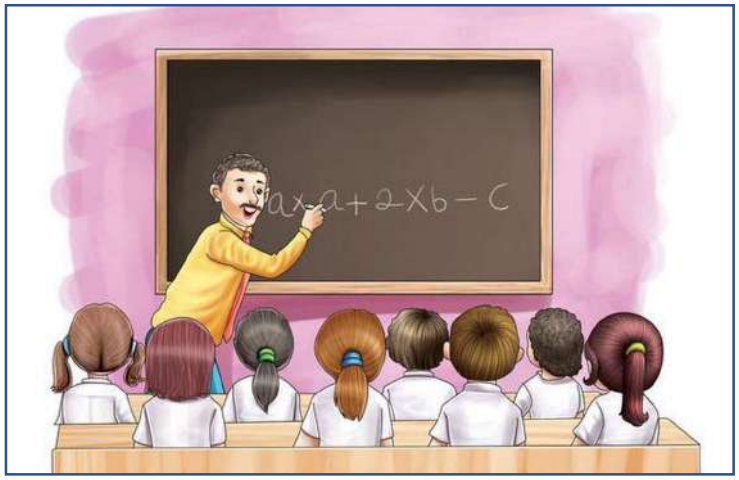

इस दुनिया में महान हैं शिक्षक,
जो हमें सभी विषय पढ़ाते हैं.
शिक्षक कड़ी मेहनत कर,
बच्चों का भविष्य बनाते हैं. .

शिक्षक होते हैं बहुत महान,
इसलिए तो इनके सम्मान में.
प्रतिवर्ष पाँच सितंबर को,
हम शिक्षक दिवस मनाते हैं. .

शिक्षक होतें हैं ऐसे दीपक,
जो खुद जलकर
ज्ञान का दीप जलाते हैं.
इसलिए इनके सम्मान में,
हम शिक्षक दिवस मनाते हैं. .

इस दिन जन्मे थे एक महान शिक्षक,
सर्वपल्ली डॉक्टर राधाकृष्णन कहलाते हैं,
इसलिए तो इनकी याद में हम,
शिक्षक दिवस मनाते हैं. .

# एहसास

रचनाकार- पेशवर राम यादव

सौम्य सी नादान सी,
नटखट सी मस्ताना सी.
वो तेरा चहकना,
मासूमियत लिए वो मुस्काना.
वो किलकारियाँ
कभी दौड़ते- हाँफते हाथ हिलाते.
खेलते फुदकते आना,
और कहना सर !
वो शिकवा शिकायत का पल,
हमे याद है !
वो प्रभात फेरी,
देशभक्ति का वह नारा,
जय जवान जय किसान.
वन्देमातरम का जयकारा,
राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत !
लयबद्ध सुमधुर स्वर से,
चहुं ओर गुंजायमान होती,
हमे याद है!
वो मुस्कान भरी गीत कविता,
शायराना अंदाज में वो ओजस्वी भाषण,

हाथ में लहराते तिरंगे झंडे.
मुँह मीठा करते वो मिठाई,
हमें याद है!
यूँ तो ऐसा लगता है कि,
ये कुछ ही दिनों की बात है.
तुमसे बिताये वह हरपल ख़ास है,
एक सुखद एहसास है,
वो ज्ञान का मंदिर,
जिनकी कक्षाओं में,
अविरल ज्ञान की गूंज,
गुंजायमान होती.
आज सूना सा, वीरान सा खामोश है,
निराश है, लेकिन देर ही सही,
फिर भी उसे खुलने का आस है.

# <u>सावन बदरिया</u>

रचनाकार- पेश्वर राम यादव

सुनो भैया सुनो संगी
सावन बदरिया ह आगे
सीटीर सीटीर झड़ी ह
भुइयां म समागे.

सूरज अउ चंदा ह
घलोक बादर म लुकागे
हरियर हरियर चारो मुड़ा
धरती ह हरियागे.

खेती खार के दिन आगे
धान बांवत बियासी होवत
सुवारिन मन भात बासी लाथे
मेड़ पार में बईठ के
बोरे बासी ह नून चटनी संग सुहाते.

बारह बजे के बेरा ले
सब्बो कोती अर्र त त् ता सुनाथे
मेचका मछरी मन ह घलोक
डबरा तरिया डोली म कुलबुलाते.

रंग बिरंग के फुटु ह
छाता अइसन छतरागे
खुमरी छितोरी घलोक
अब के बरसा में नंदागे.

अरन बिरन के कीरा मन ह
अब्बड़, भुइयां म इतराथे
गेंगरुवा तको माटी ल
खेती बर उर्वरा बनाथे.

हरियर हरियर सब्बो कोती
भुइयाँ ह सुघ्घर हरियागे
साग भाजी ह घलोक
बखरी बारी म उलाहगे.

त चलो संगी चलो भैया
सावन बदरिया ह आगे
अब हम्मों मन पेड़ पौधा लगाथन
हमर स्कूल, गाँव ल सुघ्घर हरियर बनाथन.

# जल प्रकृति की धरोहर है

रचनाकार- तुलस चंद्राकर

धरती पर जल एक बहुमूल्य रत्न है. जल प्रकृति की ओर से मानवता के लिए उपहार है. जल प्रकृति की अनमोल धरोहर है. जल की वजह से ही इस धरती पर जीवन संभव है. जल ही जीवन है, जल है तो कल है. जीवन के लिए शुध्द जल अति आवश्यक है, स्वच्छ जल अच्छे स्वास्थ्य की कुञ्जी है.

धरती के दो तिहाई भाग पर जल है, पर उसमें से मात्र एक प्रतिशत जल ही पीने योग्य है, 97 प्रतिशत जल महासागरों में भरा हुआ है, शेष दो प्रतिशत जल बर्फ के रूप में जमा है. जल है तो जीवन है, इस बात को हर व्यक्ति समझता है, लेकिन जल संरक्षण के प्रति लोग जागरूक नहीं हैं. इंसानों की लापरवाही तथा प्रकृति के साथ छेड़छाड़, वृक्षों की अंधाधुंध कटाई व वनों के लगातार घटने से वर्षा की अवधि व वर्षा की मात्रा में कमी होने के कारण प्रतिवर्ष भूजल स्तर तेजी से नीचे जा रहा है. कल कारखानों से निकलने वाले दूषित जल व शहरी क्षेत्रों के गटर एवं कूड़े कचरे ने भूजल स्रोतों को प्रदूषित कर दिया है. फलस्वरूप आजकल शहरों से लेकर गाँवों तक जल संकट उत्पन्न होने लगा है. यह स्थिति अनियंत्रित मानवीय गतिविधियों के कारण ही उत्पन्न हुई है. इस समस्या का निराकरण भी मानव ही कर सकता है.

आइये हम सब निम्नलिखित उपाय अपनाकर जल बचाने में अपना योगदान देने का संकल्प लें -

1. पानी व्यर्थ न गँवाएँ, पानी का सदुपयोग करें.
2. नलों को इस्तेमाल के बाद बंद रखें.
3. मंजन करते समय नल बंद रखें तथा आवश्यकता होने पर ही खोलें.
4. खाद्य सामग्री तथा कपड़े धोते समय नल खुला न छोड़ें.
5. जल को व्यर्थ नाली में न बहाएँ बल्कि इस जल का अन्यत्र उपयोग करें, जैसे पौधों या बगीचे की सिंचाई में.
6. नहाते समय अधिक जल व्यर्थ न बहाएँ.
7. पानी में कूड़ा कचरा न डालें.
8. जल स्रोत के आसपास सफाई रखें.
9. वर्षा के पानी को संरक्षित करें.

# मैं छोटी सी बच्ची हूँ

रचनाकार- उषा साहू

मैं छोटी सी बच्ची हूँ.
दिल की मैं सच्ची हूँ.
चोट लगे तो रोती हूँ.
माँ के आँचल में सोती हूँ.
अपने सुकोमल नयनों में,
प्यारे-प्यारे सपने सँजोती हूँ.
सुबह-सुबह जल्दी जगती हूँ.
माँ दुर्गा के लिए माला पिरोती हूँ.
प्यारी बातों से मन मोह लेती हूँ.
बरसातों में नाव को खेती हूँ.
फूलों को देख हँसती हूँ.
सूरज के उजाले सँजोती हूँ.
प्यारी सी मैं बेटी हूँ.

# मित्र

रचनाकार- अनन्या तिवारी, कक्षा पांचवी, शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय प्रतापपुर

घनघोर अंधेरे में आशाओं का प्रकाश है
मित्र है जिसके पास तो अमावस में उजास है
मित्र सबन्धों में विश्वास
डगमगाती नैया की पतवार है
चुन लें जो राहों के शूलों को
मित्र होते वो ख़ास हैं
मित्र है बन्धु सा जो करता खबरदार
गलत रास्तों से बचाता
वही तो सच्चा यार है
अपनो सा स्नेह और दुलार देता.
मित्र से ही पूरा होता संसार है.

# फ़ौजी या वैज्ञानिक

रचनाकार- उपांशु एवं पल्लवी साहू

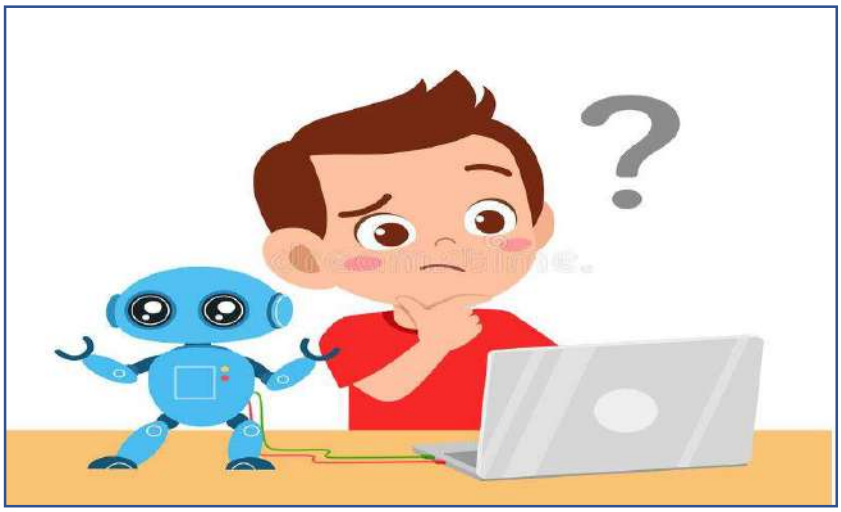

श्यामपुर गाँव में राम नामक आठ वर्ष का एक बच्चा रहता था. वह बहुत होशियार, साहसी और निडर था. वह प्रतिदिन विद्यालय जाता था, अपने माता-पिता एवं गुरुजनों का सम्मान करता था और प्रतिवर्ष कक्षा में प्रथम आता था.

एक दिन शिक्षक ने कक्षा में सभी से पूछा कि वे भविष्य में क्या बनना चाहते हैं और देश के लिए क्या करना चाहते हैं? राम ने अभी तक अपना लक्ष्य तय नहीं किया था. उसने घर आकर इस विषय पर अपने माता-पिता से सलाह ली कि भविष्य में उसे क्या बनना चाहिए और देश के लिए क्या करना चाहिए? राम के माता-पिता ने उससे पूछा कि वह क्या बनना चाहता है?राम ने जवाब दिया कि फ़ौजी और वैज्ञानिक दोनों ही देश की सेवा करते हैं और मुझे इन दोनों में से ही एक बनना है.

उसके माता-पिता ने कहा कि वे उसका भविष्य तो नहीं निर्धारित कर सकते परन्तु उसे फ़ौजी और वैज्ञानिक के बारे में कुछ न कुछ तो बता ही सकते हैं. फ़ौजी अपना सब कुछ छोड़कर देश की सीमा पर तैनात रहते हैं और जरूरत पड़ने पर देश के लिए अपने जीवन का त्याग भी कर देते हैं.

वैज्ञानिक भी देश के लिए नए नए आविष्कार करने में लगे रहते हैं और देश का विकास करते हैं. अपने माता-पिता की बात सुनकर राम ने मन ही मन अपना लक्ष्य तय कर लिया. अपनी

पढ़ाई पूरी कर राम अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने लगा और फिर एक दिन उसका चयन फ़ौज के लिए हो गया.

वह बहुत ही साहसी और निडर था. अफनी मेहनत और लगन से उसे फौज में तरक्की मिलती गई. सेवानिवृत्ति के समय तक उसे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया. उसने सेवानिवृत्त होने के बाद भी देशसेवा करने का संकल्प किया. राम के माता-पिता को उन्हें गर्व है कि उन्हें ऐसा पुत्र मिला.

# मेरा शहर

रचनाकार- अलका राठौर

अपना गाँव अपना शहर, सबको प्यारा लगता है,
यहाँ की मिट्टी, दिल की धड़कन में बसा होता है.
कच्ची गलियाँ बचपन में ले जाती है,
वो पक्की सड़के, फिर घर की ओर ले आती है.
यहाँ के कुएँ का पानी, सबसे मीठा लगता है,
अपनी बगिया का फूल, सबसे सुगंधित लगता है.

धीमें आँच में बनी, वो नरम रोटियाँ
दादी-नानी की बनाई, बालों की चोटियाँ.
लगते हैं प्यारे, अपने शहर के मेले-बाज़ार,
मातृभूमि में ही, जमाना चाहते हैं सब व्यापार.
कोई अपना गाँव -शहर, छोड़ना नहीं चाहता,
मजबूरी में परदेश की ओर रुख है करता.

रोटी की तलाश, व्यापार विस्तार बन जाती है,
पर दिल में हमेशा, अपने शहर की याद रह जाती है.
किसी ग्राहक को देख, पड़ोस के काका याद आते हैं,
तो किसी मुसाफ़िर को देख बूढ़े दादा याद आते हैं.
हम जहाँ भी रहें, अपना शहर दिल में बसता है,
हवाएँ जो यहाँ आयी है, वो वहाँ को भी तो छूकर आता है.

# पिता

रचनाकार- अविनाश तिवारी

जिसने न कभी किया विश्राम
स्वेद बहाकर हमें दिया पहचान
दिखाया नहीं कभी अपना दुलार
पर दिल में छुपा के रखा प्यार
हर दर्द को सीने में छुपाये
जमाने के झंझावतों से हमें बचाये
आँखों में गुस्सा, ह्रदय में अनुराग
ऐसा है मेरे पिता का प्यार
ऊँगली पकड़कर चलना सिखाया
ज़माने में हमें जीना सिखाया
हसरतें अपनी भुलाकर
हमारी ख्वाइशों को पर लगाया
अपने सपनों को हममें जिन्दा देखा

उस पिता को आज पिता बनकर समझ पाया
अपनी यादों में वही कठोर सीना लाया हूँ
जो था तो कठोर पर मुलायम
मेरे निर्माण के लिए
आज सर झुका है मेरा
उस निर्माता मेरे भगवान के लिए
इस जन्म में तेरा पुत्र बना
हर कर्तव्य को निभाऊँगा
संस्कारों से आपके
अपने संतानों को सजाऊँगा

# मैडम भीकाजी कामा: विदेश में तिरंगा फहराने वाली प्रथम भारतीय

लेखक -प्रमोद दीक्षित 'मलय'

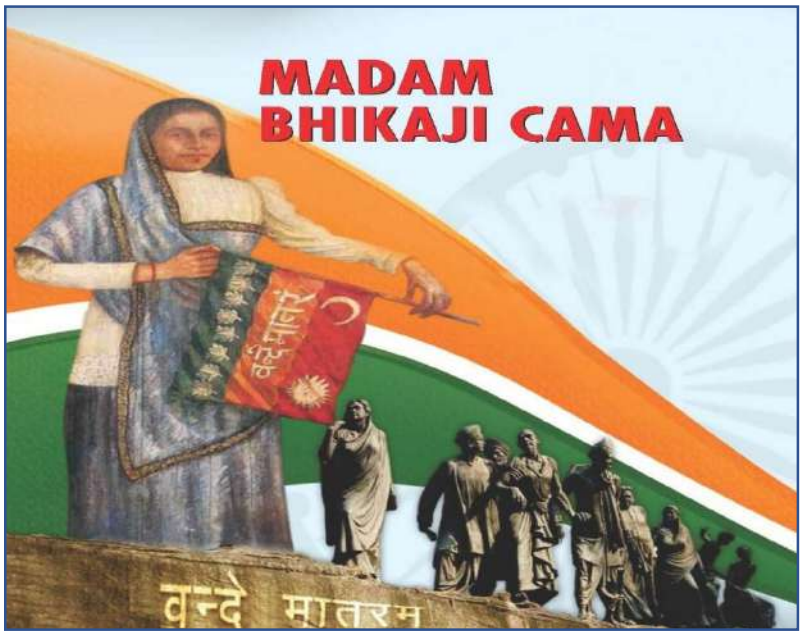


24 सितम्बर 1861 को मुम्बई के एक व्यापारी पारसी परिवार में पिता सोराबजी पटेल और माता जैजीबाई के यहाँ एक बच्ची का जन्म हुआ. नाम रखा गया भीकाजी. भीकाजी का बचपन अंग्रेजी रहन-सहन और शानो-शौकत में व्यतीत हुआ. पढ़ाई के लिए उन्हें मुम्बई के प्रसिद्ध ''अलेक्जेंडर नेटिव गर्ल्स इंग्लिश इंस्टीट्यूट'' में भेजा गया. वहाँ भीकाजी ने अपनी गम्भीरता और परिश्रम से अंग्रेजी भाषा पर अच्छा अधिकार प्राप्त कर लिया और गणित में विशेष योग्यता हासिल की. 1885 में भीकाजी का विवाह व्यापारी रुस्तम जी कामा के साथ हुआ. रुस्तम जी ब्रिटिश सरकार के समर्थक और प्रशंसक थे जबकि भीकाजी अपने पति के स्वभाव से ठीक विपरीत प्रखर राष्ट्रभक्त और अंग्रेज सरकार की कटु आलोचक थीं.

1896 में मुम्बई और पुणे में प्लेग फैल गया जिसने महामारी का रूप ले लिया. भीकाजी स्वयं की परवाह किए बिना रोगियों की सेवा-सुश्रूषा में जुट गईं. लगातार रोगियों के सम्पर्क में रहने के कारण वह स्वयं भी प्लेग से संक्रमित हो गईं. सघन उपचार से वह ठीक तो हो गईं लेकिन बहुत कमजोर हो जाने के कारण चिकित्सकों की सलाह पर बेहतर इलाज और जलवायु परिवर्तन के लिए 1902 में लंदन के लिए रवाना हुईं. लंदन में उनकी मुलाकात प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा से हुई. इस मुलाकात ने उनके भावी क्रान्तिकारी पथ की आधारशिला रख दी. भीकाजी कामा ने 1905 में श्यामजी कृष्ण वर्मा और वीर सावरकर के साथ मिलकर भारत के ध्वज का पहला डिजाइन बनाया. स्वस्थ हो जाने के बाद भी वे भारत नहीं लौटीं. वहीं रहकर

क्रान्तिकारियों को हर तरह से सहयोग करने लगीं जिससे भारत और शेष दुनिया में भारत के स्वतंत्रता संघर्ष की गाथा को सुना जाने लगा. वह कहती थीं, "भारत को आजाद होना चाहिए, भारत एक गणतंत्र होना चाहिए, भारत में एकता होनी चाहिए. "

22 अगस्त 1907 को जर्मनी के स्टुटगार्ट शहर में विश्व भर के समाजवादी विचारधारा वाले लोगों का एक बड़ा सम्मेलन हुआ. भारत की आजादी के लिए, अंग्रेजों के विरुद्ध शंखनाद करने एवं ब्रिटिश शासकों के अमानवीय बर्बरतापर्ण व्यवहार एवं आम जन के साथ किए जा रहे हिंसक अत्याचार को विश्व के सम्मुख प्रस्तुत करने हेतु इसे एक उचित मंच समझकर वीर सावरकर और श्यामजी कृष्ण वर्मा ने भीकाजी कामा को जर्मनी भेजने का निश्चय किया. जब समारोह प्रारम्भ हुआ तो भीकाजी कामा ने देखा कि सम्मेलन में सम्मिलित हो रहे सभी प्रतिनिधियों के देशों के ध्वज कार्यक्रम स्थल पर सम्मान के साथ फहराए गए हैं. लेकिन भारत के ध्वज के रूप में यूनियन जैक को फहराता देखकर भीकाजी का खून खौल उठा और उन्होंने भारत का अपना ध्वज फहराने का निश्चय किया. उन्होंने अपने साथ लाये गये भारतीय ध्वज को फहराया और उपस्थित प्रतिनिधियों के सम्मुख ओजस्वी भाषण देते हुए कहा, "यह भारतीय स्वतंत्रता का ध्वज है. इसका जन्म हो चुका है. हिन्दुस्तान के युवा वीर सपूतों के रक्त से यह पहले ही पवित्र हो चुका है. " सभी ने ध्वज का वंदन कर एक तरह से भारतीय स्वतंत्रता के ध्वज को मान्यता प्रदान कर दी. इस ध्वज में ऊपर से क्रमशः हरी, पीली और लाल क्षैतिज पट्टियां थीं. हरी पट्टी में कमल के खिले आठ पुष्प टँके हुए थे जो तत्कालीन भारत के आठ राज्यों के प्रतीक थे. बीच की पट्टी में देवनागरी लिपि में वंदेमातरम् अंकित था और लाल पट्टी में बाईं ओर सूरज एवं दाईं ओर चाँद के चित्र बने हुए थे. यह झण्डा वर्तमान में एक धरोहर के रूप में पुणे की मराठा केसरी लाईब्रेरी में सुरक्षित है.

अंग्रेज भीकाजी को खतरनाक, अराजकतावादी क्रान्तिकारी एवं ब्रिटिश विरोधी मानते थे, इसीलिए उनके भारत प्रवेश पर रोक लगा रखी थी. इतना ही नहीं भारत में उनकी सारी सम्पति जब्त कर ली गई थी. अंग्रेजों में भीकाजी कामा का इतना खौफ था कि लंदन प्रवास के समय उन्हे मारने की गुप्त योजना भी बनाई गई, लेकिन समय रहते जानकारी हो जाने से वह लंदन छोड़कर 1909 में पेरिस चली गईं और अंग्रेज हाथ मलते रह गये. पेरिस में भीकाजी कामा ने 'होमरूल लीग' की स्थापना की. जेनेवा से 1909 में लाला हरदयाल द्वारा प्रकाशित "वंदेमारतम्' साप्ताहिक पत्र में सहयोग किया. यह पत्र प्रवासी भारतीयों में बहुत लोकप्रिय हुआ. उन्होंने बर्लिन से 1910 में "तलवार" नाम से एक समाचारपत्र निकाला. वीर सावरकर की प्रसिद्ध पुस्तक "1857 का स्वतंत्रता संग्राम" के प्रकाशन एवं वितरण में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया. प्रथम विश्व युद्ध के समय उन्हें दो बार गिरफ्तार किया गया. वह लंदन प्रवास के समय दादा भाई नौरोजी की निजी सचिव रहीं. भारतीय क्रान्तिकारी उन्हें 'भारतीय क्रान्ति की माता' मानते थे. एक बार अखबारों में उनका चित्र जोन ऑफ आर्क के साथ छपा जिसे देखकर अंग्रेज सरकार चौकन्नी हो गई और भीकाजी कामा पर नजर रखने लगी.

तीस साल तक भारत से बाहर रहते हुए मैडम कामा ने यूरोप और अमेरिका में भाषण और समाचार पत्रों में अनेक लेख लिखकर अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों एवं भारतीय जनता पर किये जा रहे अत्याचार का सच दुनिया के सामने रखा और भारत की आजादी की माँग रखी. भीकाजी कामा स्त्री-शिक्षा की प्रबल हिमायती थी और तमाम समस्याओं की जड़ महिलाओं की अशिक्षा को मानती थीं. वह महिला अधिकारों और उनके स्वावलम्बन की पैरोकार थीं. उनका यह रूप मिस्र में आयोजित एक सम्मेलन में देखने को मिला. वहाँ उपस्थित श्रोताओं के समक्ष उन्होंने गंभीर गर्जना की, "याद रखिए जो हाथ पालना झुलाते हैं वही चरित्र निर्माण करते हैं." अत्यधिक प्रवास एवं श्रम के चलते मैडम कामा का स्वास्थ्य लगातार गिर रहा था. वे अपना अंतिम समय भारत में बिताना चाहती थीं. अपने देश के प्रति इस उत्कट प्रेम के कारण वे भारत में प्रवेश करने की पाबंदी के बावजूद 1935 में स्वदेश आयीं. उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया. 13 अगस्त 1936 को बीमारी के कारण मैडम भीकाजी कामा ने भारत की पवित्र भूमि को अंतिम प्रणाम करते हुए नश्वर देह त्याग दी.

26 जनवरी 1962 को भारतीय डाक विभाग ने भीकाजी कामा के अविस्मरणीय योगदान को स्वीकारते हुए उन पर एक डाक टिकट जारी किया. भारतीय तटरक्षक दल ने 1997 में अपने एक युद्धक पोत का नामकरण भीकाजी के नाम पर किया. भारत के कई नगरों की सड़कों के नाम भीकाजी कामा पर रखे गये हैं ताकि भावी पीढ़ी उनके योगदान से परिचित हो सके.

# स्वतंत्रता

रचनाकार- योगेश ध्रुव "भीम"

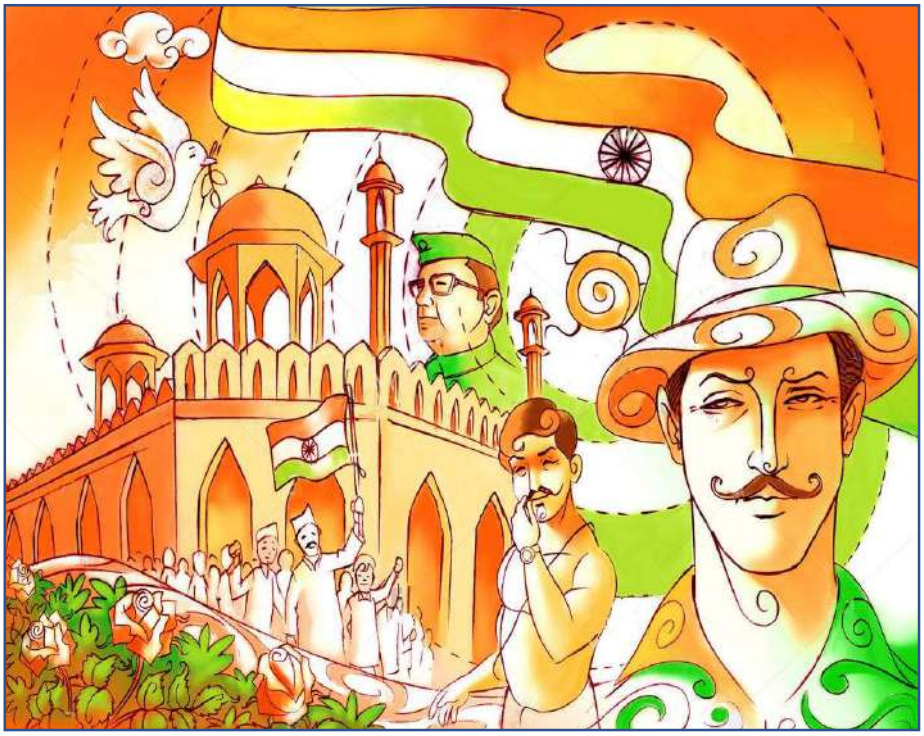

वर्षो की गुलामी के संघर्ष जिसने झेले है,
इस स्वतंत्रता का मोल वे ही समझते हैं,

दुख भरे बादलों में सुख निहारे जो,
आज वर्षा के मोल समझते वे ही हैं,

चाबुक की मार और चीत्कार सुनी जिसने,
इस माँ भारती के पीड़ा वे ही समझते हैं,

कालापानी, कालकोठरी की सजा जिसे मिली,
इस स्वतंत्रता की पीड़ा बयाँ वे ही करते हैं,

भरी दोपहरी में तन से जिसके पसीना टपके,
अन्न है अनमोल ये पीड़ा किसान ही समझे है,

लाज बचाने माँ ये तेरे लाल सैकड़ों मील चलें,
चूम फंदे को नवयुवा वंदेमातरम बोल रहें हैं,

यज्ञ की बलिवेदी में सैकड़ों आहुतियाँ दिये
इस तिरंगे की बानाधर कूद वे ही साक्षी बने हैं,

पिंजरे की पीड़ा को वे खग ही तो जाने है,
खीर, पूरी, फल आज मुक्त की न सुहाए है,

सहजता से नहीं मिली यह स्वतंत्रता है,
हर जन को यह आज समझना जरूरी है,

# तिरंगा भारत की शान

रचनाकार- अतुल पाठक "धैर्य"

तिरंगा भारत की शान है,
माँ भारती की अमिट पहचान है.

हमारे दिलों की धड़कन,
यही हमारी जान है.

हिम शिखर पर लहराता,
गौरव राष्ट्र का बतलाता.

हर हिन्दुस्तानी के दिल का,
बढ़ाता ये सम्मान है.

इसकी खातिर हर सैनिक,
दे देते अपनी जान है.

हर देशभक्त का सपना,
तिरंगे का बढ़े मान है.

जो शौर्य की गाथा रचता,
वो दहाड़ता हिन्दुस्तान है.

हर हिन्दवासी की जान,
और वतन का अभिमान है.

तिरंगा भारत की शान है,
माँ भारती की अमिट पहचान है.

# गलतियाँ

रचनाकार- रीता गिरी

मानव और ग़लतियों का गहरा नाता है,
ग़लतियों से बहुत कुछ सिखा जाता है. .
कभी-कभी नादानी में गलती हो जाती,
कभी -कभी ज़िद में गलती हो जाती.
बार-बार गलतियाँ जो दोहराता है,
एक दिन वो पछताता रह जाता है.
समय रहते जो गलतियाँ सुधार लेता है,
जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ता जाता है.
कुछ गलती जीवन में भारी पड़ जाती हैं,
कुछ गलती जीवन में सीख नई दे जाती हैं. .

# नटखट नन्ही

1. मम्मी: नन्ही, क्या तुम्हें पता है कि यह सड़क कहाँ जाती है?
   नन्ही: मम्मी, यह सड़क तो कहीं नहीं जाती. पर मैं इस पर चलकर स्कूल जाती हूँ.

2. दादी: नन्ही, घड़ी देखकर बताओ कितना समय हुआ है.
   नन्ही: पर दादी मुझे समय देखना नहीं आता.
   दादी: अच्छा यह देखकर बताओ कि घड़ी में काँटे कहाँ- कहाँ हैं.
   नन्ही: दादी तीनों कांटे घड़ी में ही है.

3. नन्ही: पापा, आप ऐसा कोई शब्द जानते हैं जिसको सभी गलत पढ़ते हैं?
   पापा: मुझे नहीं पता नन्ही, तुम्हें पता हो तो बताओ.
   नन्ही: वह शब्द है "गलत"

4. टीचर: नन्ही, बताओ कि दुनिया में सबसे ज्यादा बारिश कहाँ होती है?
   नन्ही: मैम, ज़मीन पर ही होती होगी.

5. टीचर: नन्ही तुम्हें पता है कि सबसे ज्यादा विटामिन 'सी' किसमें होता है?
   नन्ही: मैम, मिर्च में होता होगा.
   टीचर: अच्छा, पर क्यों?
   नन्ही: मिर्च खाते ही सब सी-सी करने लगते है न इसलिए

# हम भारत के सैनिक

रचनाकार- श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल', भिंड

हम भारत के सैनिक हैं, यह देश हमें अति प्यारा है.
इसकी रक्षा करना सबसे पहला फर्ज हमारा है.

इसकी पावन मिट्टी में हम, खेलकूद कर बड़े हुये.
फल, औषधियाँ, अन्न-जल पा, स्वस्थ, पुष्ट हो खड़े हुये.
वृक्ष, पुष्प, पर्वत मालायें, प्रकृति ने रूप सँवारा है.
इसकी रक्षा करना सबसे, पहला फर्ज हमारा है. .

मान और सम्मान देश का, कभी नहीं जाने देंगे.
अपने भारत की धरती पर, शत्रु को नहीं आने देंगे.
पर्वत की चोटी पर चढ़कर, दुश्मन को ललकारा है.
इसकी रक्षा करना सबसे, पहला फर्ज हमारा है.

पूर्व दिशा में सूरज उग कर, नई रोशनी भरता है.
देश गान गा मधुर लय में, झर-झर झरना झरता है.
जागो, उठो! चूम लो चोटी, रवि ने हमें पुकारा है.
इस भारत की रक्षा करना, पहला फर्ज हमारा है.

# कोरबा नगरी

रचनाकार- वसुन्धरा कुर्रे

मिलता है काला पाउडर यहाँ
लगाकर जाना मेरे स्कूल से
चलें आना मेरे स्कूल में
मेरे स्कूल है काले हीरे की खान में.
रोज सुबह स्कूल खुलता तो फर्स और दीवारें ओढ़े रहती हैं काली चादर.
सफेद कपड़ा पहन के ना आना मेरे स्कूल में,
लगेगा धुला नहीं है जन्मों से
देखना हैं तो चले आना मेरे स्कूल में
मेरे स्कूल है काले हीरे की खान में.
जब होता है ब्लास्टिंग
तब होता है भूकंप का अहसास
अहसास लेना है भूकंप का तो
चले आना मेरे स्कूल में
मेरे स्कूल है काले हीरे की खान में.
काले जूते की जरूरत नहीं मेरे स्कूल के बच्चों को
दिन भर में पांव में बन जाते हैं काले जूते
चलती है हाइवा उड़ती है धूल देखना है हवा काले रंग में
तो चले आना मेरे स्कूल में
औद्योगिक नगरी घूमना है तो

चले आना मेरे जिला कोरबा नगरी
कहते हैं ऊर्जा नगरी इसे भारत में
यहाँ है बालको एल्यूमीनियम प्लान्ट थर्मल पावर
ताप विद्युत गृह, जल विद्युत गृह
चले आना ऊर्जा की नगरी में
सरईसिंगार पास में ही है बडा खदान
मेरे स्कूल है काले हीरे की खान में
देखना है काले हीरे तो
चले आना मेरे स्कूल में.

# चर्मकार की चतुराई

रचनाकार- श्वेता तिवारी

बहुत पहले की बात है बहादुर सिंह नाम का एक राजा था और उसका एक मंत्री था टेकचंद. एक दिन राजा बहादुर सिंह ने टेकचंद से कहा- "कल जब हम राज्य में घूमने निकले तो हमारे पैरों में धूल लग गई. धूल की इतनी मजाल कि वह हमारे पैरों में लगे. तुम लोग इस धूल का कुछ उपाय करो नहीं तो तुम्हारी खैर नहीं."

राजा की बात सुनकर मंत्री टेकचंद घबरा गया और हाथ जोड़कर बोला- "महाराज आप हमारे अन्नदाता हैं अगर आपके चरणों पर धूल नहीं लगेगी तो हम लोगों को आप की चरण धूलि कैसे मिलेगी."

मंत्री की यह बात सुनकर राजा खुश तो हो गया पर फिर भी अकड़ कर बोला- "जो भी हो हमें धूल से नफरत है तुम इस धूल को पूरे राज्य से हटवा दो नहीं तो तुम्हारे लिए बहुत बुरा होगा."

राजा का ऐसा आदेश सुनकर टेकचंद बहुत परेशान हो गया. उसने देश विदेश के विद्वानों से धूल हटाने का उपाय पूछा लेकिन कोई भी उसे उपाय नहीं बता पाया. मंत्री टेकचंद को राजा को खुश करने के लिए एक उपाय सूझा.

उसने कई लाख झाड़ू खरीदकर राज्य भर में बँटवा दिया और नागरिकों को आदेश दिया कि सारी धूल हटा दी जाए. राजा के आदेश का पालन करने के लिए राज्य के सभी लोग गली

मोहल्लों में झाड़ू लगाने लगे. झाड़ू लगाने से इतनी धूल उड़ी कि राजा खाँसते-खाँसते परेशान हो गया.

राजा ने फिर टेकचंद को बुलाया और कहा- "तुम्हारी व्यवस्था तो बहुत ही बेकार है. धूल हटाने की जगह तुमने चारों ओर धूल ही धूल कर दी. अगर दो दिनों में यह धूल नहीं हटी तो तुम्हें जेल की हवा खानी पड़ेगी."

राजा की यह बात सुनकर टेकचंद ने सभी नागरिकों को धूल पर पानी छिड़कने की आज्ञा दी. इस काम में इतना पानी खर्च हो गया कि कुओं और तालाबों का सारा पानी ही खत्म हो गया. चारों ओर कीचड़ ही कीचड़ हो गया वह अलग. राज्य के लोग प्यास के मारे परेशान होने लगे.

अब राजा ने टेकचंद को डाँटा- "तुमने तो हमें बर्बाद ही कर दिया तुम जैसों को तो सूली पर ही चढ़ा देना चाहिए सारे राज्य में यह क्या कीचड़ कीचड़ कर रखा है."

घबराए हुए मंत्री टेकचंद ने तुरंत योग्य मंत्रियों की एक बैठक बुलाई मंत्रियों ने टेकचंद को सलाह दी कि अगर राज्य की पूरी धरती को चमड़े से मढ़ दिया जाए तो धूल से बचा जा सकता है यह सलाह राजा को बताइए. राजा को यह सलाह ठीक लगी और उसने देश के सभी चर्मकारों को बुलवाया.

चर्मकारों को जब यह पता चला कि उन्हें सारे राज्य की धरती को चमड़े से मढ़ना है तो वह बुरी तरह घबरा गए और राजा से बोले कि महाराज न तो हमारे पास इतना चमड़ा है और न ही इतनी शक्ति कि हम पूरे राज्य की धरती को मढ़ सकें.

तब एक बूढ़े चर्मकार ने कहा कि महाराज मैं एक उपाय बताऊँ? राजा बोला "तुम क्या उपाय बताओगे विद्वानों की पूरी सभा तो इस समस्या का हल बता नहीं पाई."

चर्मकार बोला आप आज्ञा तो दीजिए महाराज. राजा ने उस बूढ़े चर्मकार की बात मान ली. बूढ़े चर्मकार ने अपने थैले में से मुलायम चमड़े का एक टुकड़ा निकाला और उससे एक जोड़ा सुंदर सा जूता बनाकर राजा के पाँव में पहना दिया.

जूते पहनकर राजा ने कुछ दूरी तक चल कर देखा तो उसके पैरों में धूल का एक कण भी नहीं लगा. इस प्रकार राजा को अपनी समस्या का समाधान मिल गया. चर्मकार द्वारा अपनाए गए उपाय से मंत्री टेकचंद की जान बच गई और उस दिन से लोगों ने जूते पहनने प्रारंभ कर दिए.

# पिंजरे का जीवन

रचनाकार- वसुन्धरा कुर्रे

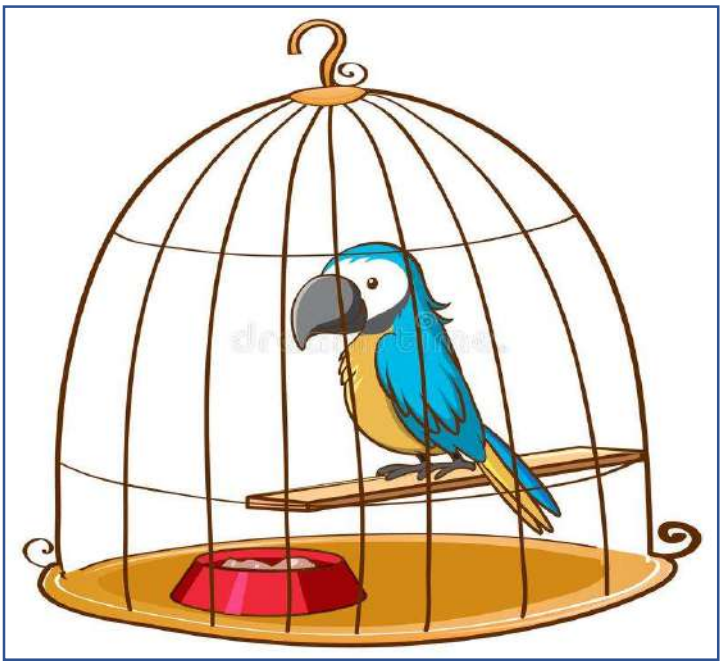

पिंजरे का जीवन उस पक्षी से पूछो,
जन्म के कुछ हफ्तों के बाद जो कैद हो गई.
जिसने ढंग से आँखे न खोलीं
अपनी जिंदगी को ढंग से न देखा.
स्वच्छंद वातावरण में पंख न फैलाए.
विचरण करने का ढंग न सीखा.
कीट- पतंगे खाने वाले,
उस पक्षी से पूछो,
जिसको हमने कैद कर दिया.
पिंजरे का जीवन उस पक्षी से पूछो,
कैसा उसका जीवन,
उसको भी लगता काश!
मैं भी पंख फैलाऊँ.

खुले वातावरण की सैर कर आऊँ.
पूछो उस पक्षी से उसको भी तो जीना है,
खुली गगन में स्वच्छंद पवन में उड़ना है.
हमने तो उसको कैद किया,
पिंजरे का जीवन जीने को मजबूर किया.
पिंजरे का जीवन उस पक्षी से पूछो,
जिसने अपना जीवन पिंजरे में कुर्बान किया.
आज इस महामारी से हमें अपना जीवन,
आज उस पक्षी से सीख मिला.
कैसे हमने उसको पिंजरे में कैद किया,
आज हम भी उसी की तरह अपने घर में कैद हैं

# कालू बन्दर

रचनाकार- नीरज त्यागी

कालू बंदर है बहुत परेशान,
भारी गर्मी से वह हुआ हैरान.

बादल कभी-कभी हैं दिखते,
ना जाने फिर क्यों नहीं टिकते.

प्रभु से फिर करने लगा गुहार,
प्रभु कर दो बारिश की बौछार.

उमड़-घुमड़ कर बादल आए,
कालू झूम-झूम कर नाचे गाए.

तन-मन कालू के हो गए तृप्त,
बारिश जंगल में हुई ज़बरदस्त.

दूर हुई जंगल से गर्मी की मार,
कई दिन बरसे बादल बारम्बार.

# योग

रचनाकार- खेमराज साहू

आओ प्रात: जल्दी जागे,
स्वस्थ जीवन हेतु भागे.

सुबह के वक़्त ताज़ी हवा,
बीमार काया के लिए बेहतर दवा.

योग करे और केवल योग करे,
प्राणशक्ति एवं शरीर का संयोग करे.

योग से होता शरीर भी अच्छा,
मन - परिवेश भी होता सच्चा.

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाएँगे,
सब मिलकर रोग भगाएँगे.

योग को जीवन में आत्मसात करें,
स्वस्थ जीवन जीने की कला सीखे.

संसार में योग से भारत परचम लहराएगा,
भारतीय संस्कृति को फिर विश्व अपनाएगा।

अपने मन - शरीर का योग करे,
अपार सफलता का अमृत चखे.

जीवन की हर श्वास है बहुमूल्य,
प्राणायाम है नवजीवन के समतुल्य.

बच्चे- बूढ़े सब मिल करे योग,
तन - मन अपना रखे निरोग.

# असली खुशी

रचनाकार- वल्लभ डोंगरे

पति के अपने व्यवसाय से सम्बंधित आवश्यक बैठक में व्यस्त होने से करुणा को अपने 5 साल के बेटे को स्कूल लाने टू-व्हीलर से जाना पड़ा. वापस आते समय अचानक बैलेंस बिगड़ने से वह बेटा सहित गाड़ी से गिर गई.

करुणा के शरीर पर कई खरोंचें आई पर बेटा एकदम सुरक्षित था. दोनों को गिरा देखकर आसपास के लोग मदद के लिए एकत्रित हो गए. तभी करुणा की कामवाली बाई कहीं से अचानक उपस्थित हो गई. उसने करुणा को सहारा देकर खड़ा किया और अपने एक परिचित की दुकान पर गाडी खड़ी करवा कर कंधे का सहारा देकर करुणा और उसके बेटे को पास ही स्थित अपने छोटे से घर ले गई.

बाई ने अपने पल्लू से बंधा हुआ 50 का नोट निकाला और अपने बेटे राजू को दूध, बैंडेज एवं एंटीसेप्टिक क्रीम लेने के लिए भेज दिया तथा अपनी बेटी रानी को पानी गर्म करने को कहा. उसने करुणा को कुर्सी पर बिठाया तथा मटके का ठंडा जल पिलाया. इतने में पानी गर्म हो गया था.

बाई करुणा को लेकर बाथरूम में गई और सारे जख्मों को गर्म पानी से धोकर साफ किये. वह उठकर बाहर गई और एक नया टावेल और नया गाउन ले आई. उसने टावेल से पूरा बदन पोंछा तथा जहां आवश्यक था वहां बैंडेज लगाया, जहां मामूली चोट थी वहां एंटीसेप्टिक क्रीम लगाया. अब करुणा को कुछ राहत महसूस हो रही थी.

बाई करुणा को पहनने के लिए नया गाउन देते हुए बोली "यह गाउन मैंने कुछ दिन पहले ही खरीदा था लेकिन आज तक नहीं पहना है मैडम आप यही पहन लीजिए तथा थोड़ी देर रेस्ट कर लीजिए.", "आपके कपड़े बहुत गंदे हो रहे हैं हम इन्हें धो कर सुखा देंगे फिर आप अपने कपड़े बदल लीजियेगा."

करुणा के पास कोई विकल्प नहीं था. वह गाउन पहनकर बाथरुम से बाहर आई. बाई झटपट अलमारी से एक नया चद्दर निकाल और पलंग पर बिछाते हुए बोली आप थोड़ी देर यहीं आराम कीजिए.

इतने मैं बिटिया ने दूध भी गर्म कर दिया था. बाई ने दूध में हल्दी मिलाई और पीने को दिया और बड़े विश्वास से कहा मैडम आप यह दूध पी लीजिए आपके सारे जख्म भर जाएंगे.

लेकिन अब करुणा का ध्यान तन पर कम और अपने मन पर अधिक था. उसके मन के सारे जख्म एक-एक करके हरे हो रहे थे. वह सोच रही थी "कहां मैं और कहां यह बाई?" जिस बाई को वह फटे- पुराने कपड़े दिया करती थी, उसने आज उसे नया टावेल और नया गाउन दिया और नई बेडशीट लगाई. धन्य है यह बाई.

एक तरफ करुणा के दिमाग में यह सब चल रहा था तभी दूसरी तरफ बाई गरम गरम चपाती और आलू की सब्जी बना रही थी. थोड़ी देर मे वह थाली लगाकर ले आई. वह बोली"आप और बेटा दोनों खाना खा लीजिए. बाई को मालूम था कि मैडम का बेटा आलू की सब्जी ही पसंद करता है और उसे गरम- गरम रोटी पसंद है. इसलिए उसने रानी से तैयार करवा दी थी. रानी बड़े प्यार से करुणा के बेटे को आलू की सब्जी और रोटी खिला रही थी और करुणा इधर प्रायश्चित की आग में जल रही थी.

वह सोच रही थी कि जब भी इसका बेटा राजू मेरे घर आता था मैं उसे एक तरफ बिठाने का कह देती थी, उसको नफरत से देखती थी और इन लोगों के मन में हमारे प्रति कितना प्रेम है.

यह सब सोच- सोच कर करुणा आत्मग्लानि से भरी जा रही थी. उसका मन दुख और पश्चाताप से भर उठा था. तभी करुणा की नज़र राजू के पैरों पर गई जो लंगड़ कर चल रहा था. उसने बाई से पूछा "इसके पैर को क्या हो गया तुमने इलाज नहीं करवाया?" बाई ने बड़े दुखी मन

से कहा "मैडम इसके पैर का ऑपरेशन करवाना है जिसका खर्च करीबन ₹10000 रुपए है.", "मैंने और राजू के पापा ने रात दिन मेहनत कर के ₹5000 तो जोड़ लिए हैं ₹5000 की और आवश्यकता है. हमने बहुत कोशिश की लेकिन कहीं से मिल नहीं सके.", "ठीक है, भगवान का भरोसा है, जब आएंगे तब इलाज हो जाएगा. फिर हम लोग कर ही क्या सकते हैं?"

तभी करुणा को ख्याल आया कि बाई ने एक बार उससे ₹5000 अग्रिम मांगे थे और उसने बहाना बनाकर मना कर दिया था. आज वही बाई अपने पल्लू में बंधे सारे रुपए उस पर खर्च कर के खुश थी और मैं उसको, पैसे होते हुए भी मुकर गई थी और सोच रही थी कि बला टली. आज मुझे पता चला कि उस वक्त इन लोगों को पैसों की कितनी सख्त आवश्यकता थी.

करुणा अपनी ही नजरों में गिरती ही चली जा रही थी. अब करुणा को अपने शारीरिक जख्मों की चिंता बिल्कुल नहीं थी बल्कि उन जख्मों की चिंता थी जो उसकी आत्मा को उसने ही लगाए थे. उसने दृढ़ निश्चय किया कि जो हुआ सो हुआ लेकिन आगे जो होगा वह सर्वश्रेष्ठ ही होगा. उसने उसी वक्त बाई के घर में जिन- जिन चीजों का अभाव था उसकी एक लिस्ट अपने दिमाग में तैयार की.

थोड़ी देर में करुणा लगभग ठीक महसूस कर रही थी. उसने अपने कपड़े बदले लेकिन वह गाउन उसने अपने पास ही रखा और बाई को बोला- "यह गाऊन अब तुम्हें कभी भी नहीं दूंगी यह गाऊन मेरी जिंदगी का सबसे अमूल्य तोहफा है. "बाई बोली" मैडम यह तो बहुत हल्की रेंज का है." बाई की बात का करुणा पर कोई असर नहीं हुआ.

करुणा घर आ गई लेकिन रात भर सो नहीं पाई. उसने अपनी सहेली के मिस्टर, जो हड्डी रोग विशेषज्ञ थे, उनसे राजू के लिए अगले दिन का अपॉइंटमेंट लिया. बाई की जरूरत का सारा सामान खरीदा और वह सामान लेकर में सीधे उसके घर पहुंच गई. बाई समझ ही नहीं पा रही थी कि इतना सारा सामान एक साथ मालकिन उसके घर में क्यों लेकर आई है.

करुणा ने धीरे से उसको पास में बिठाया और बोला "मुझे मैडम मत कहो मुझे अपनी बहन ही समझो और हां कल सुबह 7:00 बजे राजू को दिखाने चलना है उसका ऑपरेशन जल्द से जल्द करवा लेंगे और तब राजू भी ठीक हो जाएगा"

खुशी से बाई रो पड़ी लेकिन यह भी कहती रही कि "मैडम यह सब आप क्यों कर रही हो? हम बहुत छोटे लोग हैं हमारे यहां तो यह सब चलता ही रहता है. "वह करुणा के पैरों में झुकने लगी. यह सब सुनकर और देखकर करुणा का मन भी द्रवित हो उठा और आंखों से आंसुओं की धार बह निकली. उसने बाई को दोनों हाथों से ऊपर उठाया और गले लगा लिया. "बहन रोने की जरूरत नहीं है अब यह घर भी मेरा घर है."

करुणा ने मन ही मन कहा बाई तुम क्या जानो कि मैं कितनी छोटी हूँ और तुम कितनी बड़ी. आज तुम लोगों के कारण मेरी आंखें खुल सकीं. मेरे पास इतना सब कुछ होते हुए भी मैं भगवान से और अधिक की भीख मांगती रही, मैंने कभी संतोष का अनुभव नहीं किया. लेकिन आज मैंने जाना कि असली खुशी पाने में नहीं, देने में है.

# शेरनी रानी

रचनाकार- नीरज त्यागी

शेरनी रानी बड़ी स्यानी,
अपनी करती है मनमानी.
राजा जी पर हुक्म चलाती,
अपनी बात सब मनवाती.

राजा शेर जंगल मे गुर्राते,
घर पर नजर झुकाकर आते.
बीवी का हर हुक्म बजाते,
खुश होकर रानी के पैर दबाते.

बड़े प्यार से रानी को समझाते,
घर की बात बाहर ना जाये,
किसी को ये पता ना चल जाये,
करता मैं घर के सारे काम,
हो जाऊँगा फिर मैं बदनाम,

मैं तो हूँ जंगल का राजा,
सब पर अपना हुक्म बजाता.
तुम बस मानो मेरी एक बात,
रखनी है घर मे घर की ये बात.

# बेटी की चाह

रचनाकार- अशोक कुमार शाक्य

जब देखूं मैं दूर गगन में अनगिनत सितारों को
उड़न परी बन उड़ जाऊं मैं लगा कल्पना के पर
और भी एक दुनिया है क्या हमारी दुनिया से अलग
गुड्डी गुड़िया मेरे जैसी क्या वहां भी होती है
मां के आंचल में वहां क्या मुन्नी आराम से सोती है
चंदा मामा शीतल क्यों है क्यों सूरज चाचू आग बबूला
एक दिन जरूर पहुंचुगी मैं वहां पर बनाकर सपनों का झूला
कल्पना दीदी जैसी में भी अंतरिक्ष में उड़ान भरूंगी
अपने सपनों को जरूर मैं एक दिन पूरा करूंगी
पर यह संभव हो न सकेगा बिना ज्ञान के पंखों से
फैला रहे हैं सदा अंधेरा अज्ञानी बिच्छू के डंको से
नित नित मैं स्कूल जाऊंगी करने सपनों को साकार
ज्ञान से ही ले सकेगा भविष्य मेरा एक आकार
उड़न परी बन भारत की में करूं विश्व में अपना नाम
कलाम चाचा कल्पना दीदी जैसा कर जाऊं कुछ काम

# शिक्षा जागरुकता

रचनाकार- शशि पाठक

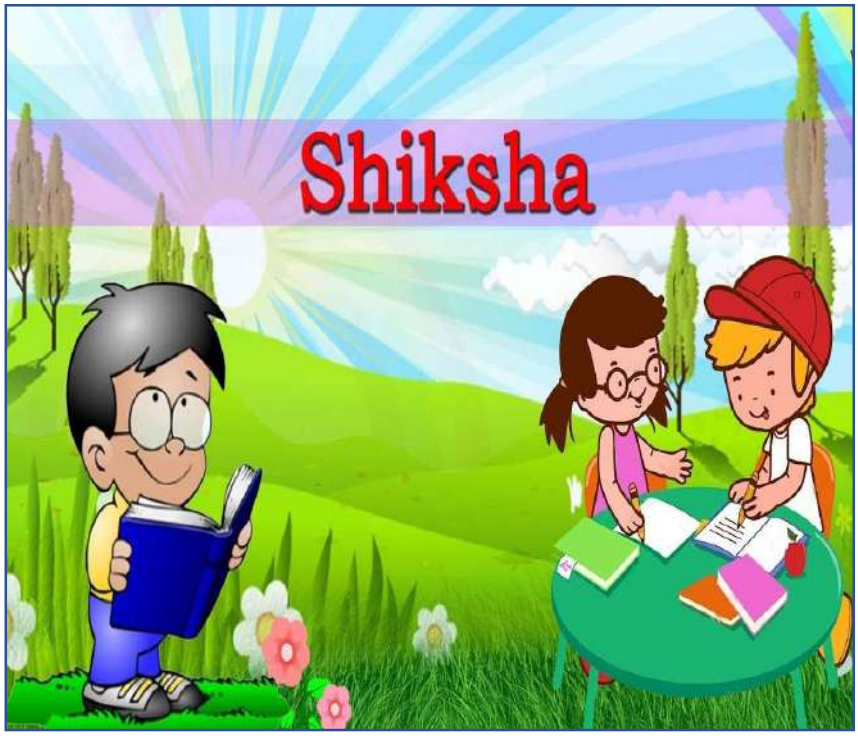


जागो भैया बहना जागो
नई शिक्षा नीति आयी है,
सारे भेदभावों को मिटाकर
गुणवत्ता युक्त शिक्षा लायी है.

हम सबके बच्चे अब तो
स्कूलों में पढ़ने जाएँगे,
खेल-खेल में शिक्षा पाकर
राष्ट्र उत्थान कर पाएँगे.

मिड डे पर भोजन करके
सुपोषित हो जाना है,
भारत से अज्ञानता और
कुपोषण को दूर भगाना है.

अब तो यही संकल्प हमारा
नवसृजन व नवाचार अपनाएँगे,
शाला त्यागी और प्रवासी बच्चों को
फिर शाला में लाएँगे.

# मिसाल बनो मजबूरी नही

रचनाकार- नीरज त्यागी, ग़ाज़ियाबाद

एक शहर की एक बड़ी सोसाइटी को सरकारी सोसाइटी कहा जाता था.यहाँ रहने वाले सभी लोग या तो बड़े-बड़े सरकारी पदों पर काम करने वाले थे या सरकारी नौकरियों से सेवानिवृत्त हुए व्यक्ति थे.

सोसाइटी में सुबह-सुबह ही कूड़ा बीनने वाले बच्चे आया करते थे और कुछ ऐसे भी बच्चे आते थे जो वहाँ रहने वाले लोगों से भीख माँगकर अपना पेट भरते थे.

लगभग सभी घरों से उन बच्चों को कुछ न कुछ खाने को मिल ही जाता था. लेकिन वर्माजी के घर से कभी किसी भी बच्चे को कुछ नही दिया जाता था. वर्माजी ऐसे बच्चों को देख कर भी अनदेखा कर देते थे.सोसाइटी के लोगों के बीच इसी वजह से उनके लिए बातें भी होती थीं कि इतना पैसा होने के बाद भी वर्माजी किसी गरीब बच्चे को कुछ भी नहीं देते. बल्कि वे अपनी कोठी के सामने दूसरे प्लॉट में एक और बड़ी सी बिल्डिंग बनाने में ही लगे हैं.

लोंगो की बातों को अनसुना करते हुए वर्माजी ने अपने दूसरे प्लॉट पर एक भव्य बिल्डिंग का निर्माण पूरा किया.

पास पड़ोस के लोग इस सोच में थे कि अकेले वर्माजी दो-दो मकानों का क्या करेंगे. वर्माजी के दोनों बेटे विदेश में नौकरी करते हैं. पूरा मकान तैयार होने के बाद एक दिन लोगों ने देखा की वर्माजी ने अपने दूसरे मकान में बच्चों के लिए एक स्कूल की स्थापना की और स्कूल का नाम रखा" सबका स्कूल".

वर्मा जी ने सोसाइटी के सभी निवासियों को बुलाया और अपने स्कूल के बारे में बताते हुए कहा कि हम सभी पैसों के मामले में संपन्न है.इन सभी गरीब बच्चों के लिए जो सुबह कूड़ा उठाते हैं या और भी ऐसे गरीब बच्चे जो पढ़ नहीं पाते, उनके लिए मैं इस स्कूल को बिल्कुल प्राइवेट स्कूल की तरह बनाना चाहता हूँ .इस काम में मुझे आप सभी का सहयोग चाहिए.यहाँ पर जो भी अध्यापक अध्यापिका पढ़ाने के लिए आएँगे उनकी तनख्वाह की जिम्मेदारी अगर हम सभी लोग मिलकर ले लें तो इन सभी बच्चो का भविष्य सुधर जाएगा. वर्मा जी के इस प्रस्ताव से सभी लोग सहमत हो गए.अब सभी लोगों के मन से वर्मा जी के लिए गलतफहमी दूर हो चुकी थी.वर्मा जी ने आसपास के सभी लोगों के लिए एक बहुत बड़ी मिसाल प्रस्तुत की.

देश के गरीब बच्चों को भीख में खाना देने से ही काम नहीं चलेगा.अगर उनकी गरीबी दूर करनी है तो उन्हें पढ़ा लिखा कर इस काबिल बनाना होगा कि वह आगे कभी भी भीख ना माँगें.वर्मा जी की बात से सभी सहमत थे और सभी ने इस स्कूल के लिए अपनी ओर से सहयोग दिया. इस प्रकार सबका स्कूल सबके सहयोग से प्रारंभ हो गया.

# खेत और खलिहानों से

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

सुरभित होती सौंधी मिट्टी,
अपनें सभी किसानों से.
जीवन कौशल सीखा मैंने,
खेत और खलिहानों से.

खेतों पर जो फसल उगाते,
ऐसी कृषक कहानी है.
कभी नहीं रुकते वह साथी,
जब तक दाना पानी है.

कर्म सतत ही जो करते हैं,
उनकी यहीं निशानी है.
बंजर भू को सुरभित करने,
जिसने मन में ठानी हैं.

दम्भ कपट छल भेद नही,
रहता इनके स्वभावों से.
जीवन कौशल सीखा मैंने,
खेत और खलिहानों से.

# आओ कान्हा

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

मेरे देश की हालात बिगड़ रही,
एक बार तो आओ कान्हा.
हम सब तुम्हें पुकार रहें,
अपनी झलक दिखाओ कान्हा.

नहीं पूछते माखन-मिश्री,
गऊ माता है लाचार यहाँ.
मुरली की धुन सुरीली,
सुनने को करते मनुहार यहाँ.

लूटपाट, यौनाचार और
रिश्वतखोरी है व्याप्त जहाँ.
दुर्योधन, शकुनि, दुशासन,
जैसे कपटी शैतान बसे यहाँ

तेरे भक्तजन डरे सहमे से,
मानो नाग का घेरा हो.
आँखों पर बाँधे न्याय की पट्टी,
बन बैठी, मानो गांधारी हो.

जा पहुँचा है पाप चरम पर,
सत्ताधीस मद में चूर यहाँ.
गरीब जनता महँगाई से ,
मरने को आतुर जहाँ.

एकबार आकर कान्हा,
सच्ची राह बता जाओ.
जनता अबला हो बैठी,
जीवन रक्षा कर जाओ.

# हमारे प्रेरणास्रोत - सावित्री बाई फुले

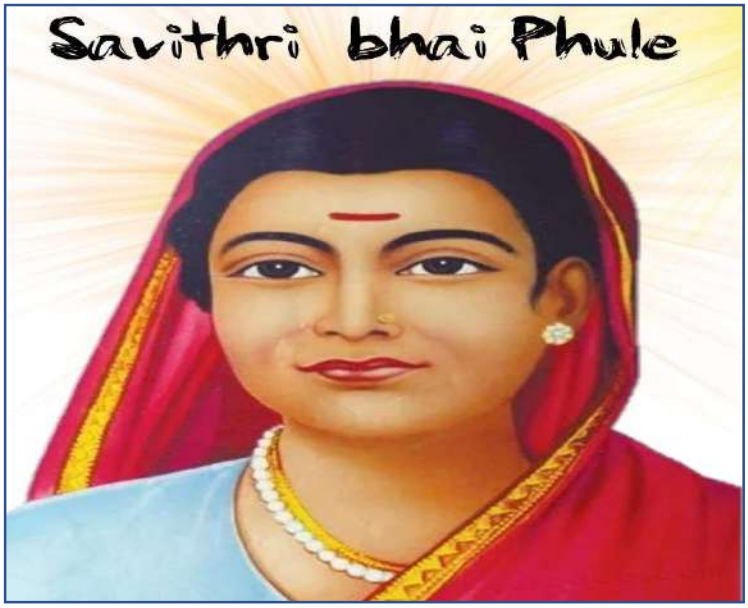


हैलो बच्चो,

आज हम १९ वीं सदी की एक ऐसी महिला के बारे में बात करेंगे जिन्होंने उस दौर में महिला सशक्तिकरण, महिलाओं के मौलिक अधिकारों और उनकी शिक्षा के लिए काम किया. बच्चो, आज हम आपको सावित्री बाई फुले के बारे में बताने वाले हैं.

सावित्री बाई फुले का जन्म ३ जनवरी १८३१ को महाराष्ट्र के सतारा ज़िले में एक किसान परिवार में हुआ. उस समय लड़कियों की शिक्षा पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता था. लड़कियों का विवाह बचपन में ही कर दिया जाता था. सावित्री बाई का विवाह भी ९ वर्ष की अवस्था में ज्योतिबा फुले से कर दिया गया. विवाह के बाद ज्योतिबा ने ही सावित्री बाई को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया क्योंकि वे स्वयं भी महिलाओं की शिक्षा के प्रबल समर्थक थे. ज्योतिबा ने सावित्री बाई को दो साल तक घर पर ही आरम्भिक शिक्षा दी. उसके बाद सावित्री बाई ने अहमदनगर से दो साल का शिक्षक प्रशिक्षण लिया और इस तरह वे एक शिक्षिका बनीं.

सावित्री बाई और उनके पति ने मिलकर सन १८४८ में पहला गर्ल्स स्कूल पुणे में खोला. एक महिला का शिक्षित होना कुछ दक़ियानूसी लोगों को रास नहीं आया. सावित्री बाई जब स्कूल पढ़ाने जातीं तो उन्हें कुछ लोग पत्थर मारते, कुछ अपनी छतों से उनके ऊपर कूड़ा फेंकते. इन सबसे सावित्रीबाई की हिम्मत कम नहीं हुई. वे एक साड़ी अपने थैले में लेकर जातीं और स्कूल जाकर कपड़े बदल लेतीं.

समाज के विरोध के बाद भी उन्होंने क़रीब १८स्कूल खोले. उनके स्कूलों की विशेषता थी, वहाँ का पाठ्यक्रम. उनके स्कूलों में गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान पढ़ाया जाता था. उनके पढ़ाने का तरीक़ा इतना अच्छा था कि अन्य स्कूलों में पढ़ने वाले लड़कों की अपेक्षा वहाँ पढ़ने वाली लड़कियों के परीक्षा परिणाम ज़्यादा अच्छे आते थे.

सावित्री बाई का मानना था कि एक माँ अपने बच्चे को जितनी अच्छी तरह से पढ़ा सकती है कोई और उस तरह नहीं पढ़ा सकता इसीलिए महिलाओं का शिक्षित होना बहुत ज़रूरी है.

सावित्री बाई फुले ने अपना सम्पूर्ण जीवन स्त्रियों को शिक्षा देने, उन्हें उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने और सभी तरह से उनका आत्मबल बढ़ाने के लिए समर्पित कर दिया.विधवा स्त्रियों का फिर से विवाह कराना, छुआछूत का भाव दूर करना और समाज की शोषित उपेक्षित स्त्रियों को शिक्षा का संबल देने का काम वे जीवन पर्यन्त करती रहीं. यह सब उन्होंने उन परिस्थितियों में किया जब एक स्त्री के लिए स्वयं शिक्षा प्राप्त करना भी बहुत कठिन हुआ करता था.

उनके बारे में कहा जाता है कि वे भारत की पहली महिला शिक्षिका थीं. वे मराठी में कविताएं भी लिखती थीं. उन्हें आधुनिक मराठी काव्य का अग्रदूत कहा जाता है.उनका जीवन महान और प्रेरणाप्रद है. आने वाली पीढ़ियाँ उनसे शक्ति और प्रेरणा पाती रहेंगी.

# कोरोना महामारी

रचनाकार- अल्का राठौर

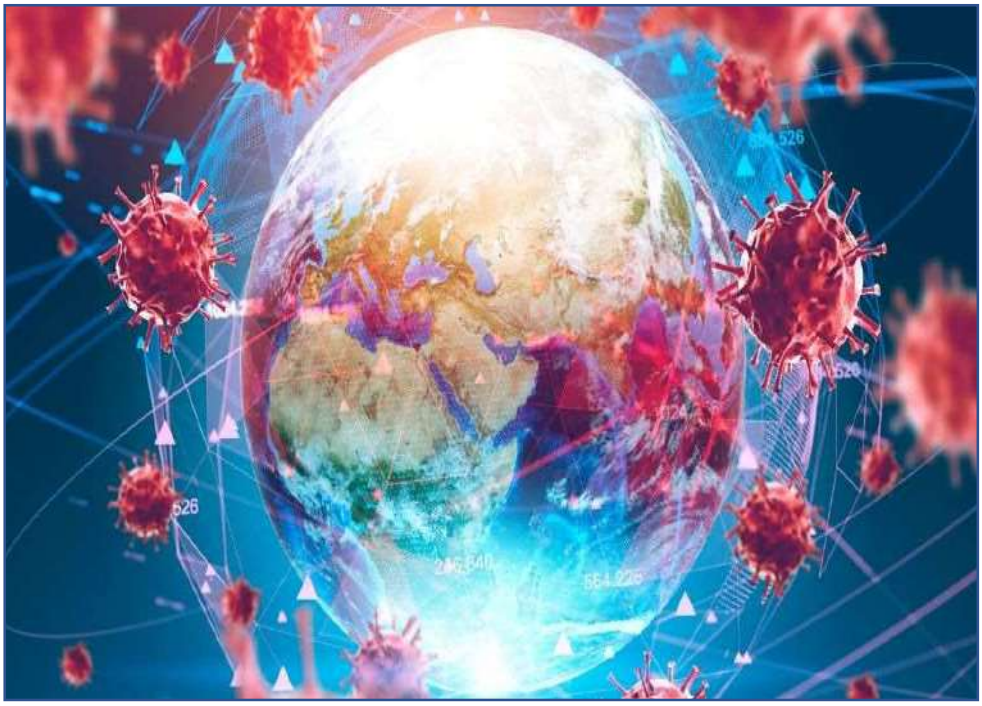

कोरोना महामारी ने लोगो का कम रोका है,
प्रकृति तो अपना काम किए जा रही है,
लॉकडाउन ने तो हमें घर में बाँध रखा है,
सलिल नदी, निश्छल हवा तो बहे जा रही है

होली गयी, राखी आई,
चहुँ ओर हरियाली छाई.
फिका हुआ हर त्योहार,
कम हुआ प्रेम व्यवहार.

मास्क ने सबकी मुस्कान छुपाई,
सोशल डिस्टेंसिग ने दूरियाँ बढ़ाई.
अब तो वैक्सिन का है इंतज़ार,
सब कुछ ठीक करने का है ऐतबार!!

फिर प्रकृति के साथ मुस्कुराये हर चेहरा,
अब खुशहाली हरियाली छाय हर सेहरा!
मुस्कुराकर करें हम नये वर्ष का स्वागत,
अब फिर ना हो किसी महामारी से आहत!!

# माँ की याद

रचनाकार- सतीश चन्द्र भगत, दरभंगा

छोटा परिवार सुखी परिवार होता है. जीवन की गाड़ी अच्छी तरह चलती है. परंतु कब तक? जब तक सांसारिक गतिविधियाँ सही रूप से चलती रहें.

देवेन्द्र की ऐसी सोच को जानकर उसकी माँ ने कहा-" ऐसा नहीं है बेटा! मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है.उसे घर- परिवार के अन्य सदस्यों और अड़ोस-पड़ोस के लोगों के साथ मिलजुल कर रहने में ही खुशी मिलती है."

देवेन्द्र की शादी हो गई.शादी के दो वर्ष बाद एक पुत्र सूरज और अगले तीन वर्ष बाद एक पुत्री सीमा का जन्म हुआ.

देवेन्द्र की माँ उसकी पत्नी शालिनी और उनके बच्चों का जीवन हँसी-खुशी में बीत रहा था.

समय बीतता गया. देवेन्द्र का बेटा सूरज इंजीनियर बन गया और बेटी सीमा की भी पढ़ाई पूरी हो गई.सीमा की शादी नजदीक के ही गाँव नवादा में एक मध्यम परिवार में हो गई.

सूरज की शादी भी बैंक में नौकरी करने वाली एक लड़की मृदुला से हो गई. देवेन्द्र की माँ गाँव के मकान में ही अकेले रह गईं. कुछ समय बाद देवेन्द्र की माँ की इच्छा हुई कि बेटे- पतोहू और पोते सूरज के साथ ही रहूँ. वह देवेन्द्र के दिल्ली निवास पर पहुँच गईं.

देवेन्द्र की पत्नी शालिनी अपनी सास की सेवा करने में कोताही नहीं करती परंतु पोते सूरज की पत्नी मृदुला अपनी बैंक की नौकरी से इतना थक जाती थी कि घर के कामों में अधिक समय नहीं दे पाती थी. खाना बनाने का काम भी शालिनी ही करती थी.

देवेन्द्र की माँ का वहाँ मन नहीं लगा. वह अपने गाँव के घर वापस आ गईं.

माँ के गाँव लौटने के दो दिन बाद ही देवेन्द्र का एक्सीडेंट हो गया. अस्पताल में बेड पर पड़ा देवेन्द्र कराहते हुए अपनी माँ की याद करता रहा. एक महीने तक देवेन्द्र अस्पताल में जीवन और मौत के बीच झूलता रहा: उसके साथ केवल उसकी पत्नी शालिनी ही थी. माँ की याद में ही देवेन्द्र के प्राण अटके हुए थे.

वह अपने बेटे सूरज से बार-बार कहता कि गाँव से माँ को बुलवा लो. बहुत कष्ट सहते हुए अंततः माँ-माँ रटते हुए देवेन्द्र की मृत्यु हो गई.

और इधर गाँव में माँ को जब सूचना मिली कि दिल्ली में माँ की याद करते हुए देवेन्द्र की मृत्यु हो गई तो सदमे के कारण देवेन्द्र की माँ की भी मृत्यु हो गई.

परिस्थितियों कुछ ऐसी बनीं कि परिवार का कोई भी सदस्य देवेन्द्र की माँ के दाह-संस्कार में शामिल नहीं हो पाया.उनका अंतिम संस्कार भी गाँव के लोगों द्वारा ही किया गया. परिवार के सदस्यों के होते हुए भी पास पड़ोस के लोग ही काम आए. आखिरकार माँ का कहना ही सत्य सिद्ध हुआ.

# भालू की बगिया

रचनाकार- डॉ.त्रिलोकी सिंह

भालू की बगिया में एक,
आया बंदर काला.
उस उत्पाती ने बगिया को,
तहस-नहस कर डाला..

गुस्से में भालू ने जाकर,
उसकी रपट लिखाई.
गिरफ्तार करने बंदर को,
टीम शेर की आई..

गिरफ्तार करके बंदर को,
जंगल में ले आए.
चीते जी ने उस बंदर पर,
डंडे चार जमाए..

दूर हुई उसकी बदमाशी,
अकल ठिकाने आई.
बंदरिया ने अस्पताल में,
उसकी दवा कराई..

बच्चो! कभी नहीं करना तुम,
बंदर जैसी शैतानी.
मेहनत से तुम पढ़ना-लिखना,
पढ़ना गीत-कहानी..

# गणेश वंदना

रचनाकार-नीरज त्यागी

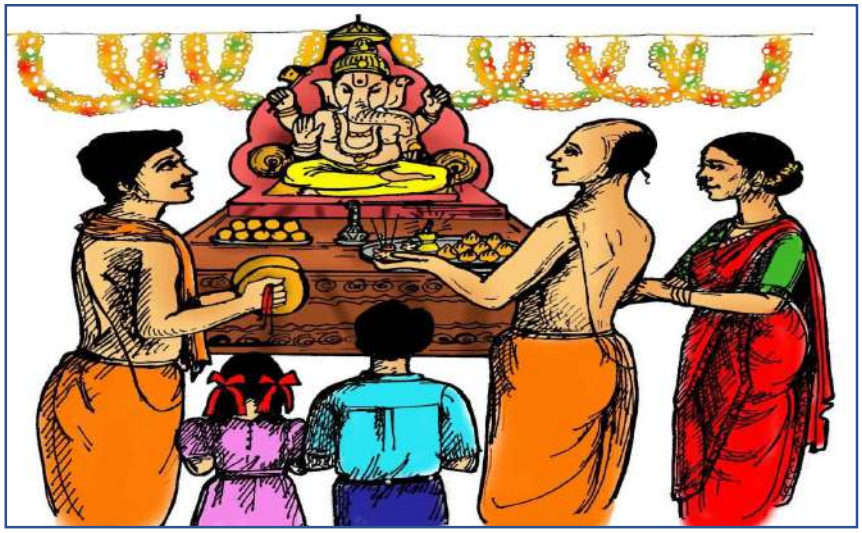

हे गौरी पुत्र गजानन,
तुम्हें हैं शत्-शत् नमन.
माता गौरी, पिता महादेव,
रिद्धि-सिद्धि के हो तुम देव.
पान, सुमन तुम्हें हैं अर्पण,
आओ स्वीकार करो वंदन..

हे गौरी पुत्र गजानन,
बाँझन को तुम देते सुत हो,
निर्धन को करते धनवान.
मूषक में होकर सवार,
करते हो तुम जग विचरण.

हे गौरी पुत्र गजानन ,
नित्य पूजन करें जो तुमको
मन वांछित फल देते उनको.
हे सिद्ध विनायक शिवनंदन.

हे गौरी पुत्र गजानन,
अंधन को तुम ज्योति देते,
कोढ़िन को सुंदर तन देते,
भक्त जनों के तुम रखवारे,
हे लंबोदर विघ्न हरन.

हे गौरी पुत्र गजानन,
तुम्हें शत् शत् नमन.

# कोरोना - सब जगह है रोना

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

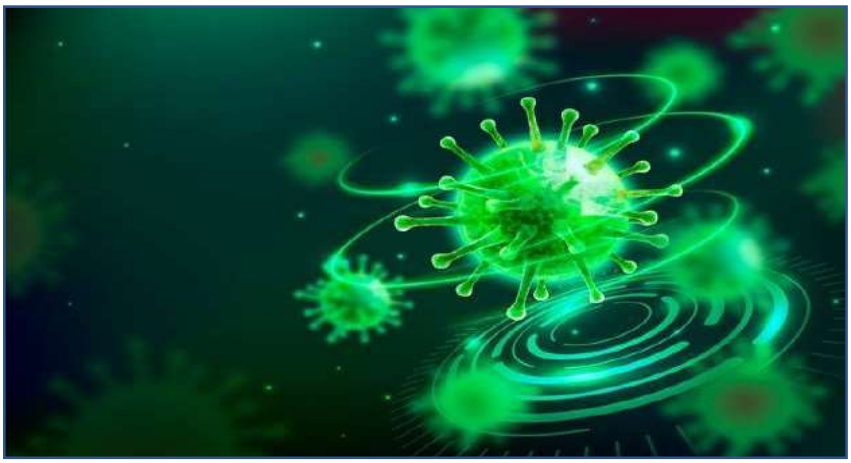

आजकल देश विदेश में कोरोना वायरस की ही चर्चा है.कोरोना वायरस चीन से निकल कर दुनिया के 122 देशों में फैल गया है.इस वायरस के प्रकोप से दुनिया भर में लाखों लोग अपनी जान गँवा चुके हैं. विश्व स्वास्थ्य संगठन {WHO}इसे महामारी घोषित कर चुका है.

कोरोना वायरस एक सूक्ष्म वायरस है जो मनुष्य के शरीर मे पहुंच कर अपना प्रभाव दिखाता है. यह वायरस चीन के वुहान शहर से शुरू हुआ है.

कोरोना वायरस के लक्षण सर्दी ,खाँसी , बुखार , गले मे खराश , साँस लेने में तकलीफ होना आदि हैं.यह बीमारी एक दूसरे में बहुत तेजी से फैलती है. अगर किसी को सर्दी , खाँसी हो या बुखार आये तो तुरंत डॉक्टर के पास जाना चाहिये.

कोरोना वायरस से बचने के उपाय -

1. हाथ, पैर, मुँह को अच्छी तरह से साबुन से धोना चाहिए.
2. खाँसते या छींकते समय मुँह रुमाल से ढँकना चाहिये.
3. भीड़ भाड़ वाली जगहों पर नहीं जाना चाहिये.

ये सभी सावधानियाँ सभी को रखना चाहिये. सावधानी ही इस वायरस के संक्रमण से बचने का प्रमुख उपाय है.

# वीर सपूत

रचनाकार- महेत्तर लाल देवांगन

हे! भारत के वीर सपूत
तुझे शत्-शत् नमन,
तेरे बलिदान पर
न्यौछावर है तन- मन- धन.
तेरी वीरता को देख आज
वसुंधरा भी रोई,
तुझे श्रद्धांजली देने
बादल भी नैन भिगोए
चाहती हूँ अगले जन्म में भी
बेटा तुझे पाऊँ,
वीर पुत्रों की माता बन
गर्वित मैं बन जाऊँ,
धरती माँ के रक्षा खातिर
बार-बार वो शीश कटाते हैं.
सीमा की रक्षा खातिर

शत्रुओं से लड़
अपना फर्ज निभाते हैं,
देकर अपने प्राण
माँ का कर्ज चुकाया है
अपने संग संग तूने
देश का मान बढ़ाया है
हे! भारत के वीर सपूत,
तुझे शत् शत् नमन
तुझे शत् शत् नमन..

# मेरा भारत देश

रचनाकार- प्रेमचन्द साव "प्रेम"

पुण्य तिरंगा से हमें, मिलती है पहचान.
तीन रंग मन में भरे, देशभक्ति का भान..

भर देता मन प्राण में, अतुलित पावन गर्व.
जब आता है देश में, आजादी का पर्व..

लहर-लहर लहरा रहा, गर्वित हो आकाश.
आज तिरंगा भर रहा, मन में परम प्रकाश..

केसरिया बलिदान का, सत्य शांति का श्वेत.
हरा प्रकृति प्रतीक जहाँ, उर्वर पोषित खेत..

चक्र प्रतीक है धर्म का, सद्भावों के संग.
शोभित निज ध्वज को करे, तीनों पावन रंग..

नित-नित यह झण्डा भरे, तन-मन में विश्वास.
संप्रभुता का है सखा, जन-जन को आभास..

पुण्य तिरंगा दे रहा, जग को शुभ संदेश.
प्रेम भाव ही बाँटता, अपना भारत देश..

केसर की घाटी जहाँ, नित ही बाँटें प्यार.
और हिमालय से बहे, पावन गंगा धार..

वीरों की है वीरता, ज्ञानी का शुभ ज्ञान.
परिपाटी पावन जहाँ, भारत देश महान..

सर्वप्रथम निज देश है, बाकी सब कुछ बाद.
आजादी के पर्व को, रखो "प्रेम" नित याद..

# जल संरक्षण

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित'

सुनव सबोझन,
गुनव सबोझन.
बादर बरसे,
जिनगी हरसे..

नँदिया तरिया,
भाँठा परिया.
खेत-खार मा,
मुँही-टार मा..

पानी-पानी,
अति हलकानी.
कब ये खँगथे,
कब ये नँगते..

पानी छेंकव,
झन तो फेंकव.
नइ पछताबे,
जल ल बचाबे..

जतन करव अब,
लगन धरव सब.
सुमता सुग्घर,
रद्दा उज्जर..

जल संरक्षण,
तन-मन अर्पण.
जिनगी हाँसय,
जल जब बाँचय..

# चंदा मामा

रचनाकार- वृंदा पंचभाई

चंदा मामा, चंदा मामा
प्यारे-प्यारे, चंदा मामा
पास नहीं मेरे आते हो
दूर बहुत तुम रहते हो.

अंगुल भर कभी होते हो
कभी आधी रोटी से दिखते
कभी गोल माँ की बिंदी सी
रोज रूप बदला करते हो.

माँ तुम्हारी पूजा करती
सजा थाली चंदन, रोली की
आशाओं के दीप जला कर
आरती नित उतारा करती.

मंगल कामना मन में रखती
तुमको जल भर अर्घ्य चढ़ाती
चौथ पुन्नी उपवास भी करती
रहे सौभाग्य कुशल माँगती.

भोग लगाती पकवानों के
मालपुआ, खीर, मिठाई
चंदा मामा संग में तुम्हारे
मुझको भी ये मिल जाते हैं.

भाईदूज पर चंदा मामा
हमको थोड़ा सताते हो
पहले तुम्हारी पूजा होती
फिर नम्बर मेरा लगाते हो.

ईद, करवा चौथ, दिवाली
तुम बिन ये सब है अधूरी
यात्रा तुम्हरी अमावस पुन्नी
निस दिन यूँही चलती रहती.

# हरेली

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

हरेली त्योहार अच्छी फसल की कामना के साथ प्रकृति की पूजा का पर्व है. इसे छत्तीसगढ़ के किसानों का सबसे बड़ा और प्रथम पर्व माना जाता है. हरेली को सावन के कृष्णपक्ष की अमावस्या को मनाया जाता है. इस पर्व की धूम गाँव के साथ-साथ शहरों में भी नज़र आती है.

इस पर्व को किसान बड़ी धूमधाम से मनाते हैं. गाँव के बच्चे गेड़ी चढ़ते हैं, वहीं गेड़ी दौड़ व नृत्य आदि का भी जगह- जगह आयोजन होता है. हरेली के दिन गाँव में युवाओं की टोली नारियल फेंक कर नारियल जीतने का खेल खेलती है. हरेली पर किसान अपने कुल देवी-देवताओं और ग्राम देवता की पूजा करते हैं. वे नागर, गैंती, कुदाली, फावड़ा समेत कृषि के काम आने वाले सभी तरह के औजारों की साफ-सफाई कर उन्हें एक स्थान पर रखते हैं और उनकी पूजा-अर्चना करते हैं. इस अवसर पर सभी घरों में गुड़ का चीला बनाया जाता है. हरेली के दिन ग्रामीण क्षेत्रों में सुबह से शाम तक उत्सव जैसी धूम रहती है. आज के दिन यादव समाज के लोग बगरंडा की पत्तियाँ इकट्ठी कर गाय, भैंस व बैलों को बीमारी से बचाव की दृष्टि से खिलाते हैं. कुल मिलाकर अच्छी फसल की कामना के साथ प्रकृति की पूजा ही इस पर्व की विशेषता है.

# नादान बच्चा

रचनाकार- नंदिनी राजपूत

मैं हूँ प्राइमरी क्लास का बच्चा,
मेरा दिल है 100% सच्चा.
मुझको पढ़ना लगता अच्छा,
पर मैं हूँ नादान बच्चा..

मम्मी का रोज सुबह उठाना,
ठंडे पानी से नहलाना.
मुझको रोना आता है
रोज जल्दी स्कूल जाना..

स्कूल जब जाता हूँ,
बहुत खुश हो जाता हूँ.
दोस्तों के साथ मस्ती करते हुए,
मैडम को बहुत सताता हूँ..

मैडम गा कर हमें पढ़ाती.
हम सबको वो खूब लुभाती
हम बच्चों के साथ- साथ,
वे खुद बच्ची बन जाती.

साफ- सुथरे रखना सिखाती
बड़ो का आदर करना बतलाती
माँ के जैसे प्यारी डाँट लगाकर,
अनुशासन का पाठ पढ़ाती

जब क्लास वर्क नहीं करता हूँ,
वो मुझको डाँट लगाती हैं.
मुझे अच्छा नहीं लगता,
जब वो मुझसे रूठ जाती हैं..

लंच टाइम जब होता है,
रोज प्लेट चेक करती है.
लंच फिनिश नहीं करने पर,
हम सब को गुस्सा वो करती हैं..

माँ के जैसे दुलार करके,
हमारा ख्याल रखती हैं.
कैसे बताऊँ हमारी मैम,
हमसे कितना प्यार करती हैं..

घर जाने से पहले,
हमको गृहकार्य देती हैं.
घर से पढ़कर आए कि नहीं
यह खबर भी रोज़ लेती है

सुबह से लेकर शाम तक की,
यह है मेरी कहानी.
मैं हूँ प्राइमरी स्कूल का बच्चा,
यही है मेरी जिंदगानी..

# मन की आवाज़

रचनाकार- सन्तोष कुमार तारक

एक डोकरी बड़े जान मोटरी धर के जात रहिस. रेंगत- रेंगत वो ह थक गए. तब वो हर एक झन घुड़सवार ला देख के कहिस, "ये बेटा एकठन बात हे सुन तो."

घुड़सवार हर रूक के पूछिस, "का बात ये दाई."

डोकरी ह किहिस, "मोला वो गांव जाना हे. मैं हर थक गे हौं. ये मोटरी हर अब्बड़ गरू हे. येला न सकत हौ, तैं हर उही डाहर जावत हस, येला लेग जा, मैं हर रेंगत-रेंगत आवत हौं, मोला रेंगे बर हरू होही."

घुड़सवार हर कहिस, "मैं हर घोड़ा म गांव जल्दी पहुंच जाहू, त तोला देखत थोरी रहहूँ." ये कहिके घुड़सवार हल चल दिस.

थोर आगू जाय के बाद घुड़सवार के मन म बिचार आइस, डोकरी के मोटरी मा कीमती जीनिस होही. ये सोच के ओहर डोकरी कर आ के कहिस. "दे दाई, तोर मोटरी ल, धर लेथो."

डोकरी ह कहिस- “अब मैं मोंटरी ल नइ देंव."

घुड़सवार हर कहिस, "काबर अभी तो लेगे बर कहत रहेस."

तब डोकरी हर कहिस, “तोर मन म जउन बिचार आइस, ओकर उल्टा बिचार मोरो मन म आइस." विचार आइस ? हाँ.....

# बचपन के दिन

रचनाकार- कु. अदिति साहू, कक्षा नवमीं, जवाहर नवोदय विद्यालय बसदेई

बचपन के वो भी क्या दिन हुआ करते थे
जब चाक मिट्टी खाया करते थे.
मम्मी की डांट का असर ना होने पर
दूर उस बाड़ी में निकाल दिए जाते थे.
दादी जी का प्यार पाकर चुपके
से आकर सो जाया करते थे
बचपन के वह भी क्या दिन हुआ करते थे.

बहन से झगड़ा कर पापा के पास
आ कर छिप जाया करते थे
मम्मी की डांट लगाने पर हमेशा
दादाजी बचाया करते थे.
बचपन के वो भी क्या दिन हुआ करते थे.

भाई की चॉकलेट चुराकर
बहन के साथ खाया करते थे.
पढ़ाई के नाम से कोसों दूर भागा करते थे
बचपन के वह भी क्या दिन हुआ करते थे.

क्लास में लास्ट बेंच पर बैठकर
चुपके चुपके टिफिन खाया करते थे
टीचर से पकड़े जाने पर
सारे दोस्त मिल मार खाया करते थे
बचपन के वो भी क्या दिन हुआ करते थे.

# मुंशी प्रेमचंद की कथा- साहित्य में सामाजिक चिंतन की झलक विषय पर वर्चुअल साहित्यिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन

रचनाकार- हेमंत खूंटे

कथासम्राट मुंशी प्रेमचंद की 140 वी जयंती के विशेष अवसर पर श्री एन.पी. स्मृति फाउंडेशन पिथौरा द्वारा वर्चुअल साहित्यिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसका विषय था मुंशी प्रेमचंद की कथा साहित्य में सामाजिक चिंतन की झलक. कार्यक्रम का उद्घाटन कक्षा ग्यारहवीं की छात्रा तीस्ता खुटे ने मुंशी प्रेमचंद की छायाचित्र पर पुष्प अर्पण कर उनके जीवन परिचय पर आधारित साहित्यिक रचनाओं पर आलेख पठन किया.

कार्यक्रम की अध्यक्षता मंदसौर के संपादक नंद किशोर जोशी ने की. कार्यक्रम में बीजू पटनायक, हेमन्त खुटे, शैलेंद्र नायक, तबस्सुम, यशवंत चौधरी, मेघलत बंजारे ने अपने विचारों को साझा किया.

कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए फाउंडेशन के फाउंडर एवं शिक्षाविद् बीजू पटनायक ने कहा कि प्रेमचंद कालजयी लेखक थे. उनका व्यक्तित्व और कृतित्व साहित्य जगत के लिए अनमोल धरोहर है. मुंशी प्रेमचंद इसलिए महान् है कि वह समय के साथ सत्य को उदघाटित करते थे और उस समय का सत्य उनका सामाजिक चिंतन है जो मानवता और मानवीय मूल्य शिक्षाओं का एक दृष्टांत है. प्रेमचंद के लेखन में भारतीय समाज खासतौर पर ग्रामीण समाज का चित्रण

है. प्रेमचंद के साहित्य का मूल उद्देश्य सामाजिक संरचना में सामाजिक चेतना के जरिए समाज में सुंदर बदलाव लाना है. वे उच्च कोटि के विचारक ही नहीं अपितु समाज सुधारक और प्रखर सामाजिक चिंतक भी थे.

शासकीय उच्च प्रथमिक शाला कसहीबाहरा में कार्यरत शिक्षक हेमन्त खुटे ने कहा कि प्रेमचंद ने अपने युग का प्रतिनिधित्व किया है. मुंशी प्रेमचंद का साहित्य सामाजिक चिंतन के लिए ही जाना जाता है. उनका यथार्थवादी दृष्टिकोण सामाजिक पृष्ठभूमि पर आधारित रहा है. इसलिए उनके लेखन कार्य में पर्याप्त विविधता मौजूद है. मुंशी प्रेमचंद ने शोषण, अन्याय, विषमता के विरुद्ध आवाज उठायी और केवल उसे ही अपनी कलम का विषय बनाकर रेखंकित किया है. कर्मभूमि, प्रेमाश्रम, गबन, गोदान जैसी रचनाएं तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था का सुंदर चित्रण प्रस्तुत करती है. प्रेमचंद ने गोदान में लिखा है अन्याय ने मनुष्य जाति में विद्रोह की भावना उत्पन्न करके समाज का बड़ा उपकार किया है.

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय केना (सराईपाली) के व्याख्याता शैलेंद्र कुमार नायक ने कहा कि प्रेमचंद का सपना हर तरह कि विषमता, सामाजिक कुरीतियों और संप्रदायिक वैमनस्य से परे होकर एक स्वस्थ समाज का निर्माण करना था जिसमें समता और सदभावना सर्वोपरि है. वे इस तथ्य को भलीभांति जानते थे कि भारतीय समाज में विद्यमान सामाजिक बुराइयों को दूर करके ही राष्ट्रीयता की भावना को पोषित कर सकते हैं. उन्होंने कहा कि हम ऐसे राष्ट्रीयता की परिकल्पना कर रहे हैं जिसमें जन्मगत वर्ण व्यवस्था और जाति प्रथा की गंध नहीं होगी.

शासकीय मिडिल स्कूल निमोरा (रायपुर) में पदस्थ शिक्षिका मेघलता बंजारे ने कहा कि मुंशी प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में सामाजिक कुरीतियों का डटकर विरोध किया है. उनकी कृतियां आज भी प्रासंगिक है. उन्होंने जिन चरित्रों का चित्रण किया है वह आज की वास्तविकता से परिपूर्ण है. ग्रामीण जीवन की यथार्थ चित्रण करने में मुंशी प्रेमचंद सिद्धहस्त थे. गोदान उपन्यास के पात्र होरी और धनिया का चरित्र आज भी हमारे लिए अनुकरणीय है. ग्रामीण जीवन में गाय की कितनी महत्ता है इसकी सुंदर झांकी गोदान में दिखाई पड़ती है प्रेमचंद की कृतियों में सामाजिक समस्याओं को उभार कर उसके निराकरण के लिए भी चेष्ठा की गई है. इसलिए उन्होंने चरित्र के माध्यम से उभारने का प्रयास किया है. प्रेमचंद के मन मे व्यथित समाज की पीड़ा थी. यह प्रेमचंद की सामाजिक चिंतन का एक नजरिया है.

शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला लाती (सराईपाली) के नवाचारी शिक्षक यशवंत चौधरी ने कहा कि सामाजिक चेतना के लिए मुंशी प्रेमचंद के साहित्य को जाना जाता है. सामाजिक उत्पीड़न, शारिरिक शोषण, ग्रामीण जीवन की यथार्थता को लेखनी के माध्यम से प्रस्तुत किया है. तत्कालीन समय की सूदखोरी, भ्रष्टाचार, गरीबी, नारी मुक्ति, दलित उत्पीड़न विषय का चयन

कर साहित्य को आधार प्रदान किया है. मुंशी प्रेमचंद के साहित्य में गरीब किसानों, संघर्षशील मजदूरों की त्रासदियों को उजागर किया है. उन्होंने उन लोगों का पक्ष लिया है जो दलित, पीड़ित और शोषित है. गरीबी मनुष्य के जीवन को कितना प्रभावित करती है इसका प्रभाव प्रेमचंद की रचनाओं में मिलता है. प्रेमचंद ने लिखा है खाने और सोने का नाम जीवन नहीं है. जीवन का नाम आगे बढ़ते रहने की लगन है. यह संदेश प्रेमचंद जैसे नामचीन लेखक ही दे सकते हैं.

शासकीय मिडिल स्कूल कसहीबाहारा में पदस्थ शिक्षिका तबस्सुम ने कहा कि प्रेमचंद जी एक ऐसे रचनाकार हुए जिन्होंने निर्भीक होकर सामाजिक व्यवस्था पर चिंतन मनन कर साहित्यिक रचना की. उनकी रचनायें तत्कालीन समस्याओं पर आधारित थी और मानवीय पीड़ा को कलम के माध्यम से उजागर किया है. मुंशी प्रेमचंद ने प्रतिज्ञा उपन्यास में एक विधवा जीवन का मार्मिक चित्रण किया है और वे यह बताना चाहते हैं कि कोई स्त्री स्वयं विधवा नहीं बन जाती है. प्रेमचंद की लेखनी विधवा पर समाज की क्रूरता आँकने में सक्षम है. प्रेमचंद नारी अधिकारों को लेकर भी बहुत सारे सामाजिकगत कार्य किए हैं. नारी उत्थान में जिन लोगों ने उन्हें सहायता पहुंचाई है परोक्ष रूप से उनका आभार भी माना है. उन्होंने महिला समानता और महिला शिक्षा पर जोर देकर उनके उत्थान के लिए भरसक प्रयत्न भी किये है.

# संयुक्त परिवार

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

चूस चूस कर फूलों का रस, मधुमक्खियाँ शहद बनाती हैं.
दादा-दादी उसी तरह, संयुक्त परिवार बनातें हैं..

बच्चों की किलकारी, दादा/दादी का प्यार.
ऐसे ही मधुर है, मेरा सँयुक्त परिवार..

ताऊ जी की कहानी, चाचा जी का दुलार.
मीठे-मीठे शहद की तरह, है हमारा परिवार..

सब मिलकर साथ रहते, करते हँसी ठिठोली.
छोटे-छोटे बच्चों की, मीठी लगती है बोली..

एकांकी जीवन मे रह कर, बच्चे अपनापन भूल रहे.
अपने धुन में मगन हो गये, किसी की नहीं सुन रहें..

संयुक्त परिवार कहाँ हैं पाते, नहीं मिलता सब का साथ.
जिंदगी जीने की चाह में, भूल गयें है बढ़ाना हाथ..

# कृष्णा

रचनाकार- योगेश ध्रुव "भीम"

प्रेम सुधा रस बरसाने वाले,
पुत्र प्रेम के भाव हो कृष्णा.

गोप ग्वाले धेनु चराने सम मूरत,
कालिंदी तीरे बंसी बजाते कृष्णा.

दुखहर्ता पालनकर्ता भूख मिटाते,
दरिद्रता हर सम्मान दिलाते कृष्णा.

सखाओ में सखा तुम सहचर कहाते,
भेद न कर गले लगाते तुम हो कृष्णा.

विषधारी मर्दन कर सम प्रेम भाव के,
जीने का अधिकार दिलाते तुम कृष्णा.

प्रेम की प्रति मूरत राधे संग रास रचाते,
गिरधर गोपाल मीरा दीवानी तुम कृष्णा.

लाज बचाने चिर बढ़ाते द्रोपती के तुम,
भाई-बहन के रिश्ते निभाते तुम कृष्णा.

सारथियों के सारथी बन आगे बढ़ाते तुम,
संकट का सामना करना सीखाते तुम कृष्णा.

योगेश्वर हो तुम ज्ञानेश्वर सभी विधा समाये,
मूक वाचाल लंगड़ा चलना सिखाए तुम कृष्णा.

समरसता की राह बनाते हो गोवर्धन धारी,
मानवता कल्याणकारी समभाव हो कृष्ण मुरारी.

# गुरू शिष्य संबंध

रचनाकार- चानी ऐरी

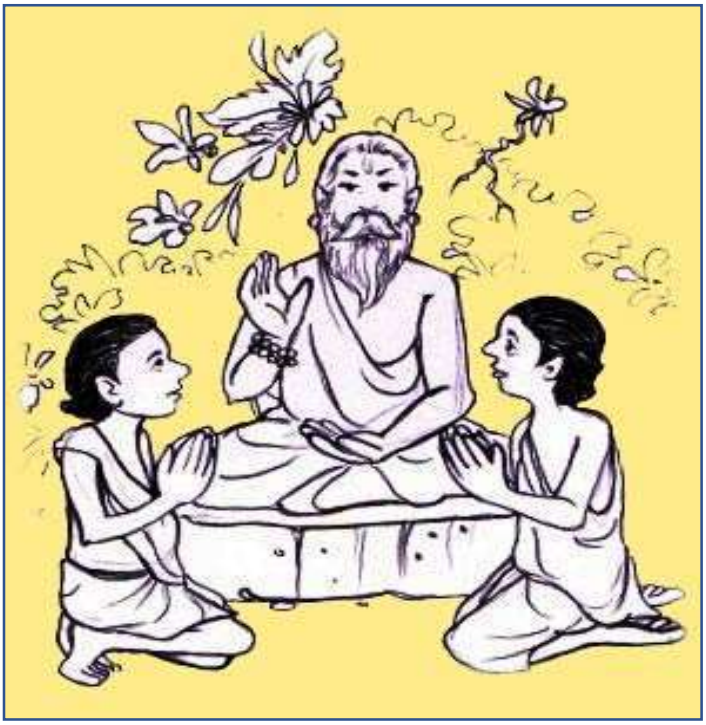

एक बार एक व्यक्ति की उसके बचपन के शिक्षिका से मुलाकात होती है. वह उनके चरण स्पर्श कर अपना परिचय देता है.

वे बड़े प्यार से पुछती हैं, 'अरे वाह! आप मेरे विद्यार्थी रहे है, अभी क्या करते हो, क्या बन गए हो ?'

'मैं भी शिक्षक बन गया हूँ.' वह व्यक्ति बोला और इसकी प्रेरणा मुझे आपसे ही मिली थी,जब मैं 7 वर्ष का था.

उस शिक्षिका को बड़ा आश्चर्य हुआ और वे बोली- "मुझे तो आपकी शक्ल भी याद नहीं आ रही है. उस उम्र में मुझसे कैसी प्रेरणा मिली थी?"

वह व्यक्ति कहने लगा- "शायद आपको याद हो जब मैं चौथी कक्षा में पढ़ता था, तब एक दिन सुबह-सुबह मेरे सहपाठी ने उस दिन उसकी महंगी घड़ी चोरी होने की आपसे शिकायत की थी.

आपने कक्षा का दरवाज़ा बन्द करवाया और सभी बच्चों को कक्षा में पीछे एक साथ लाइन में खड़ा होने को कहा था. फिर आपने सभी बच्चों की जेबें टटोली थीं. मेरे जेब से आपको घड़ी

मिल गई थी जो मैंने चुराई थी. पर चूँकि आपने सभी बच्चों को अपनी आँखें बंद रखने को कहा था तो किसी को पता नहीं चला कि घड़ी मैंने चुराई थी.

महोदया, उस दिन आपने मुझे लज्जा व शर्म से बचा लिया और इस घटना के बाद कभी भी आपने अपने व्यवहार से मुझे यह नहीं लगने दिया कि मैंने एक गलत कार्य किया था.

आपने बगैर कुछ कहे मुझे क्षमा भी कर दिया और दूसरे बच्चे मेरा मज़ाक़ बनाते इससे भी बचा लिया था.

ये सुनकर शिक्षिका बोली, “मुझे भी नहीं पता था बेटा कि वो घड़ी किसने चुराई थी.”

वह व्यक्ति बोला, ”नहीं टीचर, ये कैसे संभव है? आपने स्वयं अपने हाथों से चोरी की गई घड़ी मेरे जेब से निकाली थी.”

शिक्षिका बोली ”बेटा मैं जब सबके जेब चेक कर रही थी, उस समय मैंने कहा था कि सब अपनी आँखें बंद रखेंगे और वही मैंने भी किया मैंने स्वयं भी अपनी आँखे बंद रखी थी.”

**सीख**- यदि हमें किसी की कमजोरी मालूम पड़ जाए तो उसका मज़ाक़ नहीं बनाना चाहिए

# माँ की ममता

रचनाकार- लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

सब कुछ खरीद सके दौलत से,
पर माँ की ममता न कहीं बिके.
अनमोल सदैव ही माँ की ममता,
माँ की ममता न हम खरीद सके.

हम बच्चों से अपने आस लगाए,
वे जरूर बने जैसे श्रवण कुमार.
माँ जिसने हमको है जन्म दिया,
बूढ़ी होने पर हो जाती लाचार..

आधुनिकता के मोह बन्धन में,
माँ के प्रति हम होते लापरवाह.
माँ जैसी ममता कहीं न मिलती
सदियों से इतिहास रहा गवाह..

बूढ़ी माँ के टूटे चश्मे को हम,
बनवाने में लगा देते कई माह.
नई गाड़ी व मोबाइल लेने में,
हम बना लेते तुरंत नई राह..

धन्य ! बहुत वे हैं अच्छे इंसान,
जो वृद्धाश्रम को है खोल दिए.
सम्मान मैं मन से करना चाहूँ,
वृद्धों को आश्रम में शरण दिए..

बेटा कितना भी होता खराब,
माँ देती है आँचल का प्यार.
सब रिश्तों में अनमोल है माँ,
जीवन भर करती हमें दुलार..

# मेरा फ़र्ज

रचनाकार- लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

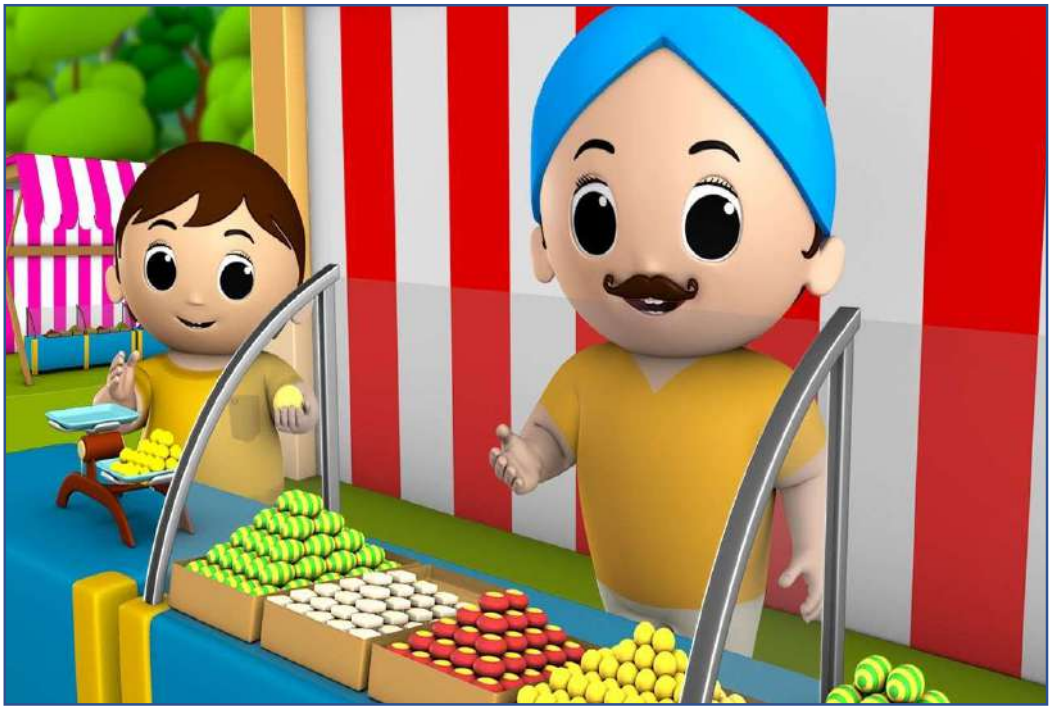

माता पिता ने मुझे जन्म देकर,
अंगुली पकड़ चलना सिखाया.
लालन पालन में कष्ट सहकर,
जीवन के लिए योग्य बनाया..

वो अशक्त और अब वृद्ध हुए,
मैं अब उनका पूर्ण संबल बनूँ.
मेरा अब उनके प्रति कर्तव्य है,
गिन कर उनकी ख़ुशियाँ चुनूँ..

भाई बहिन को ख़ूब प्यार दूँ,
उनकी ख़ुशियों को संवार दूँ.
मित्र को दिखाऊँ सच रास्ते,
गुरू को मैं पूर्ण सत्कार दूँ..

जीवन संगिनी को प्यार कर,
यथोचित मैं उसे सम्मान दूँ.
बच्चों को गुण संस्कार देकर,
भविष्य उनका निखार दूँ..

भारत वासी बन कर मुझे,
महसूस होता बहुत गर्व है.
देश पर कोई कुदृष्टि डालें,
सर काटना मेरा फ़र्ज है..

देश पर दुश्मनों की हो नज़र,
हम एक बन उस पर टूट पड़े.
हिमालय की तरह हो एकता,
सरहद पर जा कर हम अड़े..

देशभक्तों के प्रति कर्तव्य मेरा,
बलिदान को उनके याद करें.
देश की संस्कृति से सीख लें,
ख़ुशियों से अपना जीवन भरें..

# तिरंगा ला फहरावन

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

चलौ तिरंगा ला फहरावन
जय-जय गनतंत्र हम गावन.

कौनो नइ हे अपन बिरान
करन मया, पिरीत देखावन.

सबके मान करन हम भैया
ऊँच-नीच के भेद मिटावन.

चलन नियम मा हम सब बँध के
संविधान के करज चुकावन.

कौनो बैरी गर ललकारे
ओकर मुंड़ी ल हम नवावन.

# सकारात्मक सोच,सदा उन्नति का आधार

रचनाकार- संतोष कुमार कौशिक

एक राज्य में धर्मजीत नाम का राजा रहता था. वह धर्म के मार्ग पर चलते हुए प्रजा का ख्याल रखता था और उसकी प्रजा भी राजा का हमेशा सम्मान करती थी.

राजा धर्मजीत प्रजा के साथ पुत्रवत व्यवहार रखता था. जय और विजय राजा धर्मजीत के जुड़वां पुत्र थे. दोनों ही पढ़े-लिखे, योग्य और आज्ञाकारी थे.

राजा अक्सर सोचता था किस पुत्र को राजा बनाया जाय. एक दिन उनके मन में यह विचार आया कि क्यों न दोनों की परीक्षा ली जाय.

एक दिन जय-विजय को अपने पास बुलाकर राजा ने कहा,"मैं मंदिर जा रहा हूँ पास के बगीचे से फूल तोड़ कर वहाँ ले आना.दोनों पुत्र निकट के बगीचे में चले गए.

जय खाली हाथ लौट आया. जय को आता देख पिता धर्मजीत ने उनसे फूल माँगा.

जय ने कहा-"पिताजी जब भी फूल तोड़ने की कोशिश की, हाथ में कांटा चुभने लगा. क्षमा कीजिए मुझे मैं आपके आदेश का पालन नहीं कर पाया. "

राजा ने देखा उसे बगीचे के हर पौधे में फूल कम, कांटे अधिक नज़र आए.

इतने में ही थैले भर फूल लेकर विजय भी वहाँ पहुँच गया.

पिताजी ने आश्चर्य से पूछा, “तुम ये फूल कहाँ से ले आए?

“विजय ने कहा,”आपके आदेशानुसार पास के ही बगीचे से लाया हूँ पिताजी.

राजा ने अब देखा विजय को बगीचे के हर पौधे में फूल ही फूल नजर आए कांटों पर उसकी निगाह ही नहीं पड़ी. दोनों पुत्र के दृष्टिकोण में अंतर था.

राजा को अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया था. उसने विजय की सकारात्मक सोच को देखते हुए उसे हीअपना उत्तराधिकारी बनाया.

सकारात्मक सोच ही जीवन में उन्नति का है द्वार.
गांठ बांधकर रख लो यह है जीवन का आधार..

# शहर की सैर

रचनाकार- लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

कई जानवर जंगल से यूँ,
इक दिन साथ चल पड़े.
हमें घूमना शहर में आज,
चौराहे पर आ हुए खड़े..

सबसे पहले पहुँचे वे मॉल,
आँखें फाड़े ये माल है टाल.
माल से ख़ूब सामान खरीदे,
फिर चले गए सिनेमा हॉल..

पिक्चर में गाना शुरू हुआ,
सब लगे झूम-झूम कर गाने.
सिनेमा हाल में किया हंगामा,
मालिक आया उन्हें मनाने..

दिन भर बीत गया सभी को,
अब लग गई सभी को भूख.
होटल में पहुँच खाना खाया,
फिर किया जंगल का रुख..

जंगल जब पहुँचे हो गई रात,
थक कर के हो गए सब चूर.
जम कर खर्राटे ले कर सोए,
नींद आज उन्हें आई भरपूर..

# परीक्षा

रचनाकार- रीता गिरी

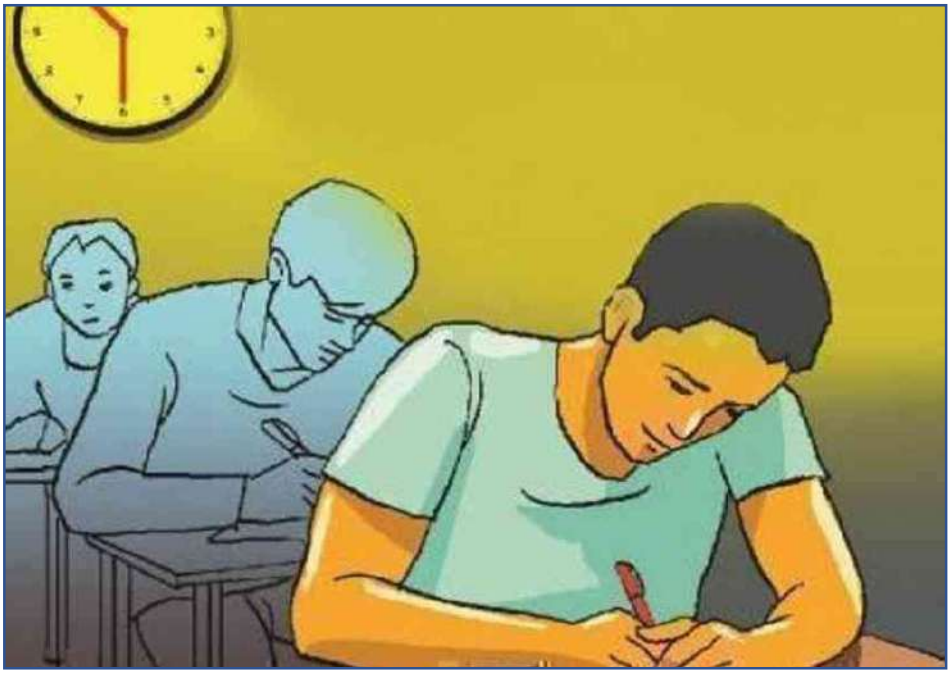

विषय, किताब, पाठ्यक्रम बहुत पढ़ा, बहुत दी परीक्षा.
अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होकर, पूरी कर ली इच्छा.

अब समझा सबसे कठिन है, जीवन- रुपी परीक्षा.
हरपल परखती नजरें, करती रहती समीक्षा.

जीवन -रुपी परीक्षा में, सफल वही होता है.
धर धैर्य और साहस, चुनौतियों से जो लड़ता है.

जीवन में परीक्षा हमें, हर वक्त यही सिखाती है.
परीक्षा तो हमें कुंदन सा चमकाती है.

इस घड़ी में कोई बिखर, तो कोई निखर जाता है.
कोई अच्छे कर्म कर, जीवन सफल कर जाता है.

# Rain and Earth

Poet- Tejesh Sahu.

Earth asked to rain one day,
"Why you fall every year to me,
And why you hides the sun ray?"
You have to reply to me!
Then rain replied to Earth's crust,
I every year fall to you,
To quench your thirst,
And every year I energize you.
I bring you greenery,
I bring you happiness,
What is the beautiful scenery,
And I keep humans free of stress.
I am only responsible,
For these green grasses,
Earth ! please tell me truth,
Don't you like the happiness around you.
Then Earth replied to the rain,
First, Thank you for quenching my thirst,
I want to communicate with anyone
And after talking with you I understood
Happiest and best season is "rainy season".

# राफेल

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

जग में कोरोना छोड़ा,
सीमा में नियम तोड़ा.
पापी चीन बन रोड़ा,
खेल रहा खेल है.

करता जो नित धोके,
पाक भी पागल रोके.
चीनियों का दास होके,
कर लिया मेल है.

मगर रण धीरो ने,
लक्ष्य में सधे तीरों ने.
निकाला सदा वीरों ने,
बैरियों का तेल है.

वीरता का भाल बन,
देखों अब ढाल बन.
बैरियों का काल बन,
आ गया राफेल है.

# अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी -

## चित्रा का हारमोनियम

चित्रा आज बहुत खुश थी. आज उसका जन्मदिन था.  वैसे तो चित्रा अपना हर जन्मदिन अपने माता-पिता और दोस्तों के साथ मनाया करती थी पर इस बार अपने जन्मदिन का चित्रा को बहुत बेसब्री से इंतज़ार था.

चित्रा कक्षा आठवीं में पढ़ती है. उसके घर में माता-पिता और छोटे भाई सहित चार लोग हैं.पढ़ाई के साथ चित्रा की रुचि चित्रकारी, बागवानी और संगीत में भी है. इसी साल चित्रा ने संगीत सीखना शुरू किया है.संगीत की कक्षा में सभी अपने साथ अपने-अपने वाद्ययंत्र लेकर आते हैं पर चित्रा के पास अपना कोई वाद्ययंत्र नहीं है वह कक्षा में संगीत शिक्षक के हारमोनियम को ही बजाकर अपनी इच्छा पूरी कर लेती है.

संगीत सीखने में चित्रा की लगन देखकर संगीत शिक्षक ने चित्रा के पिताजी को सलाह दी कि वे चित्रा के लिए उसकी पसंद का कोई वाद्ययंत्र खरीद लें.

चित्रा की माँ ने उसे बता दिया था कि आज जन्मदिन पर पिताजी उपहार में हारमोनियम देने वाले हैं. जब से चित्रा को यह बात पता चली तब से ही वह अपने जन्मदिन की आतुरता से प्रतीक्षा करने लगी और आज उसका जन्मदिन आ ही गया.

जन्मदिन का आयोजन खत्म हुआ और दोस्तों के दिए उपहारों के साथ चित्रा को हारमोनियम भी मिल गया. पर अगले ही दिन से चित्रा का व्यवहार बदल गया. अब वह हर वक्त सिर्फ हारमोनियम में ही रमी रहती. चित्रकारी और बागवानी तो वह भूल ही गई.पढाई भी केवल होमवर्क तक सीमित हो गई.

## यशवंत कुमार चौधरी द्वारा पूरी की गयी कहानी

चित्रा अपने हारमोनियम के साथ काफी खुश थी,उसका मन संगीत के प्रति इस कदर आकर्षित हुआ कि वह अब चित्रकारी,बागवानी और पढाई के लिए बिलकुल समय नहीं दे रही थी.

अब चित्रा संगीत में बहुत कुशल हो गई और उसे संगीत की प्रस्तुति के लिए निमंत्रण भी मिलने लगे. चित्रा अब एक अच्छी कलाकार के रूप में प्रसिद्ध हो गई. उसे अनेक पुरस्कार भी मिले. पर वह अब पढ़ाई -लिखाई में कमजोर होती जा रही थी. यह देखकर शिक्षक और माता पिता ने चित्रा को पढाई पर भी ध्यान देने की सलाह दी. अब चित्रा ने संगीत के साथ-साथ पढाई पर भी ध्यान लगाना शुरू किया और उसे परीक्षा में अच्छे अंक भी मिले. अब चित्रा की समझ में आया कि लगन और नियमित अभ्यास से विभिन्न कौशलों को सीखा जा सकता है परंतु इसके लिए योजना बनाकर समय का प्रबंधन करना बहुत जरूरी है.

## कन्हैया साहू 'कान्हा' व्दारा पूरी की गई कहानी

चित्रा अब रोज ही अपने हारमोनियम में अपने गाने का रियाज करने लगी, जिसके कारण अब वह पढ़ाई में अन्य बच्चों से पिछड़ने लगी, उसका ध्यान पढ़ाई, बागवानी चित्रकारी से अब बिल्कुल ही हट गया था. जैसे- तैसे करके वह आठवीं कक्षा पास हो गई. उसके संगीत शिक्षक ने चित्रा के पिताजी से मिलकर चित्रा के संगीत के प्रति लगाव को देखते हुए यह सलाह दिया कि उसे किसी संगीत विद्यायल में दाखिला करा दे, जिससे वह संगीत में निपुण हो सके. पिता जी ने शिक्षक के सुझाव व चित्रा की लगन को देखते हुये, अपने शहर के ही एक संगीत विद्यालय में चित्रा का दाखिला करवा दिया .अब वह पूरे लगन से अपने संगीत के गुरुजनों से विद्या अर्जन करने लगी.चित्रा का बचपन से ही संगीत में रुझान होने के कारण जो भी उसे सिखाया जाता बहुत लगन से उसका रियाज करती और संगीत के नए नए सुरों को सीखने लगी. चित्रा अब छोटे छोटे कार्यक्रमो में अपनी प्रस्तुती भी देने लगी थी. उसकी गाने व हारमोनियम बजाने की कला का सुनने वाले सभी लोग बहुत तारीफ करते.चित्रा भी पूरी लगन से अपनी संगीत शिक्षा में लगी रही, आगे चलकर चित्रा एक कुशल गायिका और हारमोनियम वादक के रूप में अपने शहर में प्रसिद्ध हुई.

## संतोष कुमार कौशिक व्दारा पूरी की गई कहानी

चित्रा का बदला हुआ व्यवहार देखकर उसके माता-पिता ने संगीत शिक्षक से चित्रा को समझाने के लिए कहा. संगीत शिक्षक ने चित्रा के माता-पिता को आश्वस्त किया कि वे चित्रा के व्यवहार में परिवर्तन लाएँगे.

एक दिन जब चित्रा हारमोनियम बजा रही थी तब संगीत शिक्षक ने अच्छा हारमोनियम बजाने के लिए चित्रा की तारीफ की. फिर वे चित्रा को समझाते हुए बोले बेटा संगीत के प्रति रुचि होना बहुत अच्छी बात है लेकिन अभी तुम्हे अपनी पढाई पर भी ध्यान देना चाहिए. पढ़ाई भी होती रहे और संगीत का अभ्यास भी इसके लिए तुम एक समय सारणी बना लो तो बहुत अच्छा होगा.

चित्रा शिक्षक की बातों पर विचार करते हुए अपने घर चली आई.

दूसरे दिन ही चित्रा ने अपने लिए एक समय सारणी बना ली और उसके अनुसार कार्य करने लगी. अब पढाई और संगीत का अभ्यास दोनों ही कार्य अच्छी तरह से होने लगे.

बारहवीं कक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होकर चित्रा ने संगीत विद्यालय में प्रवेश ले लिया. उसकी रूचि संगीत में पहले से ही थी और अपनी मेहनत से चित्रा ने संगीत में विशेष योग्यता प्राप्त कर ली. संगीत की पढ़ाई पूर्ण करने के पश्चात वह संगीत शिक्षिका पद पर नियुक्त हो गई. चित्रा के माँ-पिताजी एवं शिक्षक उसकी सफलता से बहुत प्रसन्न हुए.

# अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

इस घटना को हुए करीब 35 साल गुजर गए किंतु आज भी वे सारे दृश्य मेरी आंखों में एकदम ताज़ा हैं. उस दिन स्टेशन पर बहुत ज़्यादा भीड़ तो नहीं थी पर ट्रेन में बैठने की जगह नहीं मिली थी. मैं लंबी बेंच के किनारे खड़ा रहा. हालांकि उस बेंच पर चार लोग ही बैठे थे पर मुझे उनसे जगह मांगना अच्छा नहीं लग रहा था. थोड़ी देर के बाद एक सज्जन को शायद मुझ पर दया आई. उन्होंने खिसककर थोड़ी जगह मुझे भी दे दी.

मैं कॉलेज में अपने भाई के एडमिशन के लिए शहर आया हुआ था. बड़ी कोशिशों के बाद भी उसे किसी कॉलेज में जगह नहीं मिल पाई थी. पिछले तीन-चार दिन इतनी कठिनाई भरे थे कि क्या कहूं. ना तो दिन में खाने का ठिकाना था ना रात में सोने का. मैं इन्हीं खयालों में डूबा हुआ था, मुझे आसपास की खबर ही नहीं थी.

अचानक मेरी निगाह सामने की सीट पर गई. मैंने देखा एक महिला बहुत बेचैनी से अपने सामानों में कुछ खोज रही थी. अगल-बगल बैठे लोगों ने पूछा, क्या हुआ. लगभग रोते हुए उस महिला ने बताया कि उसका पर्स नहीं दिख रहा है. ट्रेन में चढ़ते समय शायद किसी ने उसे निकाल लिया. वह काफी देर तक सीट के नीचे और इधर-उधर अपना पर्स ढूंढ़ती रही, इस उम्मीद में कि शायद कंपार्टमेंट में ही कहीं गिरा हो और मिल जाए. पर वह उसे कहीं नहीं मिला. वह आखिर थक-हार कर अपनी सीट पर बैठ गई. उसके आंसू थम नहीं रहे थे. उसके साथ एक छोटी बच्ची भी थी, लगभग डेढ़-दो साल की. महिला कभी उसे संभालती, कभी खुद को. उसकी अब तक की बातचीत से पता चला कि उसके पर्स में उसके जेवर, पैसे, टिकट जैसी सभी चीज़ें थीं.

उसका दुख देखकर मुझे अपनी तकलीफें याद ही नहीं रहीं. आसपास के लोग उसके साथ बड़ी सहानुभूति दिखा रहे थे. जिस तरह लोग उस पर तरस खा रहे थे, पता नहीं क्यों यह बात मुझे अच्छी नहीं लग रही थी. इन खोखली सहानुभूतियों से आखिर होता भी क्या है.

अचानक वहां टीसी महोदय पहुंच गए. उन्होंने सभी से टिकट पूछना शुरू किया.

अब इसके बाद क्या हुआ होगा, इसकी आप कल्पना कीजिए और कहानी पूरी कर हमें माह की 15 तारीख तक ई मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे

# मुझे पसंद है

रचनाकार- यशवंत कुमार चौधरी

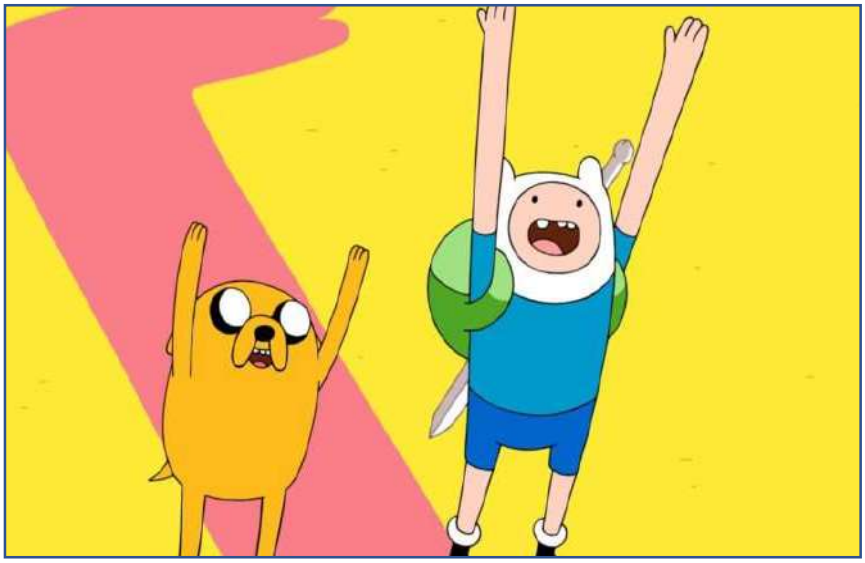

पढ़ने में कहानी
पीने में साफ़ पानी
भले आदमी की जुबानी
छत्तीसगढ़ी बानी
मुझे पसंद है.

प्रकृति में इंसान
खेतों में किसान
घरों में मेहमान
अनाजों में धान
मुझे पसंद है.

खेलों में कबड्डी
माता में चंडी
रास्तों की पगडंडी
दरवाजों की कुण्डी
मुझे पसंद है.

अपनों में माँ-बाप
लोगों से वार्तालाप
जीवन में संकल्प
काम में विकल्प
मुझे पसंद है.

इरादों में चमक
चरित्र में दमक
स्वभाव में नरम
चाय में गरम
मुझे पसंद है.

# बचपन

रचनाकार- आरज़ू परवीन कक्षा- बारहवीं, शा. क. उ. मा. विद्यालय अघिना, सलका, भैयाथान, सूरजपुर

बचपन कितना सुहाना था.
ना जीतने की चाह थी
ना ही हार का डर,
ना मंजिल की फिकर थी
ना थी उस तक जाने वाली कोई डगर.

जब थक कर सो जाया करते थे जमीन पर,
और जब आँख खुले तो
खुद को पाते थे बिस्तर पर.
किताबों से भरे बस्ते थे,
उस वक़्त सपने कितने सस्ते थे.

वो बारिश की बूँदों वाली कश्ती
वो पुरे दिन चलने वाली मस्ती.
स्कूल से देर घर लौटने के बाद भी
खेलने बाहर जाना था,
बचपन भी कितना सुहाना था.

वो मिट्टी का घरौंदा था,
खुशियों का खजाना था.
कोई फिकर ना थी जिंदगी की
सारे फिकरों से बेफिकर थे,
जीवन के कठिनाइयों से बेखबर थे.

कभी आम के बगीचों पर,
तो कभी अमरूद के पेड़ पर ठिकाना था,
बचपन के खेल और खिलौने में
ही अपना आशियना था,
सच बचपन कितना सुहाना था.

# संस्मरण - रामेश्वरम धाम यात्रा

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे

रामेश्वरम धाम यात्रा का अविस्मरणीय पल. 2018 में डिजेन्द्र कुर्रे, मनोज, नीलम, अशोक टंडन और धनंजय निराला चार साथी मिलकर यात्रा के लिए निकले. यात्रा का प्रारंभ लौहपथगामनी में बैठकर रायपुर से दिल्ली के लिए रवाना हुआ. गाड़ी की छुक-छुक की आवाज, खिड़की के पास बैठकर दिखाई देता प्रकति का अनमोल नजारा मनः पटल पर आज भी जीवन्त है. यात्रा की इस कड़ी में अनेक अनजान लोगों से बात कर मन बहुत ही प्रसन्न था. किसी पंछी की भांति पंख लगाकर कैसे उड़ती जा रही थी, आभास ही नही हुआ. बीच-बीच में मूंगफली और गरमा-गरम भुना हुआ चना खाना यात्रा को और भी आनंददायक बना रहा था.समय कैसे व्यतीत हुआ पता ही नही चला. कभी गाना गाने का मन करता तो हम सभी अंताक्षरी खेल लिया करते थे. हमारी लौहपथगामनी जब हजरतनिजामुद्दीन दिल्ली पहुँची,तब हम लोगों ने वहाँ विश्राम किया. फिर गाड़ी बदलकर दिल्ली से चेन्नई के लिए रवाना हुए. चेन्नई स्टेशन पहुँचने पर जिस किसी से भी बातें करना चाहा न तो हम उनकी बोली समझ पा रहे थे और न वे लोग हमारी बोली समझ पा रहे थे.बड़ी मुश्किल से एक हिंदी भाषी मिला. जिसे हिंदी का बहुत ही कम ज्ञान था.किसी तरह उनकी टूटी-फूटी बोली को समझने लगे. जब उसने चलने को कहाँ तब हम सब मित्र डर रहे थे.कहीं यह व्यक्ति कोई चोर उचक्का न हो. अंत में हम लोग एकमत होते हुए,हौसला करके उनके साथ हो लिए. उस व्यक्ति ने हमारे रहने के लिए होटल का इन्तजाम किया.और पूरे चेन्नई की सैर कराया. उस भले आदमी ने चेन्नई दर्शन कराने के बाद हम जहाँ-जहाँ यात्रा में जाते उनके आदमी हमें लेने आ जाते.इस तरह से

मंगलमयी यात्रा मदुरई, केरल, रामेश्वरम धाम की पूरी हुई. यात्रा की इस कड़ी में रामेश्वरम धाम का दर्शन बहुत ही महत्वपूर्ण रहा. रामेश्वरम के चरण पखारने वाले सागर में कुछ दूर सैर करने के लिए मोटर वोट में सवार होकर सागर की लहरों को चीरते हुए सागर की गहराई नापने की कोशिश करने लगे.जो हम सबके लिए एक अविस्मरणीय पल था.तत्पश्चात भूतपूर्व महामहिम डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम स्मारक का दर्शन करना बहुत ही सुखद अनुभूति रहा. स्मारक में आज भी उनके पोशाक,चप्पल,जूते एवँ उनकी किताबों को संजोकर रखा गया है. अंत में हमने भगवान तिरुपति बालाजी की विराट प्रतिमा का दर्शन किया तथा बाल विदान कर स्वयं को धन्य समझने लगे. सात दिनों की इस अनुपम यात्रा के बाद अब वापस जाने का समय हो चला था. मन में इस यात्रा की खट्टी-मीठी यादें लिए गृहग्राम वापस आए.

# मिट्टी

रचनाकार- वीरेन्द्र कुमार साहू

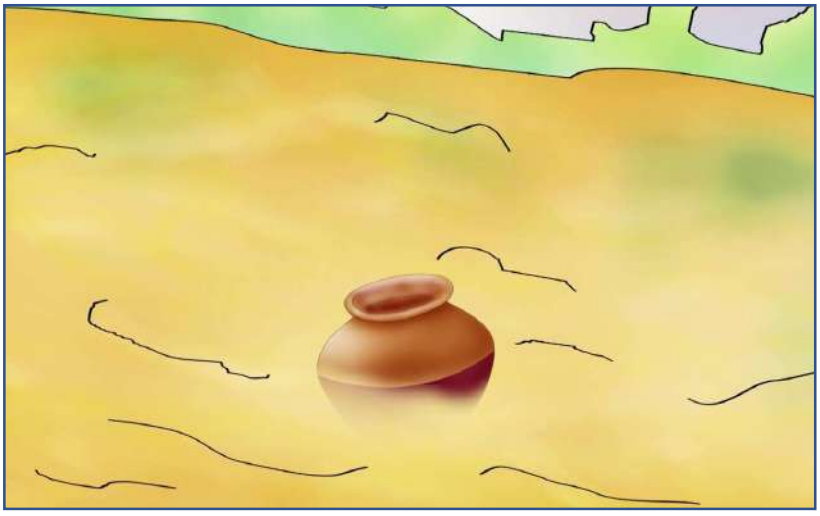

मिट्टी मिट्टी
मिट्टी के खिलौने
मिट्टी के घर
मिट्टी की मूरत
मिट्टी के मुखौटे
मिट्टी का घड़ा
मिट्टी के ईट
मिट्टी के दीये.
मिट्टी में अन्न
मिट्टी में जल
मिट्टी में जीवन
मिट्टी में ही अंत

# रक्षाबंधन

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

सावन के इस पुण्य पर्व ने,
मन में प्रीत जगाई है.
अक्षत कुमकुम दीप सुमन से,
थाली आज सजाई है.

टूट नहीं पाता वह बल है,
इस रेशम के बंधन में.
भाल सजा देती है बहना,
रोली कुमकुम चंदन में.

बहना को भाई से अतुलित,
इस राखी में प्यार मिले.
बचपन की यादें है जिसमें,
पावन वह संसार मिले.

जब वापस जाती हैं बहना,
नैना तब भर आई हैं.
अक्षत कुमकुम दीप सुमन से,
थाली आज सजाई है.

अगर बहन आ नहीं सके तो,
भाई को दुख होता है.
आँसू नहीं बहाता पर वह,
मन ही मन में रोता है.

बहना भी अपने भैया बिन,
सुखी कहाँ रह पाती है.
भैया के बारे में सोचती,
बहुत व्यथित हो जाती है.

यह दोनों ही इक दूजे के,
जीवन की परछाईं है.
अक्षत कुमकुम दीप सुमन से,
थाली आज सजाई है.

# समय की मंडी

रचनाकार- विक्रम 'अपना'

सब्जी मंडी में आज बहुत गहमा-गहमी थी. आज सब्जियों के भाव आसमान पर थे. सबसे मोटे आलू ने अपने आप को स्वयंभू राजा घोषित कर दिया था. आम को पहले ही सर्वसम्मति से फलों का राजा चुना जा चुका था.

बैंगन उदास था. पतली बरबट्टी ने उससे कह दिया था कि तुम तो बेगुन हो,तुममें कोई गुण ही नहीं है. लौकी का भी यही हाल था. प्याज का बुरा हाल था क्योंकि ज्यादा पैदावार हो जाने के कारण किसान उसे सड़क के किनारे लावारिस छोड़े जा रहे थे. मूली गाजर बस गाजर मूली की तरह कट रहे थे. माँग और पूर्ति के सिद्धान्त ने सारा समीकरण बिगाड़ दिया था.

आलू बहुत खुश था. एक तो राजा का दर्जा और हर सब्जी के साथ उसका होना उसकी गरिमा बढ़ाता था.

आज मण्डी में सबसे ज्यादा कीमत वाली सब्जी को विजेता चुना जाने का विशेष कार्यक्रम भी था.

आलू निश्चिन्त था. उसे घमंड था कि मैं तो राजा हूँ और मेरी बादशाहत कायम रहेगी. वह अपने आपको सबसे ज्यादा विद्वान भी समझता था.

सुबह-सुबह ही मंडी में हलचल बढ़ने लगी. दूर-दूर के किसान अपनी-अपनी सब्जी लेकर मंडी पहुँचने लगे थे.

मंडी में बाजार भाव की सूची टाँगने की तैयारी होने लगी.

आलू सबका मजाक बना रहा था.उसका कहना था कि दाम और ज्ञान में मैं सबका राजा हूँ. पर अचानक ही बाजार में आलू की बेतहाशा आवक हो गई,आवक बढ़ने से आलू की कीमत तेजी से कम होने लगी.कुछ ही देर में नौबत यहाँ तक आ गई कि खुद को राजा समझने वाले आलू को राजमहल तो क्या मंडी का चबूतरा भी नसीब नहीं हो पाया. मूल्य सूची टाँगी गई तो उसमें आलू का नाम सबसे नीचे लिखा था.

मूल्य सूची में सबसे ऊपर ग्वारफली का नाम था जिसे लोग गंवार फल्ली कहा करते थे. पर आज लोग उसकी बहुत पूछ-परख कर रहे थे.खुद को राजा समझने वाला आलू आज मूल्यहीन होकर उपेक्षित पड़ा था.

**सच है कि समय बड़ा बलवान होता है. अपनी विद्वता व पद का घमंड कभी नहीं करना चाहिए क्योंकि समय राजा को रंक और रंक को राजा बना देता है.**

# शिक्षा का अलख जगाओ

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

अंधकार को दूर भगाकर,
उजियाला फैलाओ जी.
बच्चों में विश्वास जगाकर,
शिक्षा का अलख जगाओ जी.

नामुमकिन को मुमकिन कर,
काम सफल कर जाओ जी.
बच्चों को नई राह दिखाकर,
शिक्षा का अलख जगाओ जी.

अज्ञानी को ज्ञानी बनाकर,
शिक्षा का महत्व बताओ जी.
समाज को शिक्षित कराकर,
शिक्षा का अलख जगाओ जी.

असभ्य को सभ्य बनाकर,
जीने का ढंग बताओ जी
स्वच्छता का संदेश देकर,
शिक्षा का अलख जगाओ जी.

अंधविश्वास दूर भगाकर,
शिक्षा की चिंगारी जलाओ जी.
राष्ट्र का निर्माण कराकर,
शिक्षा का अलख जगाओ जी.

# रक्षाबंधन

रचनाकार- स्व. महेन्द्र देवांगन "माटी"

आया रक्षा बंधन भैया, लेकर सबका प्यार.
है अटूट नाता इसे दे अनुपम उपहार..

राखी बाँधे बहना प्यारी, रेशम की है डोर.
खड़ी आरती थाल लिये अब, होते ही वह भोर..

सबसे प्यारा मेरा भैया, सच्चे पहरेदार.
है अटूट नाता बहनों से, दे अनुपम उपहार..

हँसी ठिठोली करते दिनभर, माँ का राज दुलार.
रखते हैं हम ख्याल सभी का, अपना यह परिवार..

राखी के इस शुभ अवसर पर, सजे हुए हैं द्वार.
है अटूट नाता बहनों से, दे अनुपम उपहार..

तिलक लगाती है माथे पर, देकर के मुस्कान.
वचन निभाते भैया भी तो, देकर अपने प्राण..

आँच न आने दूँगा अब तो, है मेरा इकरार.
है अटूट नाता बहनों से, दे अनुपम उपहार..

# 15 अगस्त पर माँ की आस

रचनाकार- नीरज त्यागी

पंकज की दादी 15 अगस्त की सुबह जल्दी ही तैयार हो गयीं थीं. उन्हें मालूम था कि 15 अगस्त को टीवी के समाचार चैनलों पर देश के सैनिकों को दिखाया जाता है. हर बार की तरह वह अपने पोते पंकज की एक झलक पाने के लिए टीवी के सामने बैठ गईं. 65 साल की दादी को यह उम्मीद थी कि किसी न किसी चैनल पर उनके फौजी पोते पंकज की झलक भी दिखाई जाएगी. इसी इंतजार में उन्होंने सुबह से ही टीवी चला लिया.

इसी बीच पंकज के पिता कमरे में आए और उन्होंने अपनी माँ की तरफ गुस्से से देखा और बिना कुछ कहे कमरे से बाहर निकल गए. पंकज की दादी का ध्यान पूरी तरह टीवी पर ही था.कुछ देर बाद पंकज के पिता फिर कमरे में आए. इस बार वह अपनी माँ से गुस्से में बोले क्या माँ तुम 26 जनवरी और 15 अगस्त पर टीवी चला कर बैठ जाती हो. क्यों बार-बार भूल जाती हो कि तुम्हारा पोता पंकज दो साल पहले ही सीमा पर दुश्मनों से लड़ते हुए शहीद हो चुका है.

यह कहते हुए पंकज के पिता की आँखों में ऑंसू आ गए. पंकज की दादी की आँखे भी नम थीं. पंकज की दादी ने कहा बेटा टीवी पर जो भी सैनिक दिखाई देता है मुझे उसमें अपना पोता ही दिखाई देता है. ऐसा कहते हुए उन्होंने अपने बेटे को गले से लगा लिया. इसके बाद माँ और बेटा दोनों ही नम आँखों से टीवी में दिखाए जा रहे समाचार देखने लगे.

# कैसा है ये जीवन

रचनाकार-नीरज त्यागी

बारिश के रुके हुए पानी सा है जीवन,
हर अगले पल, धरा में धसता जीवन.

बारिश की दलदल सा बनता जीवन,
अपने सपनों के मकड़जाल में फँसता जीवन.

भारी बारिश के बाद, बाढ़ के रुके पानी सा जीवन,
अपनी मिटती सब इच्छाओं पर भी हँसता जीवन.

ना जाने किस ओर भटकता हर पल मेरा ये मन,
तेज हवाओं में बारिश सा दिशा बदलता मेरा जीवन.

# भाई-बहिनी के तिहार- राखी

रचनाकार- स्व. महेन्द्र देवांगन "माटी"

भाई बहिनी के सबले पवित्र तिहार हरे राखी ह. बचपन में भाई बहिनी मन कतको लड़ई झगरा होत रहिथे, फेर राखी के दिन ओकर मन के प्रेम ह देखे बर मिलथे. राखी तिहार के अगोरा भाई बहिनी दूनो झन मन करत रहिथे.

**कब मनाथे** - राखी के तिहार ल सावन महिना के पूर्णिमा के दिन मनाय जाथे . ए दिन भाई बहिनी मन बिहनिया ले नहा धो के तईयार हो जाथे . भगवान के भी पूजा पाठ कर ले थे ओकर बाद बहिनी मन ह रोली, अकछत, कुमकुम ,दीया अउ राखी ल थारी में सजा के लानथे . चँउक पूर के पीढ़ा बनाय रहिथे तेमा भैया ला खड़ा करथे. ओकर बाद बहिनी ह भाई मन के पूजा करथे, मिठाई खवाथे अऊ राखी ल बाँधथे.

भाई मन भी एकर बदला में भेंट के रूप में रूपिया पइसा या कपड़ा देथे.

**रक्षा करे के वचन**- जब बहिनी ह भाई के कलाई में राखी बाँधथे तब, भाई ह बहिनी के सब प्रकार से रक्छा करे के वचन देथे . अउ ऐ वचन ल जीयत भर निभाथे .

जेकर भाई या बहिनी नइ राहे ओमन ह दूसर ल भाई या बहिनी बना के राखी बंधवाथे या बांधथ.

**भगवान ल राखी**- राखी ल केवल भाई के ही हाथ में नइ बाँधे जाय . पूजा पाठ करे के बाद भगवान में भी चढाय जाथे, ताकि भगवान ह ओकर सब प्रकार से रक्षा करें.

**पेड़ ल राखी बाँधना**- आजकल बदलत जमाना में पेड़ में भी राखी बाँधे जाथे अऊ, ओकर रक्षा करे के वचन लेथे.

**महराज मन**- आज के दिन महराज मन ह घर घर जा के राखी बाँधथे . बदला में सब आदमी ह दान पून भी करथे.

**पौराणिक कथा** - स्कंद पुरान, पद्मम पुरान अऊ श्री मद भागवत में वामन अवतार के कथा बताय गेहे.

एक बार राजा बलि ह एक सौ यज्ञ पूरा करे के बाद स्वर्ग ल छीने बर चल दीस. तब इन्द्र देव ह भगवान विष्णु के तीर में जाके प्रार्थना करथे. तब भगवान विष्णु ह वामन अवतार ले के बाम्हन के भेस में राजा बलि के पास जाथे अऊ तीन पाँव (डंका)जमीन दान में माँगथे . राजा बलि ह तीन पाँव जमीन दे के वचन दे देथे. वामन देवता ह अपन रूप ल बड़े करके अकाश, पताल अऊ धरती ल पूरा नाप के राजा बलि ल रसताल में भेज देथे. ए प्रकार से राजा बलि के घमंड ल चकनाचूर कर देथे. बताय जाथे के राजा बलि ह अपन भक्ति के बल से भगवान ल रात-दिन अपन आघू में रहे के वचन ले लीस. अब भगवान विष्णु ह ओकरे तीर में राहे ल धर लीस.

भगवान ह जब घर नइ आइस त लक्ष्मी माता ल चिंता होगे. तब नारद जी ह उपाय बताइस. ओकरे अनुसार माता लक्ष्मी ह राजा बलि ल भाई बनाके ओला राखी बाँधीस अऊ अपन पति ल माँग के ले लानिस. ओ दिन सावन महिना के पूर्णिमा रिहिसे. तब से राखी के तिहार मनाय जाथे.

# बस यही दुआ है

रचनाकार- तबस्सुम

कोरोना काल में यह क्या हो गया है
शिक्षक अब विद्यार्थी से जुदा हो गया है
छूट गया है ब्लैक बोर्ड चॉक से अपना नाता
हमें घर में खाली रहना नहीं हर पल भाता
स्कूल की याद हमें सताती है
कोरोना बीमारी जल्दी से क्यों नहीं जाती है?
बच्चों को पढ़ाना होमवर्क देना
सब रह गया बस एक स्वप्न सलोना
बच्चों की याद हमें हर पल सताती है
ये कोरोना बीमारी जल्दी से क्यों नहीं जाती है?
कब खत्म होगा ये कोरोना का खेल
कब होगा हमारा अपने बच्चों से मेल
बस यही दुआ है अब तो अपनी
जल्दी से खुल जाए स्कूल अपनी

# भाखा जनऊला

## भाखा जनऊला ( छत्तीसगढ़ी वर्ग पहेली )

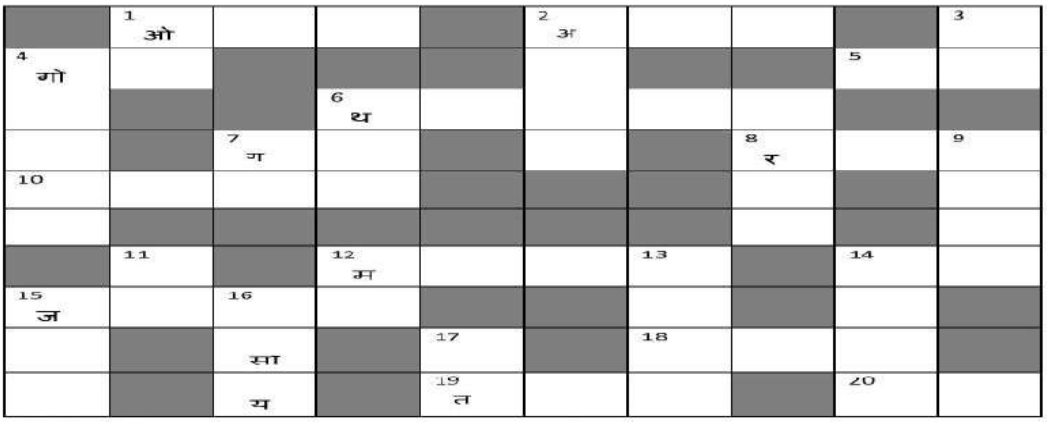


**बाएँ से दाएँ:**- 01. बहाना 02. बहुत, ज्यादा 04. छोटा कक्ष (जगह) 05. अहाता 06. थरथराहट, कमजोरी 07. मछली पकड़ने का कांटा 08. मालिस 10. उदण्ड 12. मोलभाव 14. चाँवल के एक व्यंजन का नाम 15. हगउग्र 18. तरल पदार्थ खाली करना 20. वर्षा होने के बाद बादल का छंटना।

**ऊपर से नीचे:**- 01. आड़ 02. अशिक्षित 03. आओ, आइये 04. गोबर रखने का गड्ढा (स्थान) 06. थाली 07. बच्चों के ताश खेल का प्रकार 09. अधपका 11. गेहूं 12. प्रेम, प्यार 13. नयी, नवेली, 16. पानी इत्यादि का एकदम साफ/स्वच्छ दिखना 15. बड़ा (आकार) 16. रूठा हुआ 17. पका चाँवल ।

## पिछले अंक के भाखा जनऊला के उत्तर

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 ज | ग | र | 2 ब | ग | 3 र | | 4 न | ह | 5 ना |
| रौ | | | र | | 6 ह | 7 र | हा | | र |
| धा | | | 8 ति | ज | न | हा | व | 9 न | |
| | 10 त | रि | या | | | | 11 न | न | की |
| 12 ध | री | | | 13 बें | द | रा | | प | |
| नु | | | 14 गें | डी | | | 15 क | न | 16 की |
| 17 स | र | दं | ग | | | 18 दा | रू | | न्दा |
| चिं | | | 19 रु | ख | 20 रा | ई | | 21 थ | रे |
| वा | 1 | | आ | | हे | | | म | |
| 22 र | थि | या | | | 23 र | ऊ | त | ना | चा |